(5)

सुकन्या

(मैथिली उपन्यास)



नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'

सुकन्या

(मैथिली उपन्यास)

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'

प्रकाशक
गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच, उफरदाहा
(दरभंगा)
मो.-8986261756

SUKANYA : Maithili Novel by **Nand Kumar Mishra 'Nand'**, Gosauni Baidyanath Smriti Manch, Uphardaha, Darbhanga, 2019, **₹ 150/-**

प्रकाशक : **गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच**
उफरदाहा, जिला- दरभंगा
पिन- 847233 (बिहार)

प्रथम संस्करण : वर्ष 2019

पोथी प्राप्ति स्थान : विद्यार्थी पुस्तक भंडार
सकरी, दरभंगा

सहयोग राशि : **₹ 150.00**

मुद्रक : प्रिंटवेल
टावर, दरभंगा

डा. फूलचन्द्र मिश्र 'रमण'
से.नि. प्रधानाचार्य
एच.पी.एस. कॉलेज
मधेपुर (मधुबनी)



आवास– 5ए, मुखिया पोखर,
लक्ष्मीसागर, दरभंगा–846009
मो.– 09931463627

अपन दुइ शब्द

श्रमशील खोजी व्यक्ति वा समूह जखन प्रयास करैत अछि तँ सोनारक फेकल छाउरसँ सोना-चानीक कण सभ छानि लैत अछि, वर्षाऋतुक अथाह पानिमे धराशायी भेल भेरुण्ड (मखान)क गूड़ीकेँ खड़रिक' ऊपर क' लैत अछि तँ चिंतनशील वैज्ञानिक दल ग्रह मण्डलपर जीवनक आधार तत्त्वक संज्ञान (जानकारी) लैत रहल अछि। तहिना साहित्यहुमे विचारशील कवि लेखक द्वारा नव-नव सूझ-बूझ ओ संदेश-संवादक खोज निरंतर होइत रहैत अछि आ ओहि ताकल तथ्यकेँ अपन-अपन परिपक्व भाावना ओ विचारसँ लोकहितमे कविता, कथा आदि विधारूपमे निर्माण करैत रहल अछि।

साहित्यिक रचना सर्वप्रथम होइत छैक अपन भाषिक लोक लेल-समाज लेल। से सम्प्रति राष्ट्रीय ओ क्षेत्रीय दल सबहक अराजनीतिक दुराग्रह ओ कठविवादसँ तेना ने जन-समुदाय अपन-अपन जातीय ओ वर्गीय खेमामे समटि धराह ओ मरखाह भ' गेलैक अछि जे- गाम ओ गामक प्राकृतिक धर्म, समाज ओ सामाजिकता तथा गौआँ-घरुआक पारस्परिक बल-सम्बल एकदम गंगा-कोशी नदी जकाँ विलुप्त हेबाक स्थितिमे आबि गेल छैक।

एहन लौकिक संतापक घड़ीमे समय जेना करओट फेरय-विश्वास तँ राखहि पड़त जे साहित्यक सृजन निर्बाध होइते रहतैक। साहित्यकारक

समक्ष जे परिवर्तित समय, समाज ओ प्रचलित आचार-विचार रहतैक तकरहि लोक-मंगलक ध्येयसँ अभिव्यंजित करैत रहत ।

श्रीनन्दकुमार मिश्र 'नंद'जी विलक्षण साहित्य रसिक छथि, कवि-कथाकार ओ उपन्यासकार छथि । हिनक रचना कल्पनालोकमे नहि, वास्तविक लोकक संगतिमे विचरण करैत अछि । हिनक ई विशिष्टता अछि जे अपन परिवेशक विकल-विषयकेँ हथिअबैत छथि, ओकरा अपन विषय योग्य बनबैत छथि आ रंग-टीपिक' ओकर उपयोगिता सिद्ध करैत छथि ।

हिनक पूर्व प्रकाशित मैथिली पोथी (i) विधात्री (गीत-कविता संग्रह), (ii) गाम-घर (कथा-संग्रह), (iii) सुजाता (उपन्यास), (iv) गुदड़ीक लाल (उपन्यास), (v) महारानी कैकेयी (शोध-चरित्र) (vi) अनठिया कुकुर (उपन्यास), (vii) आडम्बर (कथा संग्रह) एवं (viii) दिल्लीक पार्क (शब्द चित्र) पठनीय अछि । सौभाग्यशाली एहन छथि जे हिनका पाठकीय प्रशंसा अहगरकेँ भेटलनि अछि ।

प्रस्तुत 'सुकन्या' उपन्यासक मुख्यकथा विधवाक पुनर्विवाहक प्रसंगमे उपन्यस्त अछि । मुख्यकथाक सहवर्ती उपकथा सेहो रसगर अछि । मुदा, बुढ़ारीमे विधुर-विधवाक विवाह होइत छैक से खटमिट्ठीक स्वाद दैत अछि । ओना, लेखक वस्तुक उपस्थापन बड़ सुन्दर ढंगसँ कयलनि मुदा, प्रथम विबाहक वर्तमान उचित वयसक संयोजनमे परहेज क' गेलाह । हँ, अपन उद्देश्यक पूर्त्ति ई अवश्य कयलनि अछि ।

मित्रवर नंदजीक लेखनी अपन भाषा-साहित्यक श्रीवृद्धिमे उत्तरोत्तर आगाँ बढ़ैत रहय- ताही कामनाक संग-

श्रीफूलचन्द्र मिश्र 'रमण'
मो. 993146327

लेखकीय

वर्त्तमानमे मिथिलांचलक सर्वर्णक एकटा पैघ समस्या अछि, विधवा विवाहक । जे विधूर छथि, हुनकर तँ विवाह कोना ने कोना भ' जाइत अछि, मुदा विधवाक लेल एहेन कोनो सामाजिक व्यवस्था नहि । ओना चोरा-नुकाक' इक्का-दूक्का इहो कार्य भ' रहल अछि मुदा खुलिक' आगाँ अयबाक साहस केओ नहि करैत छथि । परिणाम होइत अछि जे कतेको विधवा सामाजिक उत्पीड़नसँ तंग आबि ककरो ने ककरो संगे भागि जाइत अछि आ पुनः आपस नहि अबैत अछि । आब तँ अपेक्षाकृत विधवाक संख्या कम देखल जाइत अछि । पूर्वमे एकर संख्या बेशी होइत छलैक । जकर प्रमुख कारण छलैक बेमेल विवाह । जेना कन्या बच्चा आ वर बुढ़ । समाजमे भलमानुषसँ सम्बन्धक लेल होड़ लागि जाइत छल आ परिणाम होइत छलैक जे लोक दस वर्षक कन्याकेँ साठि वर्षक वरसँ व्याहि दैत छलाह । ओ वर पाँच-दस वर्षमे दिवंगत भ' जाइत छलाह आ अनेको अबोध कन्याकेँ विधवाक रूपमे जीवन निर्वाहक लेल छोड़ि जाइत छलाह । ओ लोकनि समाजक तिरस्कार देखि कोनो धार्मिक स्थान जेना काशी, वृन्दावन बास करबाक लेल विवश भ' जाइत छलीह । ओहिठाम हुनकासँ सामान्य लोक एतेक भयभीत रहैत छलाह जे एकटा लोकोक्ति बनि गेल-

'राँड़, सांढ़ सीढ़ी सन्यासी ।
ताहिसँ बाँची-तँ सेवी काशी ।'

विधवा पर समाजक किछु लोकक वक्र दृष्टि सेहो रहैत अछि । जेना कि नीक वस्तु नहि खा-पीबि सकैत छथि, नीक वस्त्र पहिरि नहि सकैत छथि । कोनहु शुभ कार्यमे ककरो आँगन-द्वारि धरधराक' नहि जा सकैत छथि । जँ जयबो करतीह तँ काते-करौटमे ठाढ़ि रहतीह । कदाचित जँ केओ नाकबाली स्त्रीगण भेटि जयतन्हि, तँ अलच्छी, मनहूस, अपशकुनियाँ कहि निचाँ देखयबाक प्रयास करतन्हि । कतेको समाजसँ तिरस्कृत भ' वा सामाजिक परिवेशसँ उबिक' वेश्यावृत्तिक महाजालमे फँसि जाइत छथि आ समाजक उपर एहेन दाग लागि जाइत अछि, जकरा छोड़ायब कठिने नहि अपितु असम्भव होइछ । तखन हाथ मलबाक सिवा किछु नहि रहैत अछि ।

ओना कोनो रेवाज के तोड़बामे वा ओहि स्थानपर नव रेवाजकेँ अपनयबामे बड़ मुश्किल होइत अछि । किछु सम्बन्ध जे बेहद करीब होइत अछि, छुटि जाइत अछि आ किछु नव सम्बन्ध बनाब' पड़ैत अछि । जकरा सहजतासँ स्वीकार नहि कयल जा सकैत छैक । एहेन कोनो कार्य नहि अछि, जाहिसँ जँ किछु गोटेकेँ फायदा होइत छन्हि तँ किछु गोटेकेँ नुकसान सेहो । तखन विचारणीय विषय ई जे जाहिसँ अधिक गोटेकेँ फायदा होइत हो, एहेन विधि अवश्य अपनयबाक चाही । जखन सती प्रथा टुटि सकैत अछि तँ अन्य प्रथा किएक नहि ।

हमरा समाजमे किछु एहनो लोक छथि जे नारीकेँ गिद्ध दृष्टिये देखैत छथि । ओकर भरपूर शोषण करैत छथि आ ओहिमे व्यवधान भेने ओएह ओकरा दुष्चरित्र होयबाक प्रचार करैत छथि । जिनका माय-बाप, भाय-पति छथि, सेहो अपनाकेँ असुरक्षित बुझैत छथि आ जिनका एहि सम्बन्धीक अभाव छन्हि, तिनकर की गति होयतन्हि । तेँ हमरा लोकनिकेँ एहि विषय-वस्तु पर गम्भीरता पूर्वक विमर्श करबाक आवश्यकता अछि । जँ हम सब एहि कार्यकेँ प्रोत्साहन नहि दी, तँ एकर विरोध वा मखौल नहि उड़ाबी । आइ ने काल्हि एहेन स्थिति ककरो संगे भ' सकैत छैक ।

जकरा हमरा लोकनि प्रेम कहैत छियैक, वस्तुत: ओ वासनाक भूख थिक । एकर पूर्तिक लेल लोक किछु क' सकैत अछि । एहिलेल लोक नीति-अनीति किछु नहि बुझैत अछि । जहिना एकटा भुखालय लोक

भोजन पयबाक लेल सब आरि-धूर तोड़ि दैत अछि । तहिना वासनाक भुखायल लोक आन्हर भ' जाइत अछि । एहिसँ धरतीक कोनो प्राणी बाँचल नहि अछि । इतिहास साक्षी अछि जे महर्षि विश्वामित्र अपन तपस्या बीचहिमे छोड़ि उर्वशीक संग प्रेमालापमे विभोर भ' गेलाह । राजा ययाति अपना पुत्रकेँ राज्य सिंहासन द'क' बदलामे तरुणावस्था प्राप्त कयलनि । की ! जीवन व्यतीत करबाक एहेन लालसा एकटा विधवाकेँ नहि भ' सकैत छैक ? आवश्यकता अछि समयसँ पूर्व एहिपर आवश्यक निर्णयक । अही परिप्रेक्ष्यमे किछु दृष्टान्तक संग पाठकक सोझा प्रस्तुत कयल गेल अछि 'सुकन्या' ।

पोथीमे स्थान पात्र आ घटनाक्रम काल्पनिक अछि । कदाचित जँ किनकहु सँ घटनाक्रम मिलैत हो, तँ एहि लेल क्षमा प्राथी छी ।

पोथी प्रकाशनक लेल हम सर्वप्रथम आभारी छियैन्हि प्रो० डा० फुलचन्द्र मिश्र 'रमण' पूर्व प्रधानाचार्य एच.पी.एस. कॉलेज, मधेपुर, एवं संस्कृत साहित्यक प्रकांड विद्वानक जे पोथीमे उचित मार्गदर्शन करैत अपन भूमिका लिखि हमरा उपकृत कयलन्हि । हम आभारी छियैन्ह डा० योगानन्द झा पूर्व लेखापाल बिहार राज्य विद्युत बोर्डक जिनकर रचनात्मक सहयोग हमरा सतत प्राप्त होइत रहल । डा० भुवन भूषण देना बैंक, मधुबनी आ गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच उफरदाहाक सब सदस्य अपन सहयोगक लेल धन्यवादक पात्र छथि ।

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'
उफरदाहा
दरभंगा- 847233

वसंत पंचमी
10.02.2019

सुकन्या

रतनजी पार्कमे बैसल किछु सोचि रहल छलाह । रातिक नौ बाजि रहल छलैक । अधिकांश लोक अपन-अपन घर चल गेल छल । मात्र इक्का-दुक्का लोक बाँचि गेल छलाह । रतनजी करीब तीन बजे सँ एके ठाम बैसल छलाह । आन दिन खूब लोक सबसँ गप्प-शप्प करैत छलाह । पार्कक रंग-बिरंगक फूल-पत्ती देखैत छलाह । पार्क अत्यन्त मन मोहक छलैक । रंग-बिरंगक फूल आ सैयनो प्रजातिक चिड़ई-चुनमुन्नी ओकर शोभा द्विगुणित करैत छल । आइ रतनजीक गति-विधिसँ बुझना जाइत छल जे कोनहुँ गम्भीर समस्यामे उलझि गेल छथि । आन दिन ओ फूल-पत्ती पर अनुसंधान करैत रहैत छलाह । एहिमे कोना पत्ती अबैत अछि, तँ कोना फूल आ पुनः कोना फूल आ पत्ती झरि जाइत अछि । फूलक सुगंन्ध आ सौंदर्य देखि रंग-बिरंगक भौरा आ तितली ओहि पर मड़राइत रहैत अछि । तकरा देखि क' रतन अत्यन्त प्रमुदित होइत छलाह । मुदा जखन फूल मुरुझा जाइत अछि, तखन ने कोनो तितली आ ने कोनो भौरा ओहिपर क्रीड़ा करैत अछि । इएह तँ दुनियाँ थिक । एहने तँ हमरो सभक जीवन अछि । बचपन, जुआनी, बुढ़ारी आ किछु दिनक बाद पंचतत्त्व मे विलीन होयब । यावत् जीवन अछि, सब रिश्ता-नाता, सर-सम्बन्धी, कर-कुटुम्ब अछि आ जीवनक अंत होइतहि सभक अंत भ' जाइत अछि । एकरहि

लेल लोक कतेको तरहक प्रवंचना करैत अछि । झूठ-फूसि बजैत अछि । रतनकेँ सबसँ बेसी छोटकी चुनमुन्नीक झुण्ड देखबामे नीक लगैत छलनि । ओ सब एकहु बेर स्थिर भ' क' बैसितहि नहि छल । एकदम निर्भय रहय आ फुदकि-फुदकि क' एक डारिसँ दोसर डारि पर जाय । ओकर परस्पर प्रेम देखि क' रतन सेहो मुग्ध भ' जाइत छलाह । कतेक हिलि-मिलिक' ओ सब क्रीड़ा क' रहल छल । रतन कौखन चिरई-चुनमुन्नी केँ देखथि आ कौखन अपनहुँ सोचथि । हम सब केहन छी, जे अपनहिमे कुकुर-मारि करैत छी । असली जीवनक आनन्द तँ इएह सब उठा रहल अछि । मुदा आइ ओ एकदम चुप भेल छथि । अचानक रतन केर कनहा पर ककरो हाथ पड़लनि । ओ चौंकि क' देखलनि, पार्कक दरबान छल । ओकर भाव छलैक, की, आइ डेरा जयबाक विचार नहि अछि ? सब केओ तँ चल गेलाह । रतन चुपचाप बेंच पर सँ उठलाह आ अपन डेराक बाट धयलनि । आइ हुनका अपन धर्म-पत्नी मन पड़ि गेलथिन्ह । धर्म-पत्नीक नाम छलनि सुनीता । सुनीता स्वभावसँ एकदम सुशील छलीह । गोर रत-रत आ छरगरे देह, मुँह पातरे, मुदा आँखि पैघ-पैघ । रतनकेँ जी-जानसँ मानैत छलीह । नौ वर्ष पूर्व सुनीता रतनकेँ छोड़ि दोसर दुनियाँमे चल गेलीह । ई घटना रतनकेँ झकझोरि क' राखि देलक । मुदा घर मे बेटा-पुतोहु रहबाक कारणे ओ अपन व्यथो व्यक्त नहि क' सकलाह । ओकरहि सभक संग सब किछु बिसरबाक असफल प्रयास करैत रहलाह । आइ बेटा-पुतोहु सेहो अपन-अपन गन्तव्य स्थान गेलनि । तेँ आइ एकान्त पाबि रतनकेँ सुनीता मन पड़ब स्वाभाविके बुझना जाइत छन्हि । बेटा-पुतोहु छलनि, तँ किछु ने किछु कहि रतनकेँ हँसबैते रहैत छलनि । कहिओ किछु सोचबाक अवसर नहि दैत छलनि । आब एकटा नौकर छन्हि जे दिन भरि सब काज करतन्हि आ रातिमे अपना घर चल जायत । रतनकेँ मन पड़ैत छन्हि आइसँ तीस वर्ष पूर्व सुनीताक संग हुँनकर विवाह भेल छलनि । रतन प्राइवेट कम्पनी मे बड़ाबाबू छलाह आ सुनीता बी.ए. पास क' गृह कार्य मे अपन जीवन खपा रहल छलीह । हुनको इच्छा होइत छलनि जे कतहु बैंक वा कोनो आफिस मे नौकरी करथि, मुदा रतनक बाबूजी अमिरकान्त बाबू एकर अनुमति नहि देलथिन ।

ओ कहलथिन्ह, "स्त्रीगण केँ एसकर घर सँ बाहर पयर नहि देबाक चाहियनि । एहि सँ हुनका सभक पवित्रता नष्ट भ' जाइत छनि । दोसर गप्प जे जँ दुनू प्राणी नौकरीये करत, तँ बाल-बच्चाक देखभाल के करतैक । टाका अधिक अवश्य भेटतैक, मुदा परिवारिक सुख-शान्ति नहि रहतैक । ओना तँ भोजन नौकरो बना सकैत अछि बाल-बच्चाक देख-रेख सेहो क' सकैत अछि, मुदा जतेक संतुष्टि अपने कयलासँ होइत छैक, से नौकरसँ आशा नहि कयल जा सकैत छैक । स्त्रीगणक दूटा प्रमुख कर्त्तव्य छनि । पहिल बच्चाकेँ उचित ढंगसँ पालन-पोषण करब, ओकरा नीक संस्कार देब आ दोसर अपना परिवारक लोककेँ सुस्वादु भोजन करायब । ई काज आन केओ नहि क' सकैत अछि आ जँ करबो करत तँ आने जकाँ" ।

अमिरकान्तजी सुभ्यस्त गृहस्थ छलाह । खेती-बारीक अतिरिक्त सामाजिक कार्यमे सेहो रहैत छलाह । दूर-दूर धरि पंचैती करबाक लेल जाइत छलाह । सबारी उपलब्ध नहि रहला पर पैदलो चल जाइत छलाह । हुनका व्यवहारिक ज्ञान बड़ बेसी छलनि । हुनका निर्णयक केओ विरोध नहि करैत छल । एक दिनक गप्प अछि । अमिरकान्तजी एकटा पंचैती क' क' अयलाह । हुनका संगे तीन-चारि गोटे आर छलाह । मुदा जकरा विरोध मे निर्णय देल गेल ओ कनेक दबंग लोक छल। ओना ओकरा लेल दबंगसँ नीक शब्द लण्ठ रहत । किएक तँ दबंग ओकरा कहल जाइत छैक जे पौरुषशाली हो आ समय अयला पर दोसराक मदति सेहो करैत हो, मुदा जे केवल दोसराक अहिते करैत हो ओकरा लण्ठे कहल जायत तँ नीक रहत । ओ पंचैतीक विरोधमे न्यायालय चल गेल । न्यायालय मे जखन सबटा गवाही गुजरि गेलैक, बहस खतम भ' गेलै । तखन जज साहेब केँ पंचैती बला निर्णय पर संदेह भेलनि । ओ चाहितथि तँ अपन निर्णय द' सकैत छलाह, मुदा ओ अपन निर्णय देबा सँ पूर्व अमिरकान्तजीक मन्तव्य लेब उचित बुझलनि । ओ हुनका न्यायालय मे बजौलन्हि, आ पुछलथिन, "अपने कोन आधार पर ई पंचैती कयल अछि"। अमिरकान्तजी बिना कोनो रोक-टोकक सबटा वृत्तान्त कहि सुनौलथिन । किछु एहन गप्प छलैक जकर चर्चा बहस मे नहि भेल छलैक, आ तेँ जज साहेबकेँ संदेह भेल छलनि । मुदा जखन अमिरकान्तजी सब गप्पक खुलासा कयलनि, तँ

जज साहेब हुनका पंचैती केँ जायज ठहरौलथिन आ अपीलकर्त्ताकेँ नाहक परेशान करबाक कारणे एक हजार टाका जुर्माना कयलथिन । ओही दिनसँ अमिरकान्त बाबूक पंचैतीक सोरहा भ' गेल । ओहि इलाकाक लोक न्यायालय नहि जा क' अमिरकान्तेजीक शरणमे पहुँचय लागल ।

अमिरकान्तबाबू नारी शिक्षाक पक्षधर छलाह मुदा ओहि सँ बेसी ओ ओकर सुरक्षा सँ चिन्तित छलाह । पढ़ि-लिखि क' ओ कतहु नौकरी करथि, एकर ओ विरोधी छलाह । ओना तँ अमिरकान्तजी प्रगतिशील विचारधाराक लोक छलाह । ओ एहि सभक समर्थन करैत छलाह । हुनक दृष्टिकोण संकीर्णता सँ ऊपर छल । ओ स्त्री आ पुरुषकेँ रथक दुनू पहिया बुझैत छलाह । तेँ दुनू जतेक पढ़थि-लिखथि ओतेक नीक । बच्चाक पहिल शिक्षक ओकर माइये होइत छैक । माय जँ मूर्खो अछि, तैओ बच्चाक चरित्र निर्माण मे कोनहु कसरि नहि छोड़ैत अछि, आ जँ पढ़लि-लिखलि अछि तखन तँ आर नीक । नौकरी केनिहार स्त्री-पुरुष केँ अपन जीवन तँ नीक जकाँ कटितहि नहि छैक, ओ बाल-बच्चाक लेल की करत । हँ, दुनू प्राणीक कमाइ सँ घरमे बेसी टाका अवश्य अबैत छैक, मुदा सुख चैन कत' पाबी । घर मे बेसी टाका अयला सँ विवेक मरि जाइत छैक आ ओत' अहंकारक जन्म होइत छैक । अहंकार सँ आइ धरि ककर हित भेलैक अछि ?

जहियासँ अमिरकान्तजी शीतलपुरक पंचैती सँ आपस आयल छथि, हुनक अवधारणा बदलि गेल छनि । एक दिन अमिरकान्तजी केँ एकटा पंचैती मे शीतलपुर जाय पड़लन्हि । अमिरकान्तजी उचित पंचैतीक लेल विख्यात तँ छलाहे, मुदा ओ पंचैती सँ बेसी समझौता पर जोर दैत छलाह । पंचैती मे एक पक्ष केँ खुशी तँ दोसर पक्ष केँ दु:ख होयब स्वाभाविके अछि, मुदा समझौता मे एहेन स्थिति नहि अबैत छैक । ओहि मे दुनू पक्ष खुश भ' जाइत अछि । केओ कम तँ केओ बेसी । शीतलपुर मे पति-पत्नीक बीच झगड़ा छलैक । स्थिति छुट्टा-छुट्टीपर आबि गेलैक, मुदा बाधक छलैक दुनू बच्चा । दुनू बच्चा मे एकटा बेटा आ एकटा बेटी छलैक । ओकरा दुनूकेँ रखबाक लेल केओ तैयार नहि छल ।

दुनू पति आ पत्नी एकहि कार्यालय मे काज करैत छल । पत्नीक पद पति सँ बेसी छलनि । ओ ओकर गलत फायदा उठा रहल छलीह । आफिस मे तँ जे किछु, डेरो पर पति केँ दबयबाक प्रयास करैत छलीह । जखन पति अड़ि जाइत छलनि, तँ झगड़ा शुरू । से एहन झगड़ा जकर वर्णन करब कठिन अछि । दुनू बच्चाक देख-रेख बेचारे दादा-दादी करैत छलथिन । मुदा बेसी वयस भेलाक कारणे ओहो सब समुचित ढंग सँ देख-रेख नहि क' पबैत छलथिन मुदा करितथि की, "गला पड़ल ढोल, तँ बजौनहि कुशल" सएह बला गप्प । ओना तँ दुनू प्राणी कमाइत छलाह । अपना-अपना पयर पर ठाढ़ छलाह । चाहितथि तँ नौकरो राखि बच्चाक लालन-पालन क' सकैत छलाह । मुदा ओहि दिशा मे दुनू मे सँ किनको अभिरुचि नहि । किछु गोटे अपन सुझाओ देलथिन जे एक-एकटा बच्चा दुनू केँ द' देल जाय, मुदा अमिरकान्तजी एहि पक्ष मे नहि छलाह । हुनकर कहब छलनि, ''माये-बापक बँटबारा तँ बच्चा के खिन्न क' देत । जँ ऊपर सँ बच्चो केँ बाँटि देबैक, तँ ओ आर कुंठित भ' जायत । ओकर विकास अवरुद्ध भ' सकैत छैक । ओकरा हृदय पर आघात भ' सकैत छैक । कतबो उपचारक बादो ओकर क्षतिपूर्ति नहि कयल जा सकैत छैक । जाहि ठाम तलाकक परम्परा अछि, ओत' ने केओ ककरहुँ माय-बाप अछि आ ने केओ ककरो बेटा-बेटी, आ ने भाय-बहिन । तेँ दुनू गोटे मिलि क' एकटा एहन बाट अपनाउ, जाहिसँ सुखपूर्वक रहि सकी । पति-पत्नी मे नोंक-झोंक तँ प्राय: सब घर मे होइत छैक । ई कोनो नव गप्प नहि छैक । तखन कतहु कम आ कतहु बेसी । ई क्षणिक रहैत अछि । एहि सँ मनक विकार बहार भ' जाइत छैक । जिद्द नीको होइत अछि, जँ ओकर परिणाम सकारात्मक हो । कोनो बच्चा केँ पढ़बाक जिद्द छैक, तँ ई नीक भेलैक, मुदा जँ नहि पढ़बाक जिद्द कयलक तँ ओ खराब भेलैक । दुनू केँ बहुत तरहेँ बुझाओल गेलनि, मुदा केओ पाछाँ हटबाक लेल तैयार नहि । अंतत: दुनू केँ एक-एकटा बच्चा द' क' फराक क' देल गेलनि । अमिरकान्तजी आइ पहिल बेर अपन कर्त्तव्यक निर्वाह मे असफल भ' क' आयल छलाह । यद्यपि पंचैती तँ उचिते भेलैक, मुदा हुनकर प्रयास दुनूक बीच समन्वय करायब छलनि । ओहि

मे विफल रहलाह । एकर असरि हुनक विचारधारा केँ बदलि देलक । ओहि दिन सँ ओ नारी शिक्षाक तँ पक्षधर छलाहे, मुदा ओ कतहु नौकरी करथि, तकर नहि । तेँ ओ सुनीता केँ नौकरी नहि कर' देलथिन । ई तँ अपन-अपन- सोच थिक । स्त्रीगणक कर्त्तव्य थिक, परिवारक सृजन करब, पोषण करब, अपना स्नेह सँ सम्पूर्ण परिवार केँ सिंचित करब । एकटा अबोध बच्चा केँ कखन की चाही, ई माय छोड़ि दोसर केओ नहि बुझि सकैत अछि । ओ नौकरी सँ जतेक कमाओत, ओहि सँ बेसी बच्चाक चरित्र निर्माण क' पाबि सकैत अछि । हँ, जखन परिवार मे केओ अर्जन कयनिहार नहि हो, वा विषम परिस्थिति मे ओकर कमायब आवश्यके हो, तैखन छूट देल जा सकैत अछि आ एहीक लेल ओकर पढ़ाइ-लिखाइ आवश्यक बुझना जाइछ ।

सुनीता अपना पतिक संग सासु-ससुरक सेहो खूब सेवा कयलनि । रतन तँ बाहर रहैत छलाह । सुनीता गाम मे सासु-ससुरक लग रहैत छलीह । हुनका दूटा बेटा आ एकटा बेटी छलन्हि जकर नाम मुकेश, सुकेश आ साधना छलनि । दुनू बालक मेधावी छलाह आ पैघ सेहो भ' गेल छलाह । तेँ हुनका दुनूकेँ पढ़यबाक लेल रतन पटना ल' गेलाह । मुदा माँ-बाबूजी कें कोनो कष्ट नहि हो, एहि लेल सुनीता आ साधना गामे मे रहि गेलीह । बहुत नीक जकाँ सब किछु चलि रहल छल । सुनीता सासु-ससुरक सेवा मे कोनो तरहक कोताही नहि करैत छलीह आ बदला मे सासु-ससुरक वात्सल्य पाबि खूब प्रमुदित रहैत छलीह । मुदा विधाताक लिखल किछु आर छलनि । किछु दिनक बाद रतन केर माय स्वर्गीय भ' गेलीह आ अमिरकान्तजी सेहो चलबा-फिरबासँ लाचार भ' गेलाह । आब पंचैती करबाक लेल कतहु नहि जाइत रहथि । विशेष परिस्थिति मे पंचैती करयबाक लेल दुनू पक्ष हुनकहि ओहि ठाम चलि अबैत अछि । जेँ लऽ कऽ साधना सेहो पैघ भ' गेलीह, ओहो पाँचम पास क' गेलीह । गाम मे मिडिल स्कूल नहि होयबाक कारणेँ हुनका पढ़ाइ मे व्यवधान होम' लागल । तेँ इच्छा नहि रहितहुँ अमिरकान्तजी केँ पटना रतन केर डेरा पर आब' पड़लन्हि । मुदा अमिरकान्तजीक मन पटना मे नहि लगैत छलनि । हुनका धिया-पूता सब सँ गप-सप नहि होइत छलनि । पोता-पोती भोरे

स्कूल चलि जाइत छलनि । जखन अबैत छल तँ स्कूलक टास्क मे लागि जाइत छल । बेटा केँ नाइट ड्यूटी छलनि । राति भरि आफिस आ दिन भरि सूतब, इएह हुनक दिन-चर्या छलनि । मनुष्य एकटा सामाजिक प्राणी थिक । मात्र खायब आ पहिरब सँ मतलब नहि रहैत छैक । ओकरा समय व्यतीत करबाक लेल सेहो कोनो ने कोनो साधन चाही जाहि मे प्रमुख अछि अपन बतारी सभक संग गप-सप करब । एकर पूर्णतया अभाव छलनि । घर मे पुतोहुक संग कतेक गप करथि आ की गप करथि । तेँ ओ साँझ आ भोर एकटा पार्क मे जायब शुरू कयलनि । पार्क कोनो विशेष दूरी पर नहि छलैक । डेरा सँ मात्र दस मिनट केर बाट छलैक । ओहि ठाम अपनहि इलाकाक किछु गोटे भेटि जाइत छलथिन्ह । सब गोटे खूब गप-सप करैत छलाह । एक दोसराक संग एना खुलि क' गप करैत छलाह जेना गुलामी सँ मुक्ति भेटल होन्हि । एक बूढ़ आ ओहू मे विधुरक लेल घर जहल सदृश लगैत छैक । तेँ ओ सब पार्क मे अपना केँ मुक्त बुझैत छलाह । एक दिन अमिरकान्तजीकेँ रामदयाल जी सँ भेंट भ' गेलन्हि । दुनू गोटे एकहि इलाकाक लोक छलाह । रामदयालजी अमिरकान्तजीक नामसँ परिचित छलाह । मुदा दुनू गोटेकेँ प्रत्यक्ष रूपें भेट नहि भेल छलन्हि । ओ ककरो मुँहेँ अमिरकान्तजीक पंचैतीक विषय मे सुनने छलाह । इलाका मे राजा विक्रमादित्यक बाद हुनकहि नाम अबैत छलनि । रामदयालजी आ अमिरकान्तजी विशेष रुपेँ एक-दोसरा सँ गप्प करैत छलाह । दुनू गोटे तँ विधुरे छलाह, मुदा अमिरकान्तजीक घर पोता-पोती सँ पूर्ण छलन्हि आ रामदयालजीकेँ तकर अभाव । बेटाक विवाहक सात-आठ वर्ष भ' गेल छलनि, मुदा घर मे बच्चाक किलकारी नहि सुनि सकलाह । बेटा-पुतोहु तँ बड़ मानैत छलनि, मुदा हुनका सब सँ की गप्प करताह । मात्र कुशल-क्षेम, एहि सँ बेसी की करताह । तेँ पार्क मे बैसि सब केओ अपन-अपन मनक भरास बहार करैत छलाह आ बीतल बात केँ खोड़ैत-खाड़ैत अपन मन लगबैत छलाह । संयोगवश किछु दिनक बाद रामदयालजीक पुत्र कमलेशक दुर्घटना भ' गेलनि । ओ अस्पताल जाइत जाइत दम तोरि देलकनि । एहि घटना सँ रामदयालजीक रीढ़ टुटि गेलन्हि । सब टा संभावना खतम भ' गेलनि । सुकन्या विधवा

भ' गेलीह । घटनाक बाद सुकन्याक पिता राजशेखरजी अयलाह आ रामदयालजीकेँ बहुत तरहेँ बुझौलथिन । संगहि ओ अपना संगे सुकन्याकेँ सेहो ल' जयबाक प्रस्ताव देलथिन । रामदयालजी किछु बजितथि, ताहिसँ पूर्व सुकन्या बजलीह, ''बाबूजी ! हम हिनका छोड़ि कतहु नहि जा सकैत छी । अहाँ तँ कन्यादान क' क' अपन जिम्मेबारी पूर्ण कयल । आब हमरा अपना जिम्मेबारीक निर्वाह करबासँ नहि रोकू । एतेक दिन हम पुतोहु बनि क' रहलहुँ । मुदा आब पुत्र बनि क' रहबनि । हम बाबूजीक एतेक सेवा करबन्हि, जे हिनका कहिओ पुत्रक दुःखक अनुभव नहि होयतन्हि । सुकन्याक एहन विलक्षण व्यवहार सँ रामदयालबाबू अति प्रसन्न भेलाह, आ हुनका अपना हृदयसँ लगा लेलथिन्ह । किछु दिनक बाद सुकन्याकेँ कमलेशक स्थान पर नौकरी भेटि गेलन्हि । ओ ड्यूटी जयबा सँ पूर्व आ ड्यूटी सँ अयलाक बाद रामदयालजीक पूरा ध्यान रखैत छलीह । रामदयालजी सेहो आब हुनका पुतोहु नहि बुझि अपन बेटीये बुझैत छलाह आ सब तरहक दुःख-सुख केर गप्प करैत छलाह । आखिर करबो करतथि तँ ककरा संग । मात्र दुइये गोटे तँ पूरा परिवार मे छलाहे । रामदयालजीकेँ ई चिन्ता बनल रहैत छलनि जे हमर बाद सुकन्याक की होयतन्हि । हुनक ताक-हेर के करत ? एकटा नारी एसकर एहि समाज मे कोना रहि पओत ? जकरा सब केओ छैक आ सब किछु छैक, ओकर तँ कोनो सुरक्षे नहि आ जकरा केओ नहि छैक, अनाथ अछि, ओकर की होयतैक ? स्त्रीक तीनटा सहारा होइत छैक । बाल्यकाल मे पिता जुआनी मे पति आ बुढ़ारी मे बेटा वा बेटी । मुदा सुकन्याकेँ तँ तीनूक अभाव छलन्हि । ई चिंता हुनका सतत लागल रहैत छलनि । ओ पार्को मे विशेष रूप सँ एही विषय पर अमिरकान्तजीसँ बहस करैत छलाह । हुनका ई विश्वास छलनि जे अमिरकान्तबाबू पंचैतिया लोक छथि, अनुभवी छथि, कोनो ने कोनो जोगाड़ अवश्य लगौताह । एक दिन ओ अमिरकान्तजीसँ बजलाह, "अमीर बाबू ! अहाँ तँ सब दिन लोकक पंचैती कयलहुँ । कतेक तरहक समस्यासँ सामना भेल होयत । कतेको लोकक उलझन दूर कयने होयब । की, एकटा हमरा उलझनकेँ नहि सोझरा सकैत छी"?

अमिरकान्तजी बजलाह, "पहिने अपना उलझनसँ ने अवगत कराउ । तखन ने ओहिपर विचार-विमर्श होयतैक" ।

रामदयालजी बजलाह , "अपना ओहि ठाम एकटा समस्या पूर्वहि सँ आबि रहल अछि । कोनहु स्त्रीकेँ विधवा भेलाक बाद ओकर पुनर्विवाहक अनुमति हमर समाज नहि दैत छैक, जखन कि कोनो पुरुष विधुर पर ई नियम लागू नहि होइत छैक । हमरा विचार सँ विधवा विवाह लागू होयबाक चाही । विशेष क' एहन विधवा जे अल्प वयस केर होथि आ निःसंतान होथि । अन्यथा ओ ककरा पर आश्रित रहतीह ? जकरे सँ मदति केर आशा करतीह, ओएह हुनकर शोषण करतन्हि, आ एहन होइतहुँ छैक । हुनका कतहु अयबा-जयबाक लेल पुरुषक सहारा चाही । ओ के द' सकैत छनि ? एहि विषय पर अपनेक क़ी दृष्टिकोण अछि ।''

अमिरकान्तबाबू बजलाह, "देखू, रामदयाल बाबू, विदेश मे तँ एहन खूब भ' रहल छैक । जकरा दर्जनक दर्जन बाल-बच्चा छैक, ओहो एक पति कें तलाक द' क' दोसर सँ विवाह क' लैत अछि । तकर प्रतिफल होइत छैक जे ओहि ठाम सम्बन्ध नामक कोनो वस्तु नहि छैक । ने केओ ककरो माय-बाप अछि आ ने केओ ककरो बेटा-बेटी । एहन कार्य विधवाक कोन गप्प, सधवो करैत छथि । मुदा हमरा देशक संस्कार किछु आर अछि । एहि ठाम नारीक पूजा होइछ जे विदेश मे नहि होइत अछि । ओत' नारी भोगक वस्तु छथि । एत' नारी ककरो बेटी, तँ ककरो पत्नी आ ककरो माय छथि । एहि ठाम जे नारीक मान-सम्मान अछि, ओहि ठाम सर्वथा ओकर अभाव अछि । विवाहक मामिला मे जँ विदेशक अनुसरण करब, तँ ओ बच्चा ककर कहाओत । ओकरा माय जकाँ ताक-हेर के करत ? मरणोपरान्त जे संस्कार होइछ, ओकर अधिकारी के होयत ?"

रामदयालजी बजलाह, "ओना तँ कानून अपनहुँ देश मे बनि गेल छैक । मुदा कानूनसँ पैघ एहि ठामक सामाजिक बन्धन अछि । एहन विधवा जनिकर विवाह भेल आ पति स्वर्गीय भ' गेलथिन वा एहन जनिका संतान नहि छन्हि हुनका लेल तँ ई प्रतिबंध हटायब आवश्यक बुझना जाइत अछि जाहि सँ हुनका एकटा सहारा सेहो भेटि जयतन्हि, आ

भविष्य मे बाल-बच्चाक उमेद सेहो जागि जयतन्हि । एहिसँ ओ गलत प्रवृत्तिसँ सेहो बचि सकैत छथि । आइ-काल्हि हमरा समाजमे जँ विधवा किछु बजबाक साहस कयलक, तँ लोक ओकरा डायन, कलंकिनी, दुष्चरित्र कहि सम्बोधित करैत अछि । मुदा जकर परियठ मजबूत छैक, ओहि घरक विधवा ककरो किछु नहि बुझैत अछि ।''

अमिरकान्तजी बजलाह, "निःसंतान विधवाक लेल तँ ई कार्य उचित बुझना जाइत अछि । मुदा एहि बंधन केँ जँ ककरो लेल तोड़ि देल जायत, तँ एहिसँ ओकर दुरुपयोग होयबाक डर बेसी रहत । आनो गोटे जकरा आवश्कता नहि छैक, ओहो एकर अनुसरण करत । एकर असरि आनो क्षेत्रमे पड़ि सकैत छैक । तेँ समाज एकर अनुमति देम' नहि चाहैत अछि ।''

रामदयालजी बजलाह, "ई तँ समाजक मनमानी भेलैक ने ! समाजक कर्त्तव्य अछि, सभक कल्याण , सभक हित । जँ केओ घुटि-घुटि क' जीवन काटि रहल अछि, तँ ओहि पर समाज केँ सोचबाक चाही, ओकर उचित निराकरण करबाक चाही" ।

अमिरकान्तजी बजलाह, "अवश्य करबाक चाही, मुदा आइ "ने ओ देवी आ ने ओ कराह" । ने ओ लोक अछि आ ने ओ समाज । आइ अहाँक दुःख सँ केओ दुःखी नहि अछि आ अहाँक सुख देखि सब जरैत अछि । आइ सँ पचास वर्ष पूर्व जे समाज छल, से आइ नहि अछि । ओहि समय मे समाज एक दोसराक हित-अनहित देखैत छल । ककरो दुःख-सुखमे सब ठाढ़ रहैत छल । लोककेँ नीक बाट देखबैत छल । मुदा आइ ओ गप्प नहि अछि । समाज केवल सभैती भोज खयबाक लेल अछि । तमाशबीन बनि क' रहि गेल अछि । ओकरा अहाँक नीक-बेजायसँ कोनो मतलब नहि छैक । हँ, जँ, पयर ऊँच-नीच मे पड़ि गेल वा लीक सँ हटि कोनो नीको कार्य कयलहुँ, तँ बिना किछु विचार कयने, ओकर नफा-नुकसान देखने, ओहि पर मजाक अवश्य उड़ाओत । खाहे ओ कार्य कतबो प्रगतिशील, कल्याणकारी किएक नहि हो ।''

रामदयालजी बजलाह, ''समाज तँ सती प्रथाक सेहो समर्थक छल । तखन ओ टुटल की नहि ? आ जखन सती प्रथा टुटि सकैत अछि,

तँ विधवा विवाह यानि पुनर्विवाह सेहो भ' सकैत अछि । तखन कहिया धरि होयत कहि नहि सकैत छी ।''

अमिरकान्तजी बजलाह, "देखू, दुनू मे फर्क छैक । सती प्रथा मे जिबैत लोककेँ जबर्दस्ती आगि मे जरा देल जाइत छलैक । ओ अमानवीय कार्य भेलैक ।''

रामदयालजी, "ई कोन मानवीय कार्य भेलैक ? ओहि मे तँ एके बेर जरि जाइत छलैक, एहि मे तँ तिल-तिल क' जरैत अछि । ई तँ आर राष्ट्रद्रोह भेल । सरकारी कानूनक उपेक्षा भेल ।''

अमिरकान्तजी, "इहो प्रथा अवश्य टुटत, मुदा एकरा लेल आगु के आओत, इएह समस्या अछि । ओना बहुत गोटे एहिसँ प्रभावित छथि । ओ एहि विषय पर बहस करैत छथि, मुदा आगू अयबाक लेल तैयार नहि छथि । बिलाड़िक गरदनिमे घंटी बान्हत तँ के ? तेँ ई टुटि नहि रहल अछि ।''

रामदयालजी बजलाह, "ई तँ अपने सत्य कहल । ककरो ने ककरो तँ आगाँ आब' पड़तैक, समाजक उपहास सह' पड़तैक । एखन तँ ई विषक प्याली थीक, मुदा बाद मे अमृत भ' जायत । तेँ विषपान करबाक लेल ककरो ने ककरहुँ तँ आगू आबहे पड़तैक, शंकर बनहे पड़तैक ।''

अमिरकान्तजी, "से जहिया केओ बिषपान क' लेत, ओही दिन सँ ई प्रथा टुटि जायत आ विधवा विवाह शुरू भ' जायत" ।

2.

साधनाक विवाह सम्पन्न भ' गेलनि । साधनाक पति मनोज कोनो प्राइवेट कम्पनीमे मैनेजर छथि । विवाह पटने मे भेलैक आ खूब धूम-धामसँ, जेना सुनीता चाहैत छलीह । कन्यादान अमिरकान्तबाबू कयने रहथि । वर-कन्या एकदम अनुरूप, जेना राम-सीताक जोड़ी होथि । दुनू पक्ष एहि विवाहसँ खुश छलाह । यद्यपि रतन केँ साधनाक विवाह करयबाक कनेको इच्छा नहि छलनि । साधना एखन मात्र बी.ए. पास कयने छलीह । ओ एम.बी.ए. वा एम.सी.ए. कर' चाहैत छलीह । एहिमे

साधना केँ रतन केर सेहो समर्थन छलन्हि, मुदा सुनीता केँ जानि नहि किएक होइत छलनि जे साधनाक विवाह जतेक जल्दी होमए से नीक। ओ कतेको दिन रतनक समक्ष अपन बात रखबाक प्रयास कयलनि, मुदा रतन ओहि पर ध्यान नहि दैत छलाह। ओ कहैत छलाह, "एखन ओकरा पढ़' दिऔक। विवाहसँ पढ़ाइमे व्यवधान होयतैक"। अंततः ओ एक दिन अमिरकान्तबाबूसँ बजलीह, "बाबूजी ! हमर इच्छा अछि जे साधना केँ आब विवाह करा देल जाय। ओ तँ बी.ए. पास क' लेलनि। आब कतेक पढ़तीह आ पढ़बाक होयतन्हि तँ विवाहक बादो पढ़ि सकैत छथि।''

अमिरकान्तजी, "ओना तँ हमरा हिसाबेँ साधना विवाह योग्य बहुत पहिनहि भ' गेलीह। मुदा आइ-काल्हि पढ़ाइक कारणे विवाह बेसी वयस मे होम' लागल अछि। हम सब गाममे रहनिहार लोक एकरा पसिन्न नहि करैत छी। तखन तँ अहाँ दुनू प्राणीक बीचक गप्प अछि। ई निर्णय तँ अहीं सब केँ लेम' पड़त। अहाँ सब, सब तरहेँ बुझनुक लोक छी आ हम ठहरलहुँ देहाती"।

सुनीता बजलीह, "बाबू जी ! अहाँ देहाती अवश्य छी, मुदा अहाँक अनुभव, विचार हमरा सबसँ बहुत बेसी परिपक्व अछि। ओहुना अहाँक निर्णय लेबाक क्षमता हमरा सबकेँ कहिओ नहि भ' सकैत अछि।''

अमिरकान्तजी, "एहन कोनो गप्प नहि छैक। समय अयला पर सब किछु स्वतः आबि जाइत छैक। मुदा हम अहाँकेँ किछु फिरीशान देखि रहल छी"।

सुनीता, "बाबूजी ! फिरीशान तँ नहि छी, मुदा मनमे एहन आशंका भ' रहल अछि जे साधनाक विवाह देखब की नहि, आ तेँ हम चाहैत छी जे ई काज जतेक जल्दी होमए से नीक।''

अमिरकान्तजी, "एहेन अमंगल किएक सोचि रहल छी। एखन अहाँ हमरा सोझाँ बच्चे तँ छी। सब किछु नीक जकाँ होयतैक आ अहाँ देखबैक। ओना तँ सब किछु भगवानेक कृपा वा इच्छासँ होइत छैक, तथापि लोककेँ अपन सोच सकारात्मक रखबाक चाही। एहि पर रतन केँ की विचार छन्हि।''

सुनीता, "हुनका कहैत-कहैत तँ हम थाकि गेलहुँ। ओ किछु सुनबाक लेल तैयार नहि छथि। ओ बेटीक हँ मे हँ मिला रहल छथि। कतहु कोनो बेटी आइ धरि विवाह करयबाक लेल अपना माय-बापसँ कहलक अछि ?''

अमिरकान्तजी, "ठीक छैक, काल्हि प्रातःकाल हम एहि विषय पर रतनसँ गप्प करैत छी। ओना विवाह ककरो चाहने आ नहि चाहने थोड़े होइत छैक। ओ तँ विधिक विधान थीक। जन्म, मरण, आ विवाह ई तीनू ब्रह्माक द्वारा निर्धारिते समय पर होयत।'' सुनीता चल गेलीह आ अपना दिन-चर्या मे लागि गेलीह। अमिरकान्तजी सुनीताक आशंका पर गम्भीरतासँ विचार कर' लगलाह। ओ जतेक एकरा बिसरबाक प्रयास करैत छलाह, ओतबे दिमागमे अनहोनीक आशंका नाचि उठैत छलनि। प्रातःकाल रतन कार्यालयसँ अयलाह। ओ कार्यालयसँ अबैत देरी सबसँ पहिने बाबूजीक भेंट करैत छथि। हुनक कुशल-क्षेम आ राति भरिक गतिबिधि पर प्रतिक्रिया लैत छथि। ओकरा बादे कपड़ा बदलि, चाह पीबि, अन्य कार्य करैत छथि। हुनका अबितहि अमिरकान्तजी बजलाह, "बौआ ! आबि गेलहुँ" ?

रतन, "जी, बाबूजी" !

अमिरकान्तजी, "कनेक चाह पीबि एम्हरे आयब। किछु जरूरी गप्प करबाक अछि"।

रतन, "कहू ने बाबूजी ! की कहैत छी। चाह हम बादेमे पीब।''

अमिरकान्तजी, "नहि, नहि, एहन कोनो हड़बड़ी नहि छैक। पहिने कपड़ा-लत्ता बदलि, चाह पीबि क' आउ। तखन चैनसँ गप्प करब। विषय कनेक गम्भीर छैक। एखन जाउ।'' रतन सोचमे पड़ि गेलाह। एहन कोन गप्प भ' सकैत छैक। एना तँ बाबूजी कहिओ नहि कहैत छलाह। ओ तँ स्वयं कोनो निर्णय लेबाक लेल स्वतंत्र आ सक्षम छथि। हम सब एखन धरि हुनकर कोनो आदेशक अवहेलना नहि कयलहुँ अछि। तखन एहन कोन गप्प भ' सकैत छैक जाहि पर हमरा सँ विमर्शक प्रयोजन भेलनि।

की सुनीता तँ ने.........। रतन जल्दी-जल्दी कपड़ा-लत्ता बदलि क' मुँह-हाथ धोलनि आ चाहक टेबुल पर बैसि गेलाह । सुनीता हुनका सोझाँ प्लेटमे बिस्कुट, एक गिलास जल आ कप मे चाह राखि देलथि ।

रतन पुछलथिन्ह, "सुनीता ! बाबूजी केँ की भेलनि अछि" ?

सुनीता अकचकाइत, ''किछु तँ नहि । से किएक ?''

रतन, "हमरासँ ओ कोन विषय पर गप्प कर' चाहैत छथि । पुछबो कयलियनि तँ बजलाह, ''गम्भीर गप्प अछि, चैनसँ आउ । एहन की भ सकैत छैक ?''

सुनीता तँ सब गप्प बुझिते छलीह, मुदा अनठाबैत बजलीह, "हमरा की पता । हमरा संग तँ किछु ने भेलनि अछि । किछु कहैत छलाह की ?''

रतन, "एखन कहाँ किछु कहलन्हि अछि । एखन तँ बस इएह, जे जल्दी चाह पिबि क' आउ ।"

सुनीता गप्प बदलैत बजलीह, "भ' सकैत अछि जे गामक कोनो समस्या पर गप्प करथि ।''

रतन, "भ' सकैत अछि, मुदा एकरो लेल तँ ओ स्वयं सक्षम छथि । किछु बुझबामे नहि आबि रहल अछि ।'' रतन आइ जल्दीये चाह पीबि क' बाबूजी लग गेलाह । एतेक जल्दी ओ कहिओ चाह नहि पीबैत छलाह । आन दिन तँ सुनीताक संग गप-सप करैत चाहक चुस्की लैत छलाह, मुदा आइ बाबूजीक गप्पसँ मनमे उद्विग्नता आबि गेलन्हि । एही सोच विचारक कारणे जल्दी आबि गेलाह । सुनीता कोनो गप्पमे फँसयबाक प्रयासो कयलथिन, मुदा ओ ध्यान नहि देलनि । अमिरकान्तजी अपना सोझाँमे कुर्सी पर बैसबाक लेल इशारा कयलथि, आ बजलाह, "ओना तँ हम अहाँ सभक जीवनशैली मे हस्तक्षेप करब उचित नहि बुझैत छी । कारण सभक अपन-अपन जीवाक ढंग होइत छैक । एक शहरीक जीवन आ एक देहातीक जीवन, आ दुनूक सोच मे बहुत भिन्नता होइत छैक । जे हमरा पसिन्न अछि, से अहाँकेँ नहि, आ जे अहाँके पसिन्न अछि, से हमरा नहि । तथापि आइ हम किछु कहबाक लेल विवश छी ।

रतन, "कहू ने बाबूजी, अपनेक आदेश के आइ धरि अवहेलना भेल अछि की ? अपने जे कहबै, सैह होयतैक । अपने आदेश तँ करिऔक ।''

अमिरकान्तजी, "आदेश नहि, एकटा सलाह, एकटा विचार, आ ओहि पर तर्कसंगत विमर्श" ।

रतन, "ठीक छैक, कहल जाओ ।''

अमिरकान्त जी, "हमरा विचार सँ साधनाक विवाह जल्दीये भ' जयबाक चाही "।

रतन, "मुदा बाबूजी...

अमिरकान्तजी गप्प केँ कटैत बजलाह, "हम बुझैत छी, अहाँ जे कह' चाहैत छी । ई केश रौद मे नहि पकौने छियैक । अहाँ इएह ने कहब जे, ओ एखन विवाह नहि कर' चाहैत अछि । ओ एखन पढ़ैत अछि ।''

रतन, "जी, बाबूजी" ।

अमिरकान्तजी, "मुदा हमहूँ विवश छी''। ओ सुनीताक संग भेल गप्प पर विस्तृत चर्चा कयलनि आ अपन आशंका सेहो व्यक्त कयलनि । दुनू गोटे मे खूब घमर्थन भेलनि । रतन जीवनमे पहिल बेर अमिरकान्तजीक संग एहि तरहेँ बहस कयने छलाह । ओना तँ ओ साहसो नहि करितथि, मुदा अमिरकान्तजी कहलथिन्ह, मन मे जे कोनो गप्प हो, ओकरा अवश्य प्रकट करू । कोनो संकोच नहि करू । एखन हम सब ओकिलक भूमिकामे छी । दुनू दिससँ तर्क-वितर्क चल' लागल । अंतत: अमिरकान्तजीक तर्कक सोझाँ रतनक किछु नहि चलल आ निर्णय भ' गेल जे साधनाक विवाह जल्दीये होयबाक चाही । रतन वर तकबामे लागि गेलाह । वरो भेटि गेलनि आ खूब सऽख-मनोरथ सँ साधनाक विवाह भेल । साधना अपना सासुर चल गेलीह । किछु दिन तँ सुनीताकेँ साधनाक कमी बड़ अखड़लनि, मुदा धीरे-धीरे अभ्यस्त भ' गेलीह ।

एक दिन सुनीता नैहर गेलीह । संगमे मुकेश आ सुकेश सेहो छलनि । रतन बाबूजीक दुआरे नहि गेलाह । हुनकर परिचर्या के करैत ?

ओहि ठाम सुनीताक छोट भायक विवाह छलनि । सब काज नीक जकाँ सम्पन्न भ' गेल । प्रातःकाल सुनीताकेँ पटना अयबाक छलनि । बसक टिकट सेहो कटबा नेने रहथि । एकाएक एगारह बजे रातिमे सुनीताकेँ साँप काटि लेलकनि । समूचा गाममे उथल-पुथल मचि गेल । कतेको झाड़-फूकबला सब आबि क' झाड़-फूक कयलक, मुदा सब बेकार भ' गेल । हॉस्पीटल सेहो आनलि गेलीह, मुदा केओ सुनीताकेँ बचा नहि सकल । सुनीता ई दुनियाँ छोड़ि क' चलि गेलीह । रतनक परिवार मे केओ स्त्रीगण नहि बचलीह जे अपना घरक लोककेँ एक गिलास जलो द' सकथि । कहबाक लेल तँ अमिरकान्तबाबू चारि भाय छलाह । खूब भरल-पुरल परिवार छलनि, मुदा सुख-दुःखमे एक दोसर केँ देखनिहार केओ नहि । एकर मुख्य कारण छलीह स्त्रीगण । स्त्रीगण मे किनको, किनको सँ नहि पटैत छलनि । सब अपनहिमे गौरवे आन्हरि, आ पुरुषो सब स्त्रीयेगणेक वशीभूत छलाह । रतन केर संगे एकटा समस्या भ' गेलनि जे अमिरकान्तजीकेँ पटनामे कोना रखताह । ओहि ठाम अपने तँ ओ आफिस जयताह आ बच्चा दुनू कालेज । भानस-भात के करत ? अपने तँ ओ सब मेसो मे खा लेताह, मुदा अमिरकान्तजी तँ मेस वा होटलमे नहि खाइत छथि । तेँ हुनका लेल गामहि मे एकटा नौकर राखि देल गेलनि । नौकर भरि दिन रहितनि । अमिरकान्तजीक दुनू साँझक भोजन बनाओत आ राति मे अपन घर चल जयतनि । ओ दिन भरि हुनकर सेवा करैत छलनि मुदा राति रामभरोसे ।

रतन सेहो दुनू बालककेँ ल' क' पटना चल अयलाह । ओत' एकटा मेस ठीक कयलनि जाहि मे तीनू बापुत दुनू साँझ भोजन करैत छलाह । रतन सात बजे संध्या अपना ड्यूटी पर जाइत छलाह आ भोरे आठ बजे आपस अबैत छलाह । बेटो दुनू आठ बजे सबेरे कालेज जाइत छलनि आ संध्या पाँच बजे आपस अबैत छलनि । एहन स्थिति मे घरक कार्य हेतु ने कोनो नौकर राखि सकैत छलाह आ ने अपनेसँ सब काज क' सकैत छलाह । जकरा जेना जे बुझाइत छलैक, से करैत छल । घर एकदम अस्त-व्यस्त लगैत छल । मात्र रवि दिन क' सब केओ मिलिक' घरकेँ सुव्यवस्थित करैत छलाह । रतनकेँ कतेको लोक पुनः विवाहक लेल

आग्रह करैत छलन्हि मुदा ओ ककरो नाक पर माछी बैस' नहि दैत छलाह । एकर दू टा कारण छलैक जकर भुक्तभोगी ओ स्वयं आ हुनकर पिता अमिरकान्तजी छलाह । अमिरकान्तजीक मायक मृत्यु ओहि समय मे भेल छलनि जखन अमिरकान्तजी मात्र तेरह वर्षक छलाह । घरक ताक-हेर करबाक लेल अमिरकान्तजीक बाबूजी खोखन बाबू दोसर विवाह कयलनि । ओहि मे तीनटा बेटा आ दू टा बेटी भेलनि । ओना तँ खोखन बाबू विवाह करबाक पक्षमे नहि छलाह, मुदा घर मे भानस-भात करबाक लेल कोनो स्त्रीगण नहि छलीह । दुनू बापुतकेँ भोजन-भात मे बेहद कष्ट होइत छलनि । किछु दिन तँ खोखन बाबूक बहिन आबि क' घर सम्हारि देलथिन, मुदा ओहो अपन घर-द्वारि छोड़ि कतेक दिन रहितथिन । अंततः साल भरिक बादे खोखन बाबू विवाह क' लेलनि । सतमायसँ अमिरकान्तजीकेँ शुरू मे तँ ठीके-ठाक रहलनि, मुदा सतमाय तँ सतमाये होइत अछि । आइ धरि एहन सतमाय नहि देखल अछि जकरा सतौत वा सतधीसँ पटैत हो । सएह स्थित हुनको छलनि । कने-मने नोंक-झोंक तँ शुरूहेसँ होइत छलनि । जखन अमिरकान्तबाबूक विवाह-द्विरागमन भेलनि आ कनियाँ पर हुकुम चलायब शुरू कयलनि, ओ कनेको एम्हर-ओम्हर भेला पर प्रताड़ित करब नहि बिसरैत छलीह । नव कनियाँकेँ लोक झाँपन दैत छैक, मुदा तकर सर्वथा अभाव छलनि । तखन कनियाँ सेहो सब आरि-धूरकेँ तोड़ि फाँड़ कसलनि । दिन-राति कलह होम' लागल । दुनू बाप-बेटा मूक दर्शक भेल बैसल रहैत छलाह । झगड़ा देखबाक लेल टोल-पड़ोसक लोकक भीड़ तँ रहितहि छल । बाटो-बटोही आ आनो टोलक लोक सब जुटि जाइत छलैक । अंततः अमिरकान्तजी दुनू प्राणीकेँ फराक क' देल गेलनि आ शेष धिया-पूताक संग खोखन बाबू अलग । चालीस बीघा जमीनमे सँ अमिरकान्तजीकेँ मात्र दू बीघा खेती जोगरक जमीन भेटलन्हि । ओ दुनू प्राणी ओहीसँ संतोष कयलन्हि । खोखनबाबू चाहिओ क' अमिरकान्तजीक मदति नहि क' पबैत छलाह । जासूस सब लगले रहैत छलैक । एहि तरहक लोक समाज मे बेसी रहैत अछि जे एम्हर के ओम्हर क' दू गोटेक बीच आसानीसँ झगड़ा लगबैत अछि, आ अपने बैसि क' दुनूक पंचैती करैत अछि । बेचारे खोखनबाबू मन मसोसि क' रहि

जाइत छलाह । कदाचित् जँ कहिओ किछु द' देलन्हि, तँ महाभारत होयब अवश्यम्भावी छलैक । तखन तँ हुनकर एहेन व्यक्तित्वे छलनि जे सब ठाम आदर भेटैत छलनि । रतन नहि चाहैत छलाह जे हमरो बाल-बच्चाक संग एहने स्थिति हो । दोसर हुनका सुनीताक संग एतेक प्रेम छलनि जे ओहि स्थान पर ओ दोसर ककरो नहि राखि सकैत छलाह । ओना तँ अपना पत्नीक संग प्रेम सबकेँ रहैत छैक, मुदा जे त्याग रतनक परिवारक लेल, माय-बाबूजीक लेल, सुनीताकेँ छलन्हि, से विरले देखबा मे अबैत अछि । आ इएह कारण छल जे मुइलाक बादो सुनीता, रतन केर हृदय सँ बहरा नहि रहल छलीह । हमरा समाज मे एकटा सबसँ पैघ समस्या "उलहन देबाक" अछि । एहि उलहनक कारणे हमरा समाजक स्थिति दिनानुदिन विकृत होइत जा रहल अछि । जे स्वाभिमानी अछि, ओकर जीयब कठिन अछि । हमरा समाज मे ओएह रहि सकैत अछि जकरा आँखि मे पानि नहि छैक । कोनहु कार्य जँ अपना करीबी लोक सँ करायब तँ तुरंत उलहन द' देत, "फेर तँ हमरहि ने आशा भेलनि" आ जँ दोसर सँ करायब, तँ कहत "परचट्ट" अछि । दोसरे लग बौआइत अछि, हमरा सबकेँ नहि पुछैत अछि, तँ किएक किछु बाजू । मतलब ई जे ने किछु करत आ ने कर' देत । जँ ककरहुँ दोसरकेँ बजायब, तँ ओकरहु अनक-भनकसँ उकटा-पैंची करैत भगबाक लेल विवश क' देत । एहि विषयमे एकटा घटनाक उल्लेख करब आवश्यक प्रतीत भ' रहल अछि:-

हमरहि गाम मे एक गोटे छलाह आ नाम छलनि नारायणजी । नारायणजी बड़ सज्जन लोक रहथि आ मितभाषी सेहो । नारायणजीक पत्नी स्वर्गीय भ' गेलथिन्ह । हुनका एकटा सात वर्षक बेटी छलन्हि पूजा । नारायणजी एही शर्त्त पर विवाह कयलनि जे नवकी कनियाँ हुनका बेटीकेँ अपना धिया-पूतासँ बेसी मानथि । राधिका शर्त्त मानि लेलनि । विवाह भ' गेल आ राधिका अपना वचन पर कायम छलीह । पूजाक एकटा छींक पर राधिका बेचैन भ' जाइत छलीह । धीरे-धीरे पूजा पैघ होम' लगलीह । राधिका पूजाकेँ स्कूलक संग गृह कार्य मे सेहो प्रवीण क' देलन्हि । मुदा समाजक दाइ-माइ केँ ई सामंजस्य अनसोहाँत लगैत छलनि, जे पूजा केँ सतमायक संग एतेक नीक ताल-मेल किएक छैक । ओ लोकनि आपसमे

कनफुसकी करब शुरू क' देलनि । अवश्य सतमाय पूजाकेँ नोन पढ़ा क' खुऔने अछि । ओकरा जे जे कहैत अछि, ओ मशीन जकाँ करैत अछि । कतेको दाइ-माइ-पूजाकेँ बहकयबाक अथक प्रयास कयलनि, मुदा सब बेकार भ' गेल । अंततः एकटा बुढ़ी आँगन आबि राधिकासँ बजलीह, "कनियाँ, हम अपना पुतोहु केँ नोन पढ़ा क' खोआब' चाहैत छी । कनेक एकरा पढ़ि तँ दिऔक आ आगाँ एकटा पुरिया बढ़ा देलथिन । संगहि इहो कहलथिन जे मंत्र ओएह देबैक, जे पूजा के देने छलियैक ।'' राधिकाकेँ बकौर लागि गेलन्हि । ओ नारायणजी केँ सब गप्प कहलथिन्ह । कनेक कालक लेल नारायणजी आ राधिकाकेँ मन मे संदेह भेलनि । कदाचित् पूजा तँ ने....। ओ पूजाकेँ पुछलथिन, "पूजा, अहाँ अपना नवकी माय केर व्यवहारसँ अप्रसन्न छी की ?'' पूजा बजलीह, "जी नहि, बाबूजी ! हम माय सँ अप्रसन्न किएक रहब । हमरा तँ माय एतेक मानैत छथि, जकर वर्णन नहि क' सकैत छी । सम्भवतः एतेक अपनो माय मानितथि वा नहि, कहि नहि सकैत छी । मुदा बाबूजी ई गप्प अपने किएक पुछल अछि ? केओ किछु बाजल अछि वा माय हमरा व्यवहार सँ अप्रसन्न छथि ?" "नहि, नहि, एहेन कोनो गप्प नहि छैक" नारायणजी बजलाह आ तीनू गोटे आपस मे कनफुसकी कयलन्हि । दोसर दिन पूजा आ राधिकामे खूब झगड़ा होयब शुरू भेल । सब टोल-परोसक लोक जुटि गेल दाइ-माइ तँ ओकरहि प्रतीक्षा मे छलीह । सब आबि एम्हर के ओम्हर करब शुरू क' देलनि । किछु गोटे पूजाकेँ तँ किछु गोटे राधिकाकेँ बुझाब' मे लागि गेलीह । राधिका आ पूजा आँखिक इशारासँ किछु गप्प कयलनि आ दुनू भभाक' हँस' लगलीह । सबटा बीच-बचाव कयनिहारिक मुँह अपना सनक भेलनि । सब केओ मूड़ी लटकौने अपना-अपना घर गेलीह । रतन आ अमिरकान्त सेहो एकरहि शिकार छलाह । परिवार मे कुल बाले-बच्चे चालीस-बियालीस गोटे छलनि, मुदा सुनीताक अरगासन रन्हबाक लेल केओ नहि आयल । हारि क' रतन स्वयं ओ काज कयलनि । ताहि ठाम दोसर कोन गप्प करब । अमिरकान्तजी आ हुनकर हितैषी लोक बराबरि एहि विषय पर चर्चा करैत रहैत छलाह । रतनकेँ दोसर विवाह करबाक चाहियनि । जँ से नहि करताह तँ भविष्य कोना

कटतनि । जखन मुकेशक विवाह होयतन्हि, तँ कनियाँकेँ चारि दिन के सम्हारत ? ओकर बिध-बाध के करत । यावत् ओ कोबर मे रहतीह, हुनक इन्तिजाम-बात वा भानस-भात के करत ? एहि सब बिन्दु पर विचार करैत ओ बीच-बीच में रतनकेँ सूचित करैत छलथिन्ह । मुदा रतन एहि विषय पर एकदम मौन छलाह । ओ एहि गप्पक कोनो उत्तर नहि द' पबैत छलाह, "बाबूजी ! जँ अहाँकेँ गाम मे मन नहि लगैत हो, तँ पटने चल आउ । बेचारे अमिरकान्तबाबू चुप भ' जाइत छलाह । हुनका अपन दिन मन पड़ि जाइत छलनि आ सोचैत छलाह, ''क्षणिक सुखक लेल शेष जीवनकेँ नारकीय बनायब उचित नहि ।''

3.

एक दिन सुकन्या अपना कार्यालयसँ आबि रहल छलीह । ओ नित्य बस सँ अबैत-जाइत छलीह । ओ बसक प्रतीक्षा मे बसस्टैण्ड पर ठाढ़ि छलीह । समय करीब सात बाजि रहल छलैक । अगहन मास बीति रहल छलैक । राति अन्हरिआक संग जाड़ सेहो लगैत छलैक । आकाश घनघोर घटासँ आच्छादित छलैक आ रहि-रहि क' बिजुरी सेहो चमकि उठैत छलैक । अन्तिम बस साढ़े सात बजे छलैक । ओना तँ राति कोनो बिशेष नहि भेल छलैक, मुदा दृश्य बेस भयावह लागि रहल छलैक । सुकन्या डेरा अयबाक लेल अधीर भ' रहल छलीह । मुदा कोनो उपाय नहि सुझि रहल छलन्हि । ओहिना ओ आन दिनुक अपेक्षा दू घंटा विलम्ब छलीह । कदाचित् आखिरी बस आबए वा नहि । तखन कोन उपाय करब । तेँ मनमे कतेक तरहक आशंका उठि रहल छलन्हि । मन होइत छलनि जे कोनो स्कूटर वा मोटर साइकिल बलासँ लिफ्ट माँगि ली, मुदा मन सेहो डेराइत छलनि । पता नहि ओ केहन लोक होयत । कोनो खराबो व्यवहार तँ क' सकैत अछि । बाट एकदम सुनसान छलैक । दूर-दूर धरि केओ देखाइ नहि पड़ैत छल । हल्का बुंदा-बुंदी शुरू भ' गेलैक । दूरसँ एकटा स्कूटर अबैत देखि अनायास सुकन्याक हाथ उठि गेल । ल'ग अयला पर स्कूटर रुकि गेल, आ आवाज आयल, "कत' जायब ?''

सुकन्या किछु उत्तर नहि द' पओलन्हि । ओ सोचितहि छलीह, की कयल जाय । तावत् पुनः आवाज आयल, "कत' जयबाक अछि" । "बोरिंग रोड" सुकन्याक उत्तर छलनि । पुनः आवाज आयल, "बोरिंग रोड मे कोन ठाम" । "ए.एन. कालेज लग" सुकन्या बजलीह । पुनः आवाज आयल, "ठीक छै, जल्दी सँ पाछाँमे बैसि जाउ । बड़ जोर सँ वर्षा आबि रहल अछि ।'' सुकन्या स्कूटर केर पाछाँमे बैसि गेलीह आ ठीक पन्द्रह मिनटमे अपना डेराक लग पहुँचि गेलीह । तावत् वर्षा कनेक जोर पकड़ि लेलक । सुकन्या स्कूटरसँ उतरि, ओहि स्कूटर सवारसँ आग्रह कयलनि, "कनेक बिलमि जइतहुँ तँ नीक रहैत । एहि वर्षामे भीजि जायब तँ मन सेहो खराब भ' सकैत अछि ।'' रतन स्कूटरसँ उतरि क' मकानक छज्जीक नीचाँ ठाढ़ भ' गेलाह । एना किएक ठाढ़ भेलहुँ । डेरा मे चलू ने । वर्षा छुटि जायत, तँ चल जायब । रतन सोचलनि जे कोनो अपरिचित आ सेहो महिलाक ओहि ठाम राति मे जायब उचित नहि । पता नहि ओ कोन रूप मे आयल अछि । वर्षासँ रक्षा करब मानवता छलैक, से कयलहुँ, मुदा एहिसँ आगाँ बढ़ब उचित नहि । ओ बाजल, "देखू, अहाँ अपना घर आबि गेलहुँ ने ? बस भ' गेलैक । हम अहाँक डेरा नहि जायब । अहाँ महिला छी, पता नहि लोक की की अनर्गल गप्प करत । हमर तँ किछु बिगड़त वा नहि, मुदा अहाँकेँ ई समाज जीब' नहि देत । सुकन्या चल गेलीह । डेराक भीतर गेलाक बाद रामदयालजी पुछलथिन, "कनियाँ आइ बड़ अबेर भ' गेल" ।

सुकन्या बजलीह, "हँ बाबूजी ! किछु आफिसक कार्य छलैक, आ समय पर बस नहि भेटल । ओ तँ एकटा भला आदमी भेटि गेलाह, जे अपना सकूटर पर लेने अयलाह । अन्यथा पता नहि कखन धरि अबितहुँ आ वर्षामे भीजि सेहो जइतहुँ ।''

रामदयालजी पुछलनि, "ओ भलमानुष के छलाह आ कत' रहैत छथि" । "से तँ हम नहि जनैत छी आ पुछबो नहि कयलियनि, मुदा एखन ओ अपनहि डेराक सोझाँ छज्जीक नीचाँ ठाढ़ भ' वर्षासँ अपन बचाओ क' रहल छथि", सुकन्या बजलीह ।

रामदयालजी, "अहाँ अयबाक लेल आग्रह नहि कयलियनि । जे

व्यक्ति अहाँकेँ एतेक मदति कयलन्हि, हुनका अहाँ वर्षामे भिजा रहल छियैन्हि ।''

"बाबूजी ! हम तँ बहुत आग्रह कयलियनि, मुदा ओ अयबाक लेल तैयार नहि भेलाह । कहलनि, ''अहाँ महिला छी, हम अहाँक संग जायब तँ लोक अनेरे फतूर उड़ाओत । कतेक केर मुँह बन्न करबैक", सुकन्या बाजल छलीह ।

रामदयालजी, "ठीक कहल, सहीमे ओ भला आदमी छथि । जनिक एहन उत्तम विचार छन्हि । ओ अपनहुँ अवश्य नीक लोक होयताह । एहि मे कोनो संदेह नहि एहन लोककेँ वर्षा मे भिजाबी से उचित तँ नहि" । रामदयालजी तुरंत उठिक' बाहर गेलाह आ छज्जीक नीचाँ ठाढ़ व्यक्तिसँ बजलाह, "अपनहि केर स्कूटर पर सुकन्या आयल छलीह की ?''

रतन बजलाह, "हम नाम त' नहि जनैत छियनि, मुदा एकटा महिला बस स्टैण्ड मे बस केर प्रतीक्षा क' रहल छलीह । ओ स्थितिक अनुकूल हमरा सँ मदति केर अपेक्षा कयलनि आ हम समयक विकरालता देखि, बिना किछु पुछने, एहि ठाम धरि पहुँचा देलियन्हि" ।

"ई तँ अपने बड़ उत्तम कार्य कयल, मुदा अपने बाहर किएक रहि गेलहु ?" रामदयालजी कहलनि ।

रतन बजलाह, "जी, हमरो कनेक डेरा पर आवश्यक कार्य अछि, तेँ वर्षा छुटबाक प्रतीक्षा क' रहल छलहुँ । आब कनेक कम भेल अछि । आब हम चलि जायब ।''

रामदयालजी बजलाह, "जी नहि, एखन कम नहि भेलैक अछि । एखन तँ आर बढ़ि गेलैक अछि । चलू भीतर आबि क' बैसू । अहाँ तँ नीक लोकक परिचय द' देलहुँ । हमरा सबकेँ गेल-गुजरल बुझैत छी ? हम अहाँ केँ भीज' नहि देब ।'' रामदयालजी रतनकेँ डेन पकड़ि क' भीतर ल' गेलाह आ सोफा पर बैसौलनि । ओना सही मे वर्षा बढ़िये गेल छलैक, मुदा रतन तँ बहाना कयने छलाह । तावत चाह आ बिस्कुट सेहो आबि गेल । रतन बिस्कुट नहि खयलनि, मात्र चाह टा पीलनि । एही क्रम

मे रामदयालजी बजलाह, "ई हमर पुतोहु सुकन्या थिकीह आ हम हिनक ससुर रामदयाल । विधाताक कोन कसूर कयने छलहुँ, पता नहि । तीन वर्ष पूर्व पत्नी स्वर्गीय भ' गेलीह आ एक वर्ष पूर्व हमर बालक । सुकन्या विधवा छथि आ एक मात्र हमर उत्तराधिकारिणी । हमर हाथ-पायर सब किछु इएह छथि । हम हिनक भरण-पोषण कत' सँ करब । इएह हमर पेट भरि रहल छथि । एकटा इएह चिंता रहैत अछि जे हमरा बाद हिनका लेल के ठाढ़ होयत । ई तँ हमर परिचय भेल । आब अपन परिचय देल जाओ" ।

रतन बाजल, "हम रतन भेलहुँ । एहि ठाम एकटा प्राइवेट कम्पनी मे काज करैत छी आ डेरा पाटलीपुत्रा मे अछि ।''

रामदयालजी बजलाह, "तखन तँ अगले-बगल छी" ।

रतन बजलाह, "जी !''

रामदयालजी, "गाम कत' भेलैक ।''

"राधेपुर," रतन बाजल ।

रामदयालजी बजलाह, "राधेपुर...राधेपुरक तँ हमर एकटा संगी छथि । ओहो पाटलीपुत्रा मे रहैत छथि । हुनकर नाम थिकैन्ह, अमिरकान्तजी" ।

"जी, हम हुनके बालक छी", रतन बजलाह ।

रामदयालजी बजलाह, "वाह....वाह.... तखन तँ अहाँ चीन्हल-जानल लोक छी । भोरक टहल' बला मित्र मंडली मे अमिरकान्त जी हमर प्रिय मित्र छथि । हुनक ज्ञानक तँ कोनो सीमे नहि छन्हि । हमरा सबकेँ विभिन्न विषय पर घंटो गप-सप होइत रहैत अछि । कतेक दिन सँ भेट नहि भेलाह अछि । अस्वस्थ छथि वा कतहु गेल छथि ?''

रतन बजलाह, "जी, गाम गेल छथि ।''

"कोनो विशेष प्रयोजन की," रामदयालजी पुछलथिन्ह ।

"जी नहि, बहुत दिन भ' गेल छलनि, गाम गेना । किछु गामक घरेलू कार्य सेहो छलनि, तेँ गेल छथि", रतन कहलथिन्ह ।

रामदयाल जी पुनः पुछलथिन्ह, "कहिआ धरि अओताह ?''

रतन बजलाह, "ई गप्प हम कोना कहि सकैत छी । ई तँ ओएह कहि सकैत छथि ।'' तावत नौ बाजि गेल आ वर्षा सेहो बन्न भ' गेलैक । रतन उठि क' विदा भेलाह । रामदयालजी भोजनक बड़ आग्रह कयलथिन, मुदा रतन हुनक प्रस्तावकेँ अस्वीकार क' देलथिन्ह आ बजलाह, "भोजन करबा मे कोनो हर्ज तँ नहि अछि, मुदा डेरा मे जे बनल होयत, से के खायत ? ओकरा फेकब तँ अन्नक अनादर भेलैक ने।'' रतन दुनू हाथ जोड़ि रामदयालजीकेँ अभिवादन कयलन्हि । रामदयालजी बजलाह, "रतनजी एकरा अपनहि घर बूझब । अहाँ कोनो आन लोक नहि छी । अबैत-जाइत रहब" । ओकर बाद रतन जहिआ कहिओ सुकन्याकेँ बस स्टैण्ड मे देखैत छलाह, हुनका स्कूटर पर बैसा क' डेरा धरि पहुँचा दैत छलाह । एहि लेल रतनकेँ कोनो संकोच नहि होइत छलनि आ ने सुकन्यहिकेँ । रामदयालजी हुनका अमिरकान्तजीक विषय मे बुझा देने छलथिन्ह । तेँ सुकन्याकेँ आब रतनसँ कोनो तरहक भय वा संकोच नहि होइत छलनि ।

4.

सुकन्याक जन्म एकटा गरीब परिवार मे भेल छलनि । सुकन्याक पिता राजशेखर जी आ माँ संध्या गरीब होइतहुँ अपना बेटीक लाड़-दुलार मे कोनो अभाव नहि कयने छलाह । अपने ओ सब गरीबीक जीवन व्यतीत क' रहल छलाह, मुदा सुकन्या केँ कहिओ एकर आभास नहि होम' देलनि । हुनका नीक शिक्षा-दीक्षा देलनि आ सुकन्या केँ बी.ए. पास करौलनि । सुकन्याक पिता राजशेखर मटिया मजदूरी करैत छलाह, आ संध्या घरहि मे दोसराक कपड़ा-लत्ता सीबि क' गुजर करैत छलीह । मुदा सुकन्या एहि सबसँ अनभिज्ञ छलीह । सुकन्याकेँ जखन जे चाही, ओकर पूर्ति दुनू प्राणी करैत छलाह । कारण सुकन्या हुनकर एकमात्र संतान छलीह आ सेहो विवाहक पन्द्रह वर्षक बाद भेल छलीह । ओहि संतान प्राप्तिक लेल राजशेखर आ संध्या की की ने कयलनि । कतेको तांत्रिक, बाबा, आ मजारक खाक छनलनि । लोक सब जे कहैत छलनि, तुरंत करैत छलाह । पन्द्रह वर्षक बाद सुकन्याक जन्म भेलनि । परिवार

उत्साहसँ भरि गेल । कतेक कबुला-पाती आ पूजा-पाठ कराओल गेल । सुकन्या जखन बी.ए. मे पढ़ैत छलीह, तखन राजशेखर जी आ संध्या सोच' लगलाह जे सुकन्याक विवाह कोना होयत । ओहि मे बहुत टाका लागत, मुदा टाका कत' सँ आओत ? इएह चिंता दुनू प्राणी केँ सता रहल छलनि । सुकन्याक मोन लायक वर कोना भेटत ? कम सँ कम पाँच लाख टाका तँ अवश्य चाही । हाथ पर पाँचो हजार नहि छलन्हि । दुनू प्राणी भगवाने पर आश्रित छलाह । जेना भगवान करताह, तहिना होयतैक । सुकन्या जाहि कालेज मे पढ़ैत छलीह, ओही कालेज मे कमलेश सेहो पढ़ैत छलाह । कमलेशक बाबूजी रामदयालजी आ माँ रमा देवी सेहो मध्यमे परिवारक लोक छलाह, मुदा राजशेखर जीक अपेक्षा किछु सुभ्यस्त अवश्य छलाह । जीवन-यापन लेल किछु खेती-बारी छलनि जाहि सँ कमलेशक पढ़ाइ आ परिवारक भरण-पोषण क' रहल छलाह । कमलेश एकलौता होयबाक कारणे रामदयालजी आ रमा देवीक आँखिक पुतरी छलाह । कमलेशक माँ बड़ भावुक छलीह । ओ कमलेशक लेल नीक कनियाँक तलाश क' रहल छलीह । ओना तँ ओ कतेको कनियाँकेँ देखने छलीह, मुदा हुनका मनमे जे चित्र बनल छलनि, ओहि अनुरूप केओ नहि भेटैत छलन्हि । एक दिन कमलेश कालेज मे कोनो किताबक लेल पुस्तकालय गेलाह । ओहि ठाम हुनक भेट सुकन्यासँ भेलनि । परिचय नहि रहलाक कारणे दुनू मे कोनो गप-सप तँ नहि भेलनि, मुदा कमलेश सुकन्याक रूप पर मोहित अवश्य भ' गेलाह । ओना तँ कालेज मे कतेको लड़की केँ नित्य देखैत छलाह, मुदा जे आकर्षण सुकन्या मे छलैक से दोसर मे नहि । दोसर लड़की सभ आधुनिकता सँ लैस रहैत छलि आ अपनाकेँ बहुत प्रगतिशील बुझैत छलि । मुदा सुकन्या एकदम सादगी मे रहैत छलीह, आ अकारण ककरो सँ वार्त्तालापो नहि करैत छलीह । हुनक इएह सादगी कमलेश केँ नीक लगलनि । सुकन्या सेहो कमलेशक सरलता आ स्वभाव देखि बड़ प्रभावित भेलीह, मुदा कोनो परिचय नहि रहलाक कारण संकोच वश केओ एक-दोसरसँ गप-सप नहि कयलनि । ओहि दिन सँ प्रायः नित्य कमलेश पुस्तकालय पहुँच' लगलाह, खास क' ओही समय मे जखन सुकन्या सेहो रहैत छलीह । कमलेश एक-दूटा

किताब ल' क' चल अबैत छलाह । कनखी सँ दुनू एक-दोसरकेँ देखि लैत छलाह । एक दिन ओही कालेजक छात्र रंजन सुकन्या पर किछु अपशब्दक प्रहार कयलक । रंजन कालेजक बदनाम छात्र छल आ एहि तरहक कुकृत्य ओ प्रायः करैत रहैत छल । एहि लेल ओकरा कतेको बेर कालेजसँ दण्डित कयल गेल छलैक, मुदा ओ अपन आदतिसँ बाज नहि आयल छल । रंजन बहुत पैघ बापक बेटा छल । मक्कारी ओकरा नस-नस मे समायल छलैक । ओकर अपशब्द पर सुकन्या ध्यान नहि देलनि, जेना कि ओ किछु सुननहि ने होथि । ओ किछु नहि बजलीह । ओ चुपचाप ओहि ठामसँ चलि गेलीह, मुदा ई व्यवहार कमलेशकेँ नीक नहि लगलैक । ओकरा भेलैक जेना रंजन सुकन्या पर नहि, हमरा पर प्रहार कयलक अछि । ओ तिलमिला गेल आ रंजनकेँ नीक-बेजाय कह' लागल । दुनूमे झगड़ा भ' गेलैक । रंजनक संग आर किछु लोक छलैक । ओ सब कमलेश पर आक्रमण करैत, ताहिसँ पूर्व एकटा शिक्षक आबि गेलाह । ओ दुनूक झगड़ा छोड़ा देलथिन आ एकर सूचना प्राचार्य महोदयकेँ द' देलथिन । प्राचार्य महोदय दुनू केँ बजौलनि आ दुनूक बयान लेलनि । ओ शिक्षक जे एहि झगड़ाक प्रत्यक्षदर्शी छलाह, ओहो अपन बयान देलथिन । रंजन दोषी करार देल गेल आ प्राचार्य महोदय रंजनकेँ कालेजसँ निकालबाक आदेश निर्गत क' देलन्हि । पुनः कमलेशक अनुरोध पर रंजनकेँ माफ क' देल गेलैक आ ओहि आदेश केँ निरस्त सेहो । सुकन्या ओहि घटनासँ बड़ प्रभावित भेलीह आ कमलेशक प्रति हुनका हृदयमे श्रद्धा आर बढ़ि गेलनि । ओ कमलेशक भेट क' हुनका धन्यवाद देब' चाहैत छलीह । तीन-चारि दिनक बाद पुनः कमलेश आ सुकन्याक भेट पुस्तकालयमे भेल ।

सुकन्या बजलीह, "कमलेश जी, हमरा लेल जे अहाँ रंजनसँ झगड़ा कयलहुँ, से नीक नहि कयलहुँ ।''

"हम उचित कयलहुँ वा अनुचित, ताहिसँ अहाँकेँ कोन प्रयोजन । हम मानव थिकहुँ आ मानवताक रक्षा करब हमर कर्त्तव्य अछि । अमानवीय व्यवहार हम पसिन्न नहि करैत छी । एहि लेल हमरा जे मूल्य चुकाब' पड़त, पाछाँ नहि हटब", कमलेश बाजल ।

सुकन्या बजलीह, "ओ कतेक गोटे छल आ अहाँ एसकर । अहाँकेँ किछु भ'ओ तँ सकैत छल । ओ सब सही लोक नहि अछि । ओकरा सबकेँ पढ़ाइ-लिखाइसँ थोड़े मतलब छैक ? ओ सब तँ मात्र गुण्डा-गर्दी आ छेड़खानी करबाक लेल कालेज धयने अछि ।''

कमलेश बाजल, "अधलाह कार्यक विरोध होयबाक चाही । अन्यथा अधलाह कयनिहारक मन आर बढ़ि जयतैक । एक हजार लोकक बीच एकटा गुण्डा अपन गुण्डा-गर्दी क' क' चल जाइत अछि आ सब मुँह तकिते रहि जाइत अछि । गलती, गलती छैक, ओकरा कखनहुँ प्रोत्साहन नहि देबाक चाही ।''

"सामान्यतया लोक उलझनमे नहि पड़' चाहैत अछि । खास क' दोसराक लेल के झंझट बेसाहैत अछि", सुकन्या बाजल छलीह ।

कमलेश बाजल, "मानि लिअ', अहाँक स्थान पर जँ हमर बहिन रहितथि, तँ की हमर चुप रहब उचित होइत ।''

"नहि, से तँ नहि होइत," सुकन्या बजलीह ।

कमलेश पुछलकन्हि, 'एतेक गप्प भ' गेल, मुदा एखन धरि अहाँक नाम नहि बुझि सकलहुँ । की नाम भेल अहाँक आ कथी मे पढ़ैत छी ।''

सुकन्या बजलीह, "हमर नाम सुकन्या थीक आ बी.ए. फाइनलमे पढ़ैत छी" ।

कमलेश बाजल, "हमहू तँ बी.ए. फाइनल मे पढ़ैत छी । कोनो तरहक दिक्कत होअय, तँ निःसंकोच कहब ।'' ओहि दिनसँ कमलेश आ सुकन्याकेँ विशेष भेट-घाँट होब' लागल । दुनू एक दोसर सँ भीतरे-भीतर प्रेम कर' लगलाह, मुदा खुलि क' केओ नहि बजैत छलाह । सुकन्या आ कमलेश साइकिलसँ कालेज जाइत छलाह । एक दिन कालेजसँ अयबा काल सुकन्याक साइकिल खराब भ' गेलनि । ओ पयरे साइकिल गुरकाबैत आबि रहल छलीह । मन मे अंदेशा होइत छलनि, कदाचित् साइकिल ठीक नहि भेल तँ डेरा जयबामे बहुत देरी भ' सकैत अछि । काल्हि पुनः कोना आयब ? काल्हि हुनका आठे बजे सँ क्लास छलनि । मन मे गुन-धुन

करिते छलीह कि पाछाँसँ आवाज आयल, "सुकन्या"...। सुकन्या घुरि क' पाछाँ देखलनि, कमलेश आबि रहल छथि । नजदीक अयला पर कमलेश साइकिलसँ उतरि क' पुछलकन्हि, "किएक अपस्याँत छी, की भेल ?''

सुकन्या, "देखू ने, बाटे मे साइकिल खराब भ' गेल ।''

कमलेश, "की, हमरा साइकिल पर जायब ?''

सुकन्या, "आ अहाँ की करब ?''

कमलेश, "हम अहिना गुरकाबैत चल आयब ।''

सुकन्या, "नहि, नहि, से ठीक नहि होयत । पुनः काल्हि आठ बजे कोना आयब ?''

कमलेश, "चलू, तखन हमहूँ अहींक संगे चलैत छी ।'' कमलेश आ सुकन्या दुनू गोटे पयरे-पयरे चलि देलन्हि । किछु दूर गेलाक बाद एकटा साइकिलक दुकान भेटल जाहि ठाम मरम्मति सेहो होइत छलैक । सुकन्या साइकिल ठीक करबाक लेल द' देलथिन आ मिस्त्री सँ पुछलथिन, "कतेक समय लागत ।''

मिस्त्री, "कम सँ कम एक घंटा ।''

सुकन्या, "एक घंटा.....?''

मिस्त्री, "जी, एक घंटा । ओहिसँ कममे नहि भ' सकत । कहुना क' बना देब आ फेर खराब भ' जायत, तँ अहाँ सभक कोन ठेकान, कान-कपार फोरि देब । विद्यार्थी आ वानरक कोनो ठेकान नहि, जे कखन कोमहर हुलत । तेँ नीक जकाँ बनयबामे एक घंटा लागत ।'' सुकन्या सोचि रहल छलीह जे आइ तँ राति भ' जायत, मुदा संतोष छलनि, किएक तँ संग मे कमलेश छलथिन्ह । ओ कमलेशक दिस देलखनि । कमलेश सेहो इशारा कयलकनि, जे द' दिऔक । दोसर कोनो उपायो तँ नहि अछि । सुकन्या साइकिल छोड़ि देलनि ।

मिस्त्री बाजल, "अहाँ सब एक घंटामे घुमि-फिरि क' आउ, वा कोनो आर काज हो तँ कयने आऊ । हम साइकिल बना क' रखैत छी ।''

कमलेश, "काज तँ कोनो नहि अछि ।''

मिस्त्री, "तखन पार्कसँ घुमि-फिरि आउ ।''

कमलेश, "कत' अछि पार्क ?''

मिस्त्री, "इएह दहिना हाथ दिस, मात्र तीन-चारि मिनट केर बाद छैक ।''

कमलेश, "ठीक छै, अबैत छी ।''

कमलेश सुकन्याक संग पार्क चल जाइत छथि । दुनूकेँ कतेक दिनसँ एहि अवसरक प्रतीक्षा छलनि जे एकान्त पाबि किछु आंतरिक गप्प करी, मुदा कालेज आ पुस्तकालय मे से सम्भव नहि छल । ओहि ठाम तँ मात्र हाल-चाल, एहि सँ बेसी नहि । ओकरो सब केओ तिल के तार बना सकैत अछि । कमलेश ओहि मिस्त्री आ साइकिल दुनू केँ धन्यवाद करैत अछि, जकरा कारणे ई अवसर भेटल छैक । पार्क एखन पूर्ण रूप सँ तैयार नहि भेल छलैक । एखन फूल सब लगौले जा रहल छलैक । रंग-बिरही फूल, अनेको प्रकारक पौधा, झरना आ झूला सभक प्रस्ताव छलैक । तेँ एखन ओहि मे बेसी लोक नहि छलैक । इहो सब एकटा बेंच पर बैसि गेलाह ।

कमलेश, "सुकन्या, अन्यथा नहि ली, तँ एकटा बात पुछू ?''

सुकन्या, "पूछू ने, की पुछबाक अछि ।''

कमलेश, "पता नहि, आइ-काल्हि हमरा की भ' गेल अछि ।''

सुकन्या, "की भ' गेल अछि ?''

कमलेश, "जाहि दिन अहाँकेँ नहि देखैत छी, ओहि दिन किछु नीके नहि लगैत अछि । लगैत अछि जेना कतहु किछु हेरा गेल हो ।''

सुकन्या, "कमलेशजी, हमरो स्थिति किछु एहने सन अछि । हम तँ कतेक दिनसँ सोचि रहल छलहुँ जे एकान्तमे भेटब तँ मनक बात कहब ।''

कमलेश, "हमहूँ तँ एही प्रत्याशामे छलहुँ । जँ अहाँक साइकिल खराब नहि होइत, तँ आइयो ई अवसर नहिए भेटैत ।''

सुकन्या, "से तँ सत्ये कहल, मुदा आइ ने साइकिलक बहन्ना भेटि गेल । काल्हिसँ कोन बहन्ना भेटत ?''

कमलेश, "काल्हि देखल जयतैक । हमरा बुझने तँ गप-सप करबाक लेल इएह पार्क उत्तम रहत । एहि ठाम एखन लोको कम रहैत अछि आ कालेजक बाटे मे पड़ैत अछि ।''

सुकन्या, "ठीके रहत" ।

दुनू गोटे बराबरि पार्क मे आबि घंटो गप-सप करैत छलीह । प्रेम जखन बढ़ैत छैक तँ बाढ़िक जल जकाँ सब आरि-धूरकेँ तोड़ि दैत छैक । ओ ने जाति-पाति देखैत अछि, आ ने धर्म-सम्प्रदाय । किछु एहने स्थिति कमलेश आ सुकन्याक सेहो छलनि ।

सुकन्या, "कमलेश जी, एना कतेक दिन चलतैक ।''

कमलेश, "आब तँ किछु ने किछु करहि पड़त । किएक तँ आब रिजल्ट बहरायत । अहाँ अपना घर जायब आ हम अपना घर । भेटो भ' सकत वा नहि ।''

सुकन्या, "तेँ ने कहैत छी, जल्दी एहि विषय मे किछु करू । अहाँक माँ-बाबूजी एकरा लेल तैयार होयताह की नहि, से तँ अहीं ने कहि सकैत छी ।''

कमलेश, "हम तँ अपना माँ-बाबूजी केँ मना लेब । ओ सभ एतेक भावुक छथि, जे नहि, नहि कहि सकैत छथि । अहाँक माँ-बाबूजी की करताह, से ने कहू ।''

सुकन्या, "हमहूँ अपना माँ-बाबूजी केँ मना लेब । कहू तँ काल्हिये अहाँक माँ-बाबूजीसँ गप्प करबाक लेल पठबियन्हि ।''

कमलेश, "नहि, नहि, एखन नहि ।''

सुकन्या, "से किएक ! एखन की भेलैक अछि ?''

कमलेश, "एहि लेल पहिने हमरा माहौल तैयार कर' पड़त, आ माहौल तैयार भ' गेने हमरा बेसी मेहनति नहि कर' पड़त ।''

सुकन्या, "तँ तैयार करू माहौल, मुदा जे करब से जल्दीये करु ।''

कमलेश, "माहौल एसकर थोड़हि तैयार होयत । ओहि मे अहूँक सहयोगक अपेक्षा अछि । अहाँ जँ सहयोग करब, तँ बात जल्दी बनि सकैत अछि ।''

सुकन्या, "हमरासँ कोन तरहक सहयोगक अपेक्षा रखैत छी" ।

कमलेश, "एकटा नाटक कर' पड़त ।''

सुकन्या, "नाटक...?''

कमलेश, "जी हँ, नाटक ।''

सुकन्या, "हम किछु बुझलहुँ नहि ?''

कमलेश, "कालेज मे प्रत्येक वर्ष, अन्तिम वर्षक छात्र-छात्राक बिदाइ केर अवसर पर नाटकक आयोजन कयल जाइत अछि । अहू बेर नाटक भ' रहल अछि ।''

सुकन्या, "से तँ हमरो बूझल अछि ।''

कमलेश, "हम चाहैत छी, ओहि नाटक मे हम आ अहाँ पति-पत्नीक रूप मे भाग ली ।''

सुकन्या, "नहि, नहि, ई सब हमरासँ नहि होयत । हम ई सब नहि क' सकैत छी । हमरा लाज़ नहि होयत । काल्हियेसँ सहेली सब खिसिआयब शुरू क' देत । हमर बाटो चलब मुस्किल भ' जायत" ।

कमलेश, "ई तँ नाटक थिकैक । नाटक माने कलाक प्रदर्शन । एहिसँ लोक बजबा-भुकबा मे फर्रोस भ' जाइत अछि । ककरो सोझाँ कोनहु गप्प बेखटक बाजि सकैत अछि । एहिसँ थोड़हि केओ पति-पत्नी भ' जाइत अछि । ई तँ मात्र दू घंटाक गप्प अछि । जाधरि मंच पर रहब, ओतबहि काल धरि । दोसर गप्प जे हम दुनू तँ पति-पत्नी बन' चाहिते छी । तखन संकोच कोन बातक । एहि सँ हमर माँ बड़ संतुष्ट होयतीह आ हमर काज आर आसान भ' जायत ।''

सुकन्या, "हमरा ई ठीक नहि बुझाइत अछि । एकरा लेल हमरा माँ-बाबूजी सँ अनुमति लेब' पड़त ।''

कमलेश, "चलु, हमहूँ चलैत छी ।''

सुकन्या, "अहाँ कत' जायब ?''

कमलेश, "अहींक ओहिठाम । अनुमति सेहो प्राप्त भ' जायत आ अहाँक माँ-बाबूजीक दर्शन सेहो ।''

सुकन्या, "जी नहि, अहाँक जायब उचित नहि होयत ।''

कमलेश, "से किएक ?''

सुकन्या, "एहि लेल जे अनुमति प्राप्त करबाक लेल हम सक्षम छी । दोसर गप्प भ' सकैत अछि जे अहाँ कें संग रहने माँ-बाबूजीकें कोनो बातक आशंका ने भ' जान्हि" ।

कमलेश, "तखन हमरा संग बहाना बनयलहुँ की ?''

सुकन्या, "जी नहि, बहाना नहि बनयलहुँ । एक बेर सूचित करब आवश्यक अछि आ उमेद अछि जे अनुमति भेटि जायत ।''

कमलेश, "आ जँ नहि भेटए, तखन ?''

सुकन्या, "तखन तँ मुश्किल अछि" । सुकन्या कें माँ-बाबूजी सँ अनुमति भेटि गेलनि आ नाटकक तैयारी शुरू भ' गेल । नाटकक नाम छलैक "शकुन्तला" । कमलेश दुष्यन्त आ सुकन्या शकुन्तलाक भूमिका मे छलीह । नाटकक मंचन बहुत सुन्नर भेल । लागै छल वास्तबिक रुप सँ शकुंतला आ दुष्यंत आबि गेल होथि । नाटक देखि दर्शक मंत्र मुग्ध भ' गेलाह । सब केओ नाटकक बेस सराहना कयलनि । कमलेश आ सुकन्या नीक अदाकारीक लेल पुरस्कृत सेहो कयल गेलाह । नाटक देखबाक लेल कमलेश आ सुकन्याक माँ-बाबूजी सेहो आयल छलाह । नाटक देखबाक क्रम मे कमलेशक माँ तँ एतेक आत्मविभोर भ' गेलीह, जे ओ नाटक कें सत्य घटना बुझि कान' लगलीह । ओ बजलीह, "ओह ! हमरो पुतोहु एहने होइतथि ।'' जखन कमलेश डेरा पहुँचलाह, तँ

माय कंचन देवी पुछलथिन्ह, ''बौआ ! एकसरे आयल छी ? कनियाँ कत' गेलीह ।'' "कनियाँ, कोन कनियाँ.......?'' कमलेश अकचकाइत बजलाह ।

कंचन, "ओएह कनियाँ, जिनका संगे अहाँ कालेज मे कनेक काल पहिने छलहु ।''

कमलेश, हँसैत "अच्छे, ओ कनियाँ, अहाँ जखन कहब, तखन आनि देब । बाजू काल्हि आनि दिअ ।''

रामदयालजी बजलाह, "ई जखनसँ नाटक देखलनि, तखनहिसँ हल्ला कयने छथि । कतबो कहैत छियैन्हि, ओ नाटक छलैक, मुदा ई मानितहि नहि छथि । इहो नहि सोचैत छथि, जे ओ के छथि, के नहि । कमलेश ! एकटा गप्प हमरा कहू तँ ।''

कमलेश, "की बाबूजी ?"

रामदयालजी, "ओ बालिका के थिकीह ? हुनका अहाँ जनैत छियैन्हि ?''

कमलेश, बात बदलैत "हुनके नाम सुकन्या छन्हि, आ हमरे संगे कालेजमे पढ़ैत छथि । एहिसँ बेसी हमरा नहि बूझल अछि ।"

रामदयालजी, "अहाँक संगे नाटक खेलयलीह । कम सँ कम दू-चारि दिन रिहर्सलमे अवश्य आयल होयतीह आ अहाँ हुनका विषय मे किछु नहि जनैत छी । ई कोनादनि बुझा रहल अछि ।"

कमलेश, "कहलहुँ ने बाबूजी ! हम सब सहपाठी छी । सब मिलि क' नाटक खेलयलहुँ । हम हुनका विषयमे जानकारी ल' क' की करब ? एक मासक बाद रिजल्ट होयत आ तकर बाद के कत' जायत, पतो नहि चलत ।"

रामदयाल जी, "मुदा हमरा तँ जानकारी चाही ।"

कमलेश, "अहाँ कें की जानकारी चाही ?"

रामदयालजी, "इएह जे ओ ककर बेटी थिकीह आ कत' रहैत छथि ?"

कमलेश, "ठीक छै, हम काल्हि पता लगा क' कहैत छी ।"

कमलेश देखलन्हि जे लोहा एखन गरम अछि । एहि पर तुरंत चोट करबाक आवश्यकता छैक । बाबूजी तँ मात्र माँ केर संतुष्टिक लेल काज क' रहल छथि, मुदा माँ केर आँखि मे सुकन्या एकदम समा गेल छथि । एखनहि सब किछु कयल जा सकैत अछि । ओ पहिने कालेज आ फेर पार्क मे सुकन्याक संग एहि विषय पर विस्तृत चर्चा कयलनि आ हुनका सब वस्तुक जानकारी देलनि । तदनुसार प्रातःकाल राजशेखर आ संध्या दुनू गोटे रामदयालजीक ओहि ठाम अयलाह । रामदयालजी हुनका सबकेँ आदर पूर्वक बैसौलनि आ पुछलथिन, "अपनेकेँ चिन्हल नहि, अपने के थिकहुँ आ कोन प्रयोजनसँ आयल छी ?"

राजशेखर, "हम राजशेखर, सुकन्या हमर पुत्री छथि आ संध्या दिश इशारा करैत, ई ओकर माँ......। तावत् कमलेशक माँ कंचन आबि क' संध्याकेँ भीतर ल' गेलीह आ प्रेमपूर्वक पुछलथिन्ह, "सुकन्या अहीँक बेटी छथि ?"

संध्या, "जी ।"

कंचन, "अहाँ बड़ भाग्यशाली छी जे सुकन्या सनक बेटी पओलहुँ । ओ तँ साक्षात् लक्ष्मी छथि । जेहने रूप, तेहने स्वभाव आ तेहने गप-सप करबाक मन मोहक ढंग । एक क्षणमे ककरो मोहित क' सकैत छथि । हम तँ काल्हिये नाटक मे देखि मोहित भ' गेलहुँ आ भगवानसँ कहैत छलहुँ जे हमरो ओहने पुतोहु देब" ।

संध्या, "ओहने की ओएह ?"

कंचन, "जँ ओएह, तखन तँ अति उत्तम ।"

संध्या, "अहाँकेँ बूझल अछि जे सुकन्या आ कमलेश एक दोसरसँ प्रेम करैत छथि ?"

कंचन, "हमरा ई गप्प बूझल तँ नहि अछि, मुदा जँ अहाँ कहि रहल छी तँ झूठ थोड़े होयतैक । हमरा तँ नाटके देखि क' आभास भ' गेल छल, मुदा कमलेश गाले नहि लाग' देलक ।"

संध्या, "हमहूँ पहिनेसँ नहि जनैत छलहुँ । नाटक देखलाक बादे जखन हम सुकन्यासँ पूछलहुँ, तँ पता लागल । पहिने तँ ओहो नाकर-नूकर कयलक, मुदा बादमे गछि लेलक" ।

कंचन, "तखन आगाँ की विचार ?"

संध्या, "हम चाहैत छी जे काल्हुक नाटक सत्यतामे परिणत भ' जाय आ सुकन्या-कमलेश वैवाहिक गाँठमे बन्हा जाथि ।"

कंचन, "अहाँ तँ हमरा मुँहक गप्प छिनि लेलहुँ । हम सब स्वयं एहि लेल अहाँक ओहिठाम जाइबला छलहुँ । मुदा अहीं सब आगाँ भ' गेलहुँ ।"

संध्या, "एहिमे एकटा कठिनता आर अछि ?"

कंचन, "से की ?"

संध्या, "हम सब गरीब लोक छी । कहुना क' अपन जीवन निर्वाह क' लैत छी । हमरा सुकन्याकेँ पढ़यबाक ओकाति नहि छल, मुदा सऽख छल, तेँ कहुना क' ई काज कयलहुँ । विवाहक खर्चक भार उठयबाक सामर्थ हमरामे नहि अछि । अहाँक उचित स्वागत-सत्कारोक जोगरक हम नहि छी । तेँ विवाह जँ कोनो मंदिर मे.....।"

रामदयालजी बात काटैत, "हमहीँ कोन पैघ लोक छी । हमहूँ तँ सैह छी । तखन हम अहाँक विचारसँ बड़ प्रभावित भेलहुँ किएक तँ अहाँ अपना स्थितिसँ हमरा अवगत करा देलहुँ । हमरा केवल पुतोहु चाही, से अहाँ मंदिर मे दी वा कतहु अन्यत्र । एहिसँ बेसी किछु नहि चाही । जे केओ बेटाक विवाहमे तिलक लैत अछि, ओ ओही कसाइ केर समान अछि जे गाय के मारि ओकर मांस बेचैत अछि । जे केओ बेटाकेँ बेचैत छथि, हुनका पितरकेँ हुनकर तर्पण कयल जलो पैठ नहि होइत छन्हि । ई बुझनाहर कतेक गोटे छथि । सब केओ बाहरी आडम्बरक चकचोन्ही मे अन्हरायल छथि" ।

राजशेखरजी, "तखन हमरा सबके की आदेश ?"

रामदयालजी, "आदेश नहि निवेदन जे अहाँ सब काल्हि छः बजे संध्याकाल बड़की पोखिरि परहक शिव मंदिर पर आबि जाउ । ओतहि मंदिर मे वैवाहिक कार्य सम्पन्न होयत ।"

दोसर दिन संध्याकाल राजशेखर, संध्या आ सुकन्या ओहि मंदिर पर पहुँचि गेलीह । ओहि ठाम मंदिर खूब नीक जकाँ सजाओल गेल छल । सौंसे पोखरिक कमलक फूल जेना सोहागक सेज सजौने छलैक । पोखरिमे पुरइनिक पात पर जलक बुंद लगैत छल, जेना मोती छिड़िआयल हो । एहि सभक बीच शहनाइक मद्धिम आवाज गुंजि रहल छलैक । वातावरण एकदम मनोरम लागि रहल छलैक । वर-कनियाँ कमलेश आ सुकन्या कें अलग कोठली मे सजाओल गेल । नियत समय पर महादेवक समक्ष कमलेश आ सुकन्या एक दोसरकें माल्यार्पण करैत जीवन-संगीक रूप मे आबद्ध भ' गेलीह । एहि विवाह सँ दुनू परिवार अत्यंत उत्साहित छल ।

5.

एक दिन छुट्टीक दिन छलैक । मुकेश आ सुकेशकें कोनो प्रतियोगिता परीक्षा देम" कलकत्ता जयबाक छलन्हि । ओहि दिन रतनकें सेहो डेरामे कोनो विशेष कार्य नहि छलन्हि । ओ एक दिन पूर्व सायंकाल सुकन्यासँ पुछने छलाह, "सुकन्या काल्हि तँ आफिस बन्न होयत । काल्हि अहाँक की प्रोग्राम अछि ?'

सुकन्या, "ओएह घरक काज । साप्ताहिक गर्दा साफ करब, जंगल-झाड़ साफ करब, कपड़ा-लत्ता साफ करब, इएह सब तँ काज अछि, आर की रहत ।"

रतन, "आर तँ केओ कयनिहारो नहि अछि । बाबूजी बूढ़े भेलाह । मुदा ई सब काज तँ सबेरे मे ने करब । संध्याकाल की करब ? कतहु जयबाक नहि ने अछि ?"

सुकन्या, "नहि, कतौ जयबाक तँ नहि अछि से किएक ?''

रतन, "हमहूँ काल्हि फुर्सतिमे छलहुँ । सोचैत छलहुँ जे दुनू गोटे पार्क चलितहुँ ।''

सुकन्या, "कखन ।''

रतन, "संध्याकाल करीब छः बजे ।"

सुकन्या, "ठीक छै, हम प्रयास करब ।"

रतन, ''मतलब नहिओ चलि सकैत छी ?"

सुकन्या, "से गप्प नहि छैक । कहिओ साँझ क' घरसँ नहि बहरयलहुँ अछि । तें कनेक बाबूजीसँ पूछ' पड़त ।"

रतन, "आ बाबूजी जँ नहि कहि देथि, तखन.....?"

सुकन्या, "ओना बाबूजी अहाँक संग जयबा सँ मना नहि करताह । तथापि एक बेर पुछब आवश्यक अछि ।"

रतन, "ठीक छै, जँ आदेश भेटि जायत, तँ ठीक छः बजे तैयार भ' क' बाहरमे ठाढ़ि रहब । हम संग क' लेब" । रतनक झुकाओ सुकन्या दिश बढ़ि रहल छलैक । ओ अपनाकें बहुत रोकबाक कोशिश करैत छल, मुदा ओकर मन नहि मानैत छलैक । सुकन्या विधवा होइतहुँ बड़ सुन्नर छलीह । उज्जर परिधान, शृंगार लेश मात्र नहि, गोर देह, उन्नत उरोज, कटिसँ स्पर्श करैत केशराशि रतनकें बड़ प्रभाबित करैत छलनि । जखनसँ ओ सुकन्याकें देखलनि अछि आ रामदयाल जी हुनका यदा-कदा अयबाक लेल आमंत्रित कयलथिन अछि, ओ अपना कें रोकबामे सफल नहि भ' सकल छथि । जे सुकन्या एहि परिधानमे बिना शृंगारक एतेक सुन्नरि लागि रहल छथि हुनका जँ शृंगार क' सजाओल जायत, आँखि मे काजर आ ठोर पर लाली लगाओल जायत, तँ निश्चित ओ कोनो अप्सरा कें मात क' सकैत छथि । ई सब सोचि रतन केर मन निरंकुश भ' जाइत छलनि, मुदा बेटाक संकोचसँ मन मारि क' रहि जाइत छलाह । तें ओ एहन दिनक चुनाव कयलनि, जाहि दिन बेटा शहरसँ बाहर छन्हि । सुकन्या रामदयालजीकें कहलथिन, "बाबूजी, काल्हि साँझमे एकटा सहेलीक ओहि ठाम जयबाक अछि । जँ अपनेक आदेश हो तँ भ' आबी" । हुनका रतन केर नाम कहबा मे संकोच भेलनि । यद्यपि रतन केर नाम पर सेहो रामदयालजी नहि, नहि कहि सकैत छलाह । ओ तँ स्वयं चाहैत छलाह, जे रतन आ सुकन्यामे जतेक मेल-जोल बढ़ए ओतेक नीक आ सेहो तखन, जखन सुनलनि जे रतन विधुर भ' गेल छथि ।

रामदयालजी पुछलथिन, "कखन जायब आ कखन धरि आयब ? यावत् अहाँ नहि आयब, हमर मन टँगले रहत । दिन-दुनियाँ ठीक नहि छैक ।"

सुकन्या, "हँ, हँ, हम छः बजे जायब आ आठ, साढ़े आठ बजे धरि आपस आबि जायब ।"

रामदयालजी, ''ठीक छै जाउ । आइ सुकन्याक मुँह पर जे चमक रामदयालजी देखलनि, ताहिसँ आश्चर्यचकित रहि गेलाह । बहुत दिनक बाद ओ ई चमक देखने छलाह । सम्भवतः सुकन्याक विधवा होयबा सँ पूर्वहि एहन चमक देखने रहथि । ओकर बाद देखितथि कोना ? विधवा जीवन कोनो जीवन थीक । ओकरा जीवाक की अर्थ अछि । ओकरासँ नीक तँ एकटा बंधुआ मजदूर अछि । ओहो मजदूरी कयलाक बाद स्वतंत्र रहैत अछि, मुदा एकटा विधवा ? ने मरिते अछि आ ने जिविते अछि । ने शृंगार क' सकैत अछि आ ने ढंगक कपड़ा पहिरि सकैत अछि । ने ककरोसँ हँसी-विनोद क' सकैत अछि आ ने नीक-निकुत खा-पीबि सकैत अछि । एक तरहेँ बुझू तँ विधवा शब्दे अभिशाप थिक । ओकरा अभिशापित हम अहाँ बना देने छियैक, हमर समाज बना देने छैक । जखन विधुरक विवाह भ' सकैत छैक, तँ विधवाक विवाह किएक नहि ?

दोसर दिन सुकन्या ठीक छः बजे तैयार भ' क' बाहर आबि गेलीह । किछुए क्षणक बाद रतन सेहो स्कूटरसँ पहुँचि गेलाह । दुनू गोटे स्कूटर पर बैसि पार्कमे गेलाह । ओहि ठाम दुनू गोटेकेँ आपस मे खूब गप-सप भेलनि । रतनकेँ तँ बूझल छलनि जे सुकन्या विधवा छथि, मुदा सुकन्याकेँ नहि बूझल छलनि जे रतन विधुर छथि । ओना ओ ककरो मुँहे सुनने रहथि । आइ रतन स्वयं स्पष्ट कयलथिन । दुनू एक दोसराक प्रति सहानुभूति प्रकट कयलनि । दुनूक आँखि भिजि गेलनि । एक-दोसरा केँ सांत्वना दैत सुकन्या पूछलथिन, "भविष्यमे अहाँकेँ दोसर विवाहक योजना अछि वा नहि ?''

रतन, "एखन धरि एहि विषय पर गम्भीरता पूर्वक विचार नहि कयल अछि ।"

सुकन्या, "आब कहिया विचार करब ? जखन बूढ़ भ' जायब तखन ?''

रतन, "नहि, नहि, से बात नहि छैक । हमरा संग किछु लाचारी अछि । मन तँ चाहैत अछि, मुदा कर्त्तव्य रोकैत अछि । हम नहि चाहैत छी जे मुकेश-सुकेशकेँ सतमाय होन्हि । सतमायक नामेसँ हमर रोंइयाँ ठाढ़ भ' जाइत अछि । दोसर गप्प जे एखन धरि हम सुनीताकेँ बिसरि नहि पओलहुँ अछि । जतेक प्रेम हमरा सुनीता देलन्हि, से दोसर देत वा नहि । इएह सोचि क' हम कोनो निर्णय नहि ल' पाबि रहल छी ।"

सुकन्या, "जखन अपने विवाह करब तँ सतमाय मुकेश-सुकेश केँ होयबे करथिन्ह । जहाँ धरि प्रेमक प्रश्न छैक, से तँ विवाहक बादे ने बुझबामे आओत । भ' सकैत अछि जे ओहिसँ बेसीयो भेटए । ई पूर्वानुमान करब उचित नहि ।''

रतन, "एही आशंकासँ मन डेराइत रहैत अछि । सतमायक कुप्रभावसँ बच्चाकेँ बचायब कठिन छैक । ओहिसँ ओकर बुद्धि कुंठित भ' जाइत छैक । ओकर विकास अवरुद्ध भ' जाइत छैक आ बापो-बेटाक बीच एहन लागैत छैक, जेना पुश्तैनी दुश्मनी होइक ।"

सुकन्या, "बहुत हद धरि अपनेक ई आशंका उचित अछि, मुदा सब सतमाय एके रंगक तँ नहि होइत छथि । किछु नीको होइत छथि । तेँ सबकेँ एके लाड़निसँ लाड़ब उचित नहि । हँ, तखन एकटा गप्प छैक, जे नीकक संख्या कम होइत छैक ।"

रतन, "सब केओ एके रंगक तँ ठीके नहि होइत छथि, मुदा हम तँ एकर भुक्तभोगी छी । हमरा परिवारमे चालीस-बियालीस गोटे छथि, मुदा एही सतमायक चक्करमे सब रंड-नंड भेल छथि । ककरो सँ ककरो मतलबे नहि छनि । सब केओ अपने आगिये-पानियें खेपि रहल छथि । अछैते चीजे सब काहि काटि रहल छथि ।"

सुकन्या, "तँ की, अहूँकेँ सतमाय छलीह ?''

रतन, "नहि, नहि, हमरा सतमाय नहि छलीह । हमरा बाबूजी केँ

सतमाय छलथिन्ह । हमर बाबूजी आ माँ बहुत कष्ट कटलन्हि । ओकर किछु ने किछु असरि तँ हमरो सब पर पड़ल, आ जतेक हमर काकाजी छथि, किनको-किनकोसँ मेल नहि छन्हि । सब केओ एक दोसराक छेद तकबामे व्यस्त रहैत छथि ।"

सुकन्या, "की करबैक, एखन सामाजिक परिवेशे ओहने भ' गेल छैक । सब अपना-अपना स्वार्थमे लिप्त अछि । दोसराक नीक तँ केओ देखिये नहि सकैत अछि । एखन लोक अपना दुःखसँ कम दुःखी अछि आ बेसी दुःखी अछि, दोसराक सुखसँ ।"

रतन, "आब अहाँ अपना विषयमे कहू । अहाँक भविष्यक की योजना अछि ?"

सुकन्या, "हम अपना भविष्यक विषय मे की कहू । हम सब तँ टूटल नैया छी । समाज रूपी हवा जेम्हर बहा क' ल' जायत, चल जायब । जाधरि बाबूजी छथि, हुनक सेवा मे लागल रहैत छी । ओकरा बाद कहि नहि सकैत छी ।"

रतन, "अहाँ अपना विवाहक विषय मे किछु सोचैत छी वा नहि ?"

सुकन्या, "बिल्कुल नहि ।"

रतन, "से किएक ?"

सुकन्या, "जे सम्भव हो, ओहि पर सोचब सार्थक होयत, मुदा जे असम्भव हो, ओहि पर निरर्थक माँथ खपायब उचित नहि ।"

रतन, "असम्भव किएक रहत ? एहेन कोन काज छैक जे आइ-काल्हि नहि भ' सकैत अछि । आब तँ संविधानो मे एकर प्रावधान भ' गेल अछि ।"

सुकन्या, "संविधाान तँ तिलक-दहेज पर सेहो रोक लगौने अछि । तिलक लेब आ देब दुनू जुर्म अछि । ओहिमे सजाक सेहो प्रावधान छैक, मुदा कतेक गोटे तिलक लेब आ देब छोड़लन्हि अछि ? बल्कि आर बढ़िये गेल अछि ।"

रतन, "ओहि मे दुनू पक्ष मिलि जाइत अछि । एहना स्थिति मे कानून की क' सकैत अछि । मुदा जँ केओ विरोध करैत अछि, तँ प्रतिपक्षीकेँ जमानतो करयबा मे नाको दम भ' जाइत छैक ।

सुकन्या, "अपना समाज मे विधवा विवाहक प्रचलन नहि अछि । समाज एहि सम्बन्ध केँ स्वीकार नहि करैत अछि । एहि ढकोसलापन सँ लड़बाक सामर्थ बहुत कम गोटेमे छन्हि । एहन काज नहि करी जे उपहासक केन्द्र बनि जाइ आ जीवन भरि पछताब' पड़ए । तेँ एहि पर मगज खपायब बेकार अछि" ।

रतन, "एहन तँ कतेको दृष्टान्त हमरा लगमे अछि । समाज एकर मान्यता नहि दैत छैक । ओकर मखौल उड़बैत अछि । मुदा ताहि सँ की ? जखन हमरा केओ भोजन नहि देत, दुःख-सुख मे संग नहि देत आ हम कहुना क' अपनहि बलेँ गुजर करब, तँ ओहि समाजकेँ की अधिकार छैक, ककरो मखौल उड़यबाक'' ।

सुकन्या, "मखौल तँ उड़यबे करत । ओकरा अधिकार सँ कोनो मतलब नहि छैक । जे स्वयं अधलाह अछि से दोसराक नीको पर अदखोइ-बदखोइ करैत अछि । अहाँ ककर-ककर मुँह बन्न करबैक ? कतेक सँ झगड़ा करब ।"

रतन, "ककरोसँ झगड़ा करबाक आवश्यकता नहि छैक । अपन कान बन्न क' लेब । मखौल उड़ौनिहार अपनहि पस्त भ' जायत । अपना समाज मे सती प्रथा कतेक भयावह छलैक । जिबैत स्त्रीकेँ पतिक संग धधकैत चिता पर राखि देल जाइत छलैक । कतेको लोक एकर विरोध कयलक । जखन ओकरो अंत भेलैक, तँ एकर किएक नहि होयत ।"

सुकन्या, "से तँ भेलैक ।"

रतन, "आइ अहूँ ओकरहि प्रतिफल थिकहुँ । अन्यथा बलजोरी सती बना देल जइतहुँ । एकरा लेल संघर्ष जरूरी छैक । संघर्ष कयने सब किछु बदलि सकैत छैक । संघर्षमे बहुत दम होइत छैक । जीवनक दोसर नाम संघर्षे तँ थीक । ओ जवाना चल गेलैक, जखन केओ समाजक विरुद्ध

काज करैत छल, तँ ओकर हुक्का-पानि बन्न क' देल जाइत छलैक । कहू तँ, अपन समाज अंतर्जातीय विवाहक मान्यता दैत छैक ?"

सुकन्या, "नहि, से तँ नहि दैत छैक ।"

रतन, "मुदा ई भ' रहल छैक की नहि ?"

सुकन्या, "खूब भ' रहल छैक ।"

रतन, "समाज ओकर हुक्का-पानि किएक ने बन्न करैत अछि ? एहि लेल जे ओएह व्यक्ति एहि समाज केँ छोड़ि देलक । ओकरा एहन संकीर्ण सोच राख'बला समाजक कोनो परवाहि नहि छैक । ओ ई नहि देखैत अछि जे के की बाजि रहल अछि । ओ मात्र इएह सोचैत अछि जे ओकरा की करबाक छैक ।"

सुकन्या, "से तँ छैक, मुदा एहि लेल साहस सेहो होयबाक चाही ।"

रतन, "साहस लोककेँ अपना स्वाभिमानसँ भेटैत छैक, अपना संकल्प सँ भेटैत छैक । साहस कोनो बनियाँक दुकानसँ नहि कीनल जा सकैत अछि" ।

सुकन्या, "एहिठाम रहि क' ई सब सोचब सम्भव नहि अछि । समाज कतेको तरहक प्रतिबंध लगबैत छैक" ।

रतन, "ई सामाजिक प्रतिबंध तखन छलैक, जखन समाजक आकार छोट छलैक । ओ गाम, पंचायत, थाना आदिमे सिमटल छल । आब एकर आकार बड़ विस्तृत भ' गेल अछि । एकर कार्य क्षेत्र असीमित अछि । तेँ केओ ककरो पर पाबंदी नहि लगा सकैत अछि । लोक वर्षाक जलकेँ आरि बाँन्हि क' रोकि लैत अछि, मुदा बाढ़िक जलकेँ रोकब कठिन होइत छैक ।"

सुकन्या, "बाढ़िक जल जँ रोकल जा सकैत, तँ एतेक नुकसान किएक होइत ? गामक गाम भासि जाइत अछि ।"

रतन, "तहिना हमर सामाजिक क्षेत्र आब वर्षाक जल जकाँ नहि, बाढ़िक जल जकाँ विशाल अछि । एहि ठाम कोनो सामाजिक पाबंदी लागू

नहि होइत छैक । हँ, जे सलाह शिक्षाप्रद हो, जाहि मे विशेष लोकक हित निहित हो, जाहिसँ सामाजिक उत्थान हो, एहन सलाह अवश्य मानबाक चाही । मुदा जाहिमे संकीर्णताक गंध हो, जाहिमे ओछपन हो, जे मानव मूल्यक विपरीत हो, एहन सलाह के कखनो नहि मानबाक चाही" ।

सुकन्या, "इएह तँ फर्क अछि हमरामे आ अहाँमे । अहाँ पुरुष छी । अहाँ समाजसँ लड़ि सकैत छी । हम तँ स्त्री छी, ताहू पर विधवा जकर समाजमे कोनो अस्तित्व नहि । आगाँ-पाछाँ केओ नहि । हम कोना एहि समाजसँ मुकाबला क' सकैत छी । समाजक हाथ मे एकटा तँ अमोघ अस्त्र छैक । ओ ककरो पर लांछना लगा सकैत अछि, ओकरा बदनाम क' सकैत अछि, ओकरा लज्जित क' सकैत अछि । घरसँ नहि बहरयबाक लेल विवश क' सकैत अछि । नारीक तँ लाजे सर्वस्व थीक । लाज आ संकोचक बिना नारीक कोनो अस्तित्वे नहि ।"

रतन, "एकरे नाजायज फायदा तँ ई समाज उठा रहल अछि । आइ राम वनवास के जँ राजनीतिक परिप्रेक्ष्यमे देखिऔक, तँ महारानी कैकेयीक निर्णय कतेक उचित छलन्हि ? जँ रामक वनवास नहि होइत, तँ निशिचरक नाश नहि होइत, रावणक मृत्यु नहि होइत । सम्पूर्ण विश्व रावणक आतंकसँ आतंकित छल । नित्य हजारो नारीक शीलहरण होइत छलैक । हजारो मानव काल केर गालमे जाइत छलाह । कतेको नारीक सोहाग उजरैत छल, ओकर कोड़ सून होइत छल । एकर अंत केवल महारानी कैकेयीक सोच आ निर्णयसँ भेल । रामक सुयश तीनू लोक मे बिख्यात भेल । एहि लेल महारानी कैकेयीकेँ तँ पुरस्कृत होयबाक चाहियनि । मुदा सामाजिक दृष्टिकोणे महारानी कैकेयीक गिनती स्वार्थी, पतिघातिनी, कुलद्रोही आ राष्ट्रद्रोहीमे होइत अछि । सतमायक नाम के कलंकित करैत अछि ? आइओ केओ माय अपना बेटीक नाम कैकेयी नहि रखैत अछि । इएह सामाजिक देन थीक । इएह तँ हमरा समाजक कर्त्तव्य थीक ।"

सुकन्या, "समाजकेँ तँ केवल दोसरेक टेटर सुझैत छैक । अपन टेटर थोड़े केओ देखैत अछि । दुनियाँ कत' सँ कत' जा रहल अछि ।

वैज्ञानिक मंगल ग्रह केर अनुसंधानमे लागल छथि आ हमर समाज इनारक बेंग जकाँ इनारे मे रह' चाहैत अछि ।"

रतन, "बिल्कुल सही कहल अछि अपने । जँ श्रीमती इन्दिरा गाँधी घोघे तर आ कोबरेमे रहितथि, तँ देशक एतेक सशक्त प्रधानमंत्री भ' सकितथि ? तेँ आइ आवश्यकता अछि, संकीर्णतासँ ऊपर उठि देशक मुख्य धारामे अग्रसर होयबाक आ समाजक अंधविश्वास, सँ लड़बाक ।"

समय बहुत भ' गेलाक कारण दुनू गोटे डेराक लेल विदा भ' गेलाह । पार्को लगभग खाली भ' गेल छल । दुनूक मन खूब प्रसन्न छलनि । बहुत दिनक बाद दुनूकेँ एतेक प्रसन्नता भेटल छलनि । रतन सुकन्याकेँ डेरा पर पहुँचा देलथिन । रामदयालजी रतनकेँ देखलनि, मुदा टोकलनि नहि । एहि लेल जे भ' सकैत अछि दुनू लजा ने जाथि ।

रामदयालजी, "कत' एतेक देरी लागि गेल ? हमरा तँ अंदेशा होइत छल । रतनजी कत' भेटि गेलाह ?"

रतन केर नाम सुनितहि सुकन्या सकपका गेलीह । ओ तँ सहेलीक ओहि ठाम जयबाक लेल अनुमति लेने छलीह । पुनः संयमित होइत बजलीह,'' बाबूजी ! सहेलीक ओहि ठाम सँ पयरे अबैत छलहुँ । कोनो सवारी नहि भेटल । ओ सब तँ रोकैत रहए, कहैत छल भोरे चल जायब, मुदा हमहीँ नहि मानल । हम कहलियैक, ''बाबूजीकेँ अंदेशा होयतन्हि, तेँ जायब आवश्यक अछि ।" किछु दूर अयला पर रतनजी भेटि गेलाह । हम तँ हुनका देखबो नहि कयलियन्हि । हम तँ अपना धुनमे अबैत छलहुँ । ओ तँ ओएह देखलनि आ पुछलनि, ''एतेक राति क' एसकरे आ पयरे कत' सँ आबि रहल छी । हम कहलियनि, ''एकटा संगीक ओहि ठाम गेल छलहुँ । कोनो सवारी नहि भेटल, तेँ पयरे जा रहल छी । ओ अपना स्कूटर पर बैसा लेलनि । तेँ शीघ्र आबि गेलहुँ। नहि तँ आर देरी भ' सकैत छल । रामदयाल बाबूकेँ पता लागि गेल छलनि, जे रतन विधुर भ' गेल छथि, आ विवाह करबाक लेल तैयार नहि होइत छथि । ओ इहो बुझैत छलाह, जे सुकन्या हुनका सँ झूठ बाजि रहल छलीह । ओ रतन केर संग कतहु घुमबाक लेल गेल छलीह, मुदा हुनको

दुनूक संग नीक लगलनि । किएक तँ जहियासँ सुकन्याकेँ रतनसँ भेट भेलनि, ताहि दिन सँ हुनक रंग-ढंग, हाव-भाव सबटा बदलि गेलनि । चंचलता बढ़ि गेलनि । पहिने गम्भीर रहैत छलीह । जतबहि पुछथिन, ओतबहि जबाब । कुल मिलाक' रामदयालजी सुकन्या आ रतनक मिलापसँ अति प्रसन्न छलाह । भगवानसँ मनबैत छलाह जे जे भगवान एतेक दूर धरि अनलनि, ओ आगुओ ल' जयताह ।

6.

रामदयालजी जखन भोरे घुमबाक लेल जाइत छलाह, तँ एकटा मित्रसँ जिज्ञासा कयलथिन, "आइ-काल्हि अमिरकान्तबाबूकेँ नहि देखि रहल छियैन्हि । कतहु गेल छथि की ?" ओएह मित्र हुनका कहलथिन्ह, "आब ओ सम्भवतः गामे रहताह । किएक तँ हुनकर पुतोहु नहि रहलनि । एहि ठाम तँ सब केओ मेस् मे भोजन करैत छथि । अमिरकान्तजी बाहरक जलो नहि ग्रहण करैत छथि । तेँ आब ओ गामे ध' लेलनि । रामदयालजीकेँ एहि घटना पर बड़ दुःख भेलनि । ओ किछु दिनक बाद रतनसँ गामक पता ल' क' हुनका गाम गेलाह । अमिरकान्तजी दरबज्जा पर बैसल छलाह । हुनका अगल-बगलमे पाँच-सात गोटे आर बैसल छलाह । सम्भवतः कोनो बुझारति चलि रहल छलैक । रामदयालजी केँ देखि अमिरकान्तजी आश्चर्यचकित होइत बजलाह, "आउ...आउ... मित्र ! की हाल-चाल ? कोना कष्ट कयल ? हम तँ सोचैत छलहुँ, आब अहाँ लोकनि सँ भेट नहि भ' सकत । मुदा अपने कृपा कयल, ई हमरा लेल सौभाग्यक गप्प थीक ।"

रामदयालजी, "नहि कोना अबितहुँ । हम तँ जखनेसँ घटनाक विषयमे सुनल अछि, तखनेसँ भेट करबाक लेल व्यग्र छलहुँ । रतनजी सँ भेट क' सबटा अता-पता लेलहुँ आ आबि गेलहुँ । हमरा एहि घटना पर बहुत दुःख अछि आ ओहिसँ बेसी अहाँ पर तामस ।"

अमिरकान्तजी, "हमरा पर तामस किएक ?"

रामदयालजी, "किएक नहिं होयत तामस । कमसँ कम सूचनो तँ भेटैत । ई तँ सुदिनजीसँ पुछलहुँ, तँ ओ सबटा वृतान्त कहलन्हि । दुःख तँ बड़ भेल, मुदा होनी तँ होयबे करत । ओकरा के टारि सकैत अछि ? एकरा पर ककरो बस नहि चलैछ ।"

अमिरकान्तजी, "कोन खुशखबरी छलैक, जे सूचना दितहुँ । तखन सुदिनजीक की हाल-चाल ?"

रामदयालजी, "कोनो खास सुधार नहि । दिनानुदिन कमजोरे भेल जा रहल छथि । तखन तँ जे दिन छथि से छथि ।"

अमिरकान्तजी, "भोरक टहलब जारी अछि, की छुटि गेल ?"

रामदयालजी, "टहलब तँ जारी अछि, मुदा ओ आनन्द आब कत', जे अहाँक रहने भेटैत छल ।"

अमिरकान्त जी, "की, करबैक, सब दिन एके रंग थोड़े होइत छैक ।"

अमिरकान्तजी यथासाध्य रामदयालजीक स्वागत कयलनि । हुनको ओहिठाम तँ मात्र एकटा नौकर छल, जे जलखै आ चाहक इन्तजाम कयलक । एहि सँ बेसी ओ कैओ नहि सकैत छल" ।

अमिरकान्तजी, "अपने कोना क' अयलहुँ आ पता किनकासँ भेटल ? अयबामे तँ बड़ कष्ट भेल होयत । ई कोनो शहर नहि छैक । ई तँ निछच्छ देहात थिकैक ।"

रामदयालजी, "पतातँ रतनजीसँ भेटि गेल । अयबा मे दिक्कत किएक होइत ? हम कोनो विदेशी थिकहुँ । हमहूँ तँ देहातिये छी ।"

आइ अमिरकान्तजी आ रामदयालजीक प्रसन्नताक सीमा नहि छलनि । जहिना पार्कमे ठहाका चलैत छल, तहिना एहूठाम चलि रहल अछि । से देखि कतेको लोक जुटि गेलाह । सबकेँ हुनक ठहाका देखि आश्चर्य होइत छलनि । सुनीताक देहान्तक बाद आइ पहिल अवसर छल, जे अमिरकान्तबाबू हँसल छलाह । अन्यथा गम्भीरे मुद्रामे रहैत छलाह । केओ किछु पुछैत छलनि, तँ हँ वा नहि मे उत्तर दैत छलाह । ककरोसँ बेसी गप-सप नहि करथि । मुदा आइ सब आरि-धूर तोड़ि देने छलाह ।

कारण दुनू तँ घायले शेरकेँ भेट भेल छलनि । आ घायलक दुःख तँ एकटा घायले बुझि सकैत अछि ।

रामदयालजी पुछलथिन्ह, "तखन आगाँक लेल की सोचि रहल छी ? रतनजीक विवाह करयबन्हि वा नहि ?"

अमिरकान्तजी, "हमरा सोचने की होयतैक । हम तँ चाहैत छी, रतन दोसर विवाह क' लेथि । कतेक लोक आबि क' कहैत छथि, मुदा रतन तँ नाक पर माँछिये नहि बैस' दैत छथि । हमर कोन, दू ने चारि वर्ष कहुना क' काटि लेब, मुदा हुनकर तँ एखन जीवने पड़ल छन्हि । तीनू बापुत मेसमे खाइत छथि, एकटा लोकेक कारण ने ? ई कोना नीक लागत ।"

रामदयालजी, "ओना तँ हुनक की योजना छन्हि, कहि नहि सकैत छी, मुदा ओ यदा-कदा हमरा ओहि ठाम अबैत छथि । हमरा पुतहु सँ खूब खूलि क' गप-सप करैत छथि । ओना इहो मात्र संयोगे छलैक जे एक दिन सुकन्या बस स्टैण्ड मे बसक प्रीतक्षा क' रहल छलीह । हल्का बुंदा-बुंदी भ' रहल छलैक । सुकन्या एकटा स्कूटरबलासँ लिफ्ट लेलनि । ओ व्यक्ति हुनका घर पहुँचा देलक । सुकन्या तँ घर आबि गेलीह, मुदा ओ व्यक्ति बाहरेमे ठाढ़ छल । वर्षा जोरसँ होम' लगलैक । हम हुनका बजौलहुँ । ओ तँ आब' नहि चाहथि, मुदा हम जबर्दस्ती आनल आ चाहक आग्रह कयल । ओ चाह पीबि क' चल गेलाह । एही क्रममे परिचय भेल । परिचयमे अपनेक नाम आयल । तखन तँ ओ अपन लोक भ' गेलाह । हम हुनका यदा-कदा अयबाक लेल आग्रह कयलियनि । तावत् हमरा एहि घटनाक विषयमे किछु नहि बुझल छल । जखन बुझल, तखन तँ......" ।

अमिरकान्तजी, "ओना तँ परिवार एखन खतमे बूझू । तखन देखिऔ भगवानक की इच्छा छन्हि । हुनक जे इच्छा होयतन्हि, सैह ने होयतैक ।"

रामदयालजी, "हँ....हँ.... होयतैक तँ सैह । तखन लोक अपन कर्त्तव्ये ने करत । फल देनिहार तँ विधाते ने छथि ?"

अमिरकान्तजी, "कर्त्तव्यक प्रेरणा तँ ओएह ने दैत छथिन । ओना हमर बात ओ नहि काटैत छथि, मुदा हम एहि लेल कोनो दबाब नहि देब'

चाहैत छियनि किएक तँ ओ स्वयं अपन नीक-बेजाय, भविष्य-वर्त्तमान सोचि, जे करताह सैह उचित होयत । हुनको दूटा जुआन बालक छन्हि । ओकर जीवनक सवाल छैक आ सतमायक हाल तँ हम जनितहि छी । अहूँ सब किछु ने किछु अवश्य बूझैत होयब ।"

रामदयालजी, "सब की एके रंगक होइत अछि ? किछु अपवादो तँ होयतैक ।"

अमिरकान्तजी, "ककरो माथ पर नहि ने लिखल रहैत छैक । आ जखन गरा मे ढोल पड़ि जायत, तखन तँ बजौनहि कुशल ।"

रामदयालजी, "हँ... से तँ सत्ये कहैत छी ।"

गप्पक क्रममे अमिरकान्तजी पुछलथिन्ह, "की रामदयालजी, अपनेक पुत्रवधूक कतहुँ कथा तय भेल वा नहि ?"

रामदयालजी, "एखन धरि तँ नहि भेल अछि ।"

अमिरकान्तजी, "कतहु प्रयास कयल अछि वा नहि ?"

रामदयालजी, "प्रयास तँ बहुत कयल अछि, मुदा सुकन्याक अनुरूप भेटए, तखन ने । एकटा भेटबहु कयल तँ शर्त्त रखलक जे सुकन्या हमरा संग रहतीह । हम तँ तैयार भ' गेलहुँ, मुदा सुकन्या स्वयं ओकर शर्त्त ठुकरा देलथिन । ओ बजलीह, ओना हम विवाह कर' चाहितो नहि छी आ जँ करब तँ बाबूजीकेँ छोड़ि कतहु नहि रहि सकैत छी । बाबूजी हमरा संगे रहताह । ई के स्वीकार करत ? एक तँ विधवा कनियाँ, आ ऊपर सँ बूढ़ा दहेजमे ।"

अमिरकान्तजी, "एक गोटेकेँ तँ हमहूँ पठौने छलहुँ । ओ पहुँचल छलाह की नहि ?"

रामदयालजी, "जी, आयल छलाह, मुदा हुनकर प्रस्ताव सुकन्या केँ मान्य नहि भेलनि ।"

अमिरकान्तजी, "हुनकर की प्रस्ताव छलनि ?"

रामदयलजी, "हुनकर प्रस्ताव छलनि, सुकन्या अपन नौकरी हुनका

द' देथि । ताहि पर सुकन्या कहलथिन्ह, ''काल्हि जँ अहाँ हमरा संगे अनुचित व्यवहार करब, तखन हम की करब ? हम कोनो स्थिति मे अपन नौकरी नहि छोड़ि सकैत छी । एकटा अयलाह, जिनकर पहिल कनियाँ जिबैत छलथिन्ह, मुदा कोनो संतान नहि छलनि । सुकन्या कहलथिन्ह, ''ई तँ ओएह भेल, जे बेलसँ खसलहुँ आ बबूर पर अटकलहुँ । कदाचित् जँ हमरहुँ संतान नहि होअय तँ पतिक बाद हमर सहारा के बनत ?

एक दिन रामदयालबाबू रतनकेँ भोजन करबाक लेल निमंत्रण देलथिन, आ स्वयं बहाना बना क' कतहुँ घूम' लेल चल गेलाह । जाइत-जाइत सुकन्याकेँ कहि गेलाह, "हम कनेक कालमे आबि रहल छी । जँ रतनजी आबि जाथि, तँ हुनका भोजन करा देबैन्ह । रतनजी अयलाह तँ सुकन्या केबाड़ खोलि हुनका आदरपूर्वक बैसौलन्हि । रतन पुछलकनि, "ककाजी केँ नहि देखैत छियैन्हि ।"

सुकन्या बजलीह, "ओ कतहु गेल छथि । अहाँकेँ भोजन करबाक लेल कहि गेल छथि ।" सुकन्या खूब आग्रहपूर्वक रतनकेँ भोजन करौलन्हि । भोजनोपरान्त सुकन्या रतनसँ पुछलथिन्ह, "बच्चा सभक की हाल-चाल अछि ?"

"दुनू बच्चा एम.बी.ए. पास क' लेलक । अगिला सप्ताहमे एकटा पुणे आ दोसर बंगलुरु चल जायत । हमरा धीरे-धीरे एसकर रहबाक आदत बनाब' पड़त," रतन बजलाह ।

सुकन्या, "ई तँ बढ़ियाँ भेल । दुनू बच्चाकेँ नौकरी भ' गेलनि । जहाँ धरि एसकर रहबाक प्रश्न अछि, तँ एसकर किएक रहब ? बेरा-बेरी दुनू ठाम रहब ।"

"हम सेवा निवृत्तिक बाद गामहिमे रह' चाहैत छी । गामक कारोबार सेहो देखब आ बूढ़ बाबूजीक सेवा सेहो होयतनि", रतन बजलाह ।

सुकन्या, "ई तँ उत्तम विचार अछि, मुदा घरोक कार्य लेल तँ केओ ने केओ चाही । तेँ दोसर विवाह क' लितहुँ तँ नीक होइत ।"

रतन, "आब तँ बेटा दुनूक विवाह करब । आब अपन विवाह की करब लोक की कहत ?"

सुकन्या, "अहाँ तँ लोकक परबाहि नहि करैत छलहुँ । अहाँ कहिआ सँ लोकक परबाहि कर' लगलहुँ ?"

रतन, "लोकक डर तँ नहि अछि, मुदा बाल-बच्चाक परबाहि तँ करहि पड़त । ओ सब मनमे की सोचत ?"

सुकन्या, "हँ... एहन तँ होयतैक । ओ सब विरोधो क' सकैत छथि । बाहरी विरोध सँ तँ लोक एतेक डेराइत अछि । घरक विरोध तँ आर विचित्र होइत अछि ।"

रतन बजलाह, "अहाँके तँ हमरा जकाँ दुविधा नहि अछि । अहाँ किएक नहि विवाह क' लैत छी ? एहन कतेको विवाह भेलैक अछि । शीतलपुर जे हमरा गामसँ दू कोसक दूरी पर अछि, ओहि ठाम ज्ञानशंकर नामक एक गोटे छलाह । ज्ञानशंकरके तीनटा बेटा आ एक टा बेटी छलनि। सब धिया-पूता शिक्षा ग्रहण क' नीक नौकरी-चाकरी करैत छलनि । बेटीक विवाह खूब धूम-धामसँ कयलनि । जमाय सेहो बैंकक अधिकारी छलथिन्ह । विवाहक मासो दिन नहि भेल छलैक । हुनक जमाय एकटा रोड एक्सीडेण्ट मे खतम भ' गेलथिन्ह । ज्ञानशंकरजीक परिवारमे सन्नाटा पसरि गेल । रिंकीक आँखिक काजर एखन मलीनो नहि भेल छलनि । ओ एखन दुनियाँ देखनहुँ नहि छलीह । वैवाहिक सुख बुझनहुँ नहि छलीह । हुनक जीवन कोना व्यतीत होयत ? नौकरी तँ हुनका पतिक स्थान पर भेटि जइतनि, मुदा जीवनक की अर्थ रहतनि ? ओ ककरा लेल जीवित रहतीह ? एकटा विधवाक जीवन केहन होइत छैक ? ओकर रहब, पहिरब-ओढ़ब सोचि ज्ञानशंकर विचलित भ' जाइत छलाह । ज्ञानशंकरजी निर्णय लेलनि जे रिंकीक दोसर विवाह करायब । किछु गोटे हुनका मनो कयलथिन्ह, मुदा ओ ककरो नहि सुनलनि आ एहि प्रयासमे लागि गेलाह । गामक लोकके जखन विदित भेलनि तँ ओ सब विरोध कयलथिन्ह । ज्ञानशंकरजी तँ पागल भ' गेल छथि । जे कहिओ नहि भ' आयल अछि, से कर' चाहैत छथि । उनटा गंगा बहाब' चाहैत छथि । मुदा

एक तरहें ज्ञानशंकरजी बहीर भ' गेलाह, आ ककरो गप्प पर ध्याने नहि देथि । हुनकर एकहि टा संकल्प छलनि, येन केन प्रकारेण रिंकीक विवाह करायब । एहि तरहें दू वर्ष बीति गेल, मुदा ज्ञानशंकरजी अपन प्रयास नहि छोड़लनि । करीब दू वर्षक बाद ओही बैंकक एक अधिकारी निर्मलजीक पत्नी स्वर्गीय भ' गेलथिन । हुनको एखन धरि कोनो बाल-बच्चा नहि छलनि । निर्मलजीक वयस सेहो कोनो बेसी नहि छलनि । तीन वर्ष पूर्वहि तँ विवाह भेल छलनि । हुनकर नजरि रिंकी पर पड़ल । रिंकी हुनकहि आफिसमे काज करैत छलीह । ओ हुनक रूप आ स्वभावसँ बड़ प्रभावित छलाह । ओ रिंकी के अपनाब' चाहैत छलाह, मुदा डरैत छलाह समाजसँ । रिंकी विधवा छथि आ समाज एखन विधवा विवाहक मान्यता नहि देने अछि । निर्मल अपना परिवार के तँ मना लेताह, मुदा की रिंकीक परिवार वा घरक लोक एहि लेल तैयार होयताह ? रिंकी लग एहन प्रस्ताव देल जाय वा नहि ? जँ देल जाय तँ कोना ? एहन नहि हो जे रिंकी अधलाह मानि जाथि । ओ सोचलनि, जखन केओ नहि रहत, तखन अप्रत्यक्ष रूपे गप्प कयल जयबाक चाही । एक दिन संध्या पाँच बजे निर्मलजी रिंकीके अपना केबिनमे बजौलथिन आ कहलथिन, ''अहाँ कनेक काल रूकब, किछु गप्प करबाक अछि ।" छुट्टीक बेर भ' गेलैक । प्रायः सबटा स्टाफ चल गेल । तखन निर्मलजी रिंकीसँ पुछलथिन, "रिंकी, अहाँ डेरासँ आफिस कोना जाइत-अबैत छी ?"

रिंकी, "बससँ श्रीमान् ।"

निर्मलजी, "अहाँक परिवारमे आर के सब छथि ?"

रिंकी, "सासु, ससुर, ननदि आ एकटा दिअ'र" ।

निर्मलजी, "अहाँ जँ एक घंटा देरीसँ डेरा जायब, तँ कोनो हर्ज ? आफिसक गाड़ी अहाँके डेरा छोड़ि देत ।"

रिंकी, "आर तँ नहि किछु, कनेक टेलीफोनसँ बाबूजीके सूचित कर' पड़त । अबेर भेलासँ हुनका अंदेशा होयतन्हि ।"

निर्मलजी, "बाबूजी के ? ससुरजी ?"

रिंकी, "जी ।"

निर्मलजी, तुरंत रिंकीक ससुर रघुवंशबाबूके टेलीफोन लगौलनि, आ रिंकीक हाथमे द' देलथिन्ह ।

रिंकी, "बाबूजी ! हम रिंकी बाजि रहल छी ।"

रघुवंशबाबू, "हँ....हँ.... बाजू । की कहि रहल छी ?"

रिंकी, "बाबूजी ! बैंकमे एकटा आवश्यक काज आबि गेल छैक । एकटा रिपोर्ट बना क' हेड आफिस पठयबाक छैक । तेँ डेरा अयबामे देरी भ' सकैत अछि । अहाँ कोनो चिंता नहि करब ।"

रघुवंशबाबू, "ठीक छै, मुदा आयब कोना ?"

रिंकी, "आफिसक गाड़ीसँ आबि जायब ।"

रघुवंश बाबू, "ठीक छै, कोनो दिक्कत हो तँ टेलीफोन करब ।"

रिंकी, "जी, बाबूजी ।

ओकर बाद सब केओ अपन-अपन काज मे लागि गेलाह । ओना तँ ई काज बिना रिंकीक सेहो भ' सकैत छलैक, मुदा निर्मलजी रिंकीसँ एकान्तमे गप्प करबाक लेल आतुर छलाह । ओ रिंकीक निकट जयबाक लेल छटपटा रहल छलाह । ओ रिंकीसँ सम्पर्क बढ़ाब' चाहैत छलाह । हुनका पता लागि गेल छलनि जे रिंकीक बाबूजी ज्ञानशंकरजी आ ससुर रघुवंशबाबू रिंकीक दोसर विवाह कराब' चाहैत छथि । तेँ ओ विशेष रूपसँ रिंकीके रोकबाक प्रयास कयलनि, एहि लेल जे समय भेटला पर एकान्तमे किछु गप-सप करब आ समय अयला पर अपन विचार रिंकी लग व्यक्त करब । काज खतम भेला पर निर्मलजी अपना गाड़ीसँ रिंकीके हुनक डेरा पहुँचौलनि । औपचारिकताक निर्वाह लेल रिंकी निर्मलजीके चाह पीबाक बड़ आग्रह कयलथिन, मुदा निर्मलजी फेर कहिओ कहि, टारि देलनि आ चल गेलाह । अबैत काल गाड़ीमे निर्मलजी रिंकीसँ बहुत एम्हर-ओम्हर केर गप्प करैत रहलाह । ओ पुनर्विवाह पर रिंकीक प्रतिक्रिया लेब' चाहैत छलाह । रिंकीक स्वभाव आ चालि-चलनसँ ओ

पहिनहिसँ अवगत छलाह । बैंकक काज तँ ओ लगनसँ करितहि छलीह, ग्राहक संग एतेक सुन्नर व्यवहार छलनि, जकर वर्णन नहि । हुनका समक्ष जे केओ जाइत छल, ओकर समस्याक समाधान रिंकी हँसैत-हँसैत करैत छलीह । हुनका कार्यसँ मैनेजर साहेब एकदम निश्चिंत रहैत छलाह । आनो कर्मी केँ जँ कोनो दिक्कत होइत छलनि, तँ ओहो रिंकीसँ पुछैत छलाह । निर्मलजी एतेक दिनसँ रिंकीके बैंक कर्मीक रूपमे जनैत छलाह । मुदा आब हुनकर इच्छा हुनका अपन जीवन संगिनी बनयबाक भ' रहल छन्हि । तेँ ओ हुनका लग जयबाक अवसर ताकि रहल छलाह, आ से भेटिओ गेलनि । ओहि दिनसँ निर्मल बराबरि रिंकीके काजक बहाने रोकि लैत छलाह । कहिओ पार्क, त' कहिओ काफी हाउस सेहो ल' जाइत छलाह । रिंकी निर्मल केर नस-नस मे पैसि गेल छलीह । किछु दिन तँ रिंकी अपनाके संयमित रखबा मे सफल रहलीह, मुदा आब हुनको मोन बेकाबू भ' रहल छलनि । आब ओहो निर्मलजीक संग एकदम खुलि क' गप्प कर' लगलीह । एहिसँ निर्मल आर छटपटा जाइत छलाह । कहुना क' अपनाके रोकि पबैत छलाह । निर्मल तँ एहि मामिलामे अनुभवी छलाह । हुनका तुरंत असर करैत छलनि । ओ तीन वर्ष धरि दामपत्य जीवनक आनन्द उठौने छलाह, मुदा रिंकी ओतेक अनुभवी नहि छलीह । तथापि जुआन तँ भइए गेल छलीह आ सब किछु बुझैत सेहो छलीह । ओ जनैत छलीह जे ज्ञानशंकरजी हुनका लेल वर ताकि रहल छथिन आ निर्मलजी सेहो विधुर छथि । तेँ हुनको निर्मलजीक संग गप-सप करबामे नीक लगैत छलनि । हुनका दुनूक बीच जे देवाल छल ओ ध्वस्त भ' गेल ।

रिंकी, "निर्मल जी, अहाँ अपन परिवार किएक नहि बसाबैत छी ? एना कतेक दिन जीब ? एखन त' जीवन धयले अछि, आ बुढ़ि माँजी कतेक दिन हाथ झरकौतीह ?"

निर्मल, "हमहूँ कतेक दिनसँ सोचि रहल छी, मुदा केओ भेटए तखन ने ।"

रिंकी, "अहाँ तँ पुरुष छी, आ पुरुष के तँ कतेको भेटि जाइत छनि ।"

निर्मल, "भेटि तँ जायत, मुदा जेहन चाही, तेहन भेटत, तखन ने ।"

रिंकी, "केहन चाही ?"

निर्मल, "एकदम अहीँ सन" ।

रिंकीक मुहँ लाजे लाल भ' गेलनि । ओ एहन प्रस्तावक अपेक्षा नहि करैत छलीह । यद्यपि निर्मल संगे बहुत तरहक गप्प करैत छलीह, मुदा प्रत्यक्ष रूपें एहि तरहें निर्भय प्रस्ताव देताह, एहन आशा नहि छलनि । रिंकी विधवा छलीह, आ समाज मे विधवा विवाहक प्रचलन नहि अछि । यद्यपि चोरा-नुका क' गोटपगड़ा भ' रहल अछि । खुलि क' केओ आगाँ नहि आबि रहल अछि । तेँ ई सम्भव नहि छलैक । एहि पर सोचबो बेकारे छल ।

रिंकी, "ई सम्भव नहि अछि ।"

निर्मल, "किएक सम्भव नहि अछि । की हम अहाँकेँ पसिन्न नहि छी वा हमरा मे कोनो ऐब अछि ?"

रिंकी, "नहि, नहि, निर्मलबाबू, एहेन गप्प नहि छैक । अहाँमे कोनो ऐब नहि अछि । हमरहि कपारमे आब ई सब लिखल नहि अछि । हमहीँ अहाँक जोगरक नहि छी ।"

निर्मल, "से तँ हम ने बुझब । हमरा अहाँ पसिन्न छी । अहाँकेँ की आपत्ति अछि, से ने कहू ।"

रिंकी, "सामाजिक बन्धन, आर किछु नहि ।"

निर्मल, "ई सब आब पुरान गप्प भ' गेलैक । एहि युग मे कोनो बन्धन हमरा-अहाँकेँ रोकि नहि सकैत अछि । हँ, अहाँक मन मे जँ किछु हो तँ स्पष्ट करू । हम अहाँक संग कोनो जोर-जबर्दस्ती नहि करब ।"

रिंकी, "हमर गार्जियन............"सबटा हमरा पर छोड़ि दीअ' । हम सबटा क' लेब । अहाँ केवल देखैत टा रहू" । तावत् रिंकीक डेरा आबि गेलनि । ओ चुपचाप गाड़ीसँ उतरि डेरा चल गेलीह । ओहि दिन निर्मलजीकेँ चाहो पीबाक आग्रह नहि कयलथिन । ओ राति भरि एहि

विषय पर सोचैत रहलीह । हुनका आँखिक निन्न उड़ि गेलनि । ओ निर्मलकेँ बिसरि नहि पबैत छलीह । राति भरि सूति नहि सकलीह । ओम्हर निर्मल केर सेहो किछु एहने स्थिति छलनि । ओ प्रात:काल रिंकीक डेरा पर गेलाह । तावत् रिंकी बैंकक लेल डेरासँ विदा भ' गेल छलीह । ओ नहि चाहैत छलीह जे निर्मलजीक संग गाड़ीसँ जाथि । ओना हुनको निर्मलजीक संग नीक लगैत छलनि, मुदा लोक लाजसँ बचैत छलीह । निर्मलजीक भेट रघुवंशबाबूसँ भेलनि ।

रघुवंशबाबू, "अपने के थिकहुँ ?"

निर्मल, "हमर नाम निर्मल थीक । हम ओही बैंकमे मैनेजर छी, जाहिमे रिंकी काज करैत छथि ।"

रघुवंशबाबू, "से की ? रिंकी सँ कोनो गलती भेलन्हि की ? हुनकर स्थिति तँ अपने सबसँ चोरायल नहि अछि । हुनका पर विपत्तिक पहाड़ टुटि पड़ल छन्हि । कौखन नादानी क' दैत हेतीह । तखन तँ जे किछु गलती कयलनि, ताहि लेल हम क्षमाप्रार्थी छी" आ दुनू हाथ जोड़ि लेलथिन ।

निर्मल, "नहि...नहि... रिंकीसँ किछु गलती नहि भेल अछि । हम तँ हुनका भविष्यक विषयमे अपनेसँ किछु गप्प कर' चाहैत छलहुँ । की ओ अहिना विधवाक जिनगी व्यतीत करतीह, वा कोनो अन्य विकल्प पर ध्यान देल जयतैक ।"

रघुवंशबाबू, "हम सब तँ इएह सोचि-सोचि क' मरल जा रहल छी । हमरा सबकेँ तँ जे लिखल छल, भ' गेल । कतेक दिन हम सब जीब । दस-पन्द्रह वर्ष आर की ? मुदा हुनक जीवन तँ एखन पहाड़ जकाँ ठाढ़ छन्हि । ओ ई पहाड़ सनक जिनगी कोना कटतीह ? इच्छा तँ बहुत होइत अछि पुनर्विवाह करयबाक, मुदा समाजिक बंधनक सोझाँ मजबूर छी ।"

निर्मल, "बाबूजी ! अहाँ सब तँ बेसी अनुभवी छी आ हमरा सबसँ सब तरहेँ निर्णय लेबा मे सक्षम सेहो ।"

रघुवंश बाबू, "कहबाक तात्पर्य ?"

निर्मल, "कोनो गलत प्रथा वा रूढ़िवादी विचारक अंत होइत छैक । ओहि लेल कठिन संकल्पक आवश्यकता होइत छैक । आर किछु नहि ।"

रघुवंश बाबू, "जँ केओ विधवा कन्यासँ विवाह करबाक लेल तैयार होथि, तखन ने एहि विषयमे विचार कयल जायत । अनेरे हवा मे तीर छोड़ब कोन काजक ।"

निर्मल, "ओहि लेल जखन प्रयास करबै, तखन ने । फल तँ गाछमे लटकल रहैत छैक मुदा बिना हाथ लगौने थोड़े मुँहमे आबि जाइत छैक ?"

रघुवंश बाबू, "से तँ नहि अबैत अछि । एहि लेल ज्ञानशंकरजी प्रयासरत छथि । हम तँ कतहु जयबा-अयबासँ लाचार छी । ई भार हुनकहि पर छैन्हि । हमहूँ सब चाहि रहल छी ।"

निर्मल, "के ज्ञानशंकर जी ?"

रघुवंशबाबू, "ज्ञानशंकरजी रिंकीक पिता छथि ।"

निर्मल, "हमहूँ विधुर छी आ कोनो बाल-बच्चा नहि अछि । जँ अहाँ सबकेँ कोनो आपत्ति नहि हो, तँ हम रिंकीसँ विवाह क' सकैत छी । हमरा बुझने एहि मे रिंकीकेँ सेहो कोनो आपत्ति नहि होयबाक चाहियनि ।"

रघुवंशबाबू, "ठीक छै, हमरा किछु समय देल जाय । एहि विषय पर हम ज्ञानशंकरजीसँ सेहो कनेक विचार-विमर्श कर' चाहैत छी । ओकर बाद हम अहाँसँ पुनः गप्प करब ।"

निर्मल, "हमरा जखन कहब हम आबि जायब ।"

रघुवंशबाबू, "एकटा गप्प आर ।"

निर्मल, "कहल जाय ।"

रघुवंशबाबू, "ओना तँ हमरा पुछबामे संकोच भ' रहल अछि, मुदा जँ नहि पूछब तँ विचार कोना करब ।"

निर्मल, "हँ...हँ... अवश्य पूछल जाय ।"

रघुवंशबाबू, "अहाँक परिवारमे के सब छथि ?"

निर्मल, "हमरा परिवारमे मात्र हमर सत्तरि वर्षीया माँ छथि । पाँच वर्ष पूर्वहि हमर बाबूजी स्वर्गीय भ' गेलाह । साल भरि पहिने हमर गृहिणी सेहो । ओना तँ हमर विवाहक तीन वर्ष बीति गेल छल, मुदा संतान नहि छल । रिंकी जहिये हमरा आफिसमे प्रवेश कयलनि, हुनक स्वभाव हमरा आकर्षित कयलक । मुदा गप्प कत' सँ शुरू कयल जाय, इएह सोचबामे एतेक देरी भ' गेल । आइ हम अपन संकोचकेँ तोड़ि अपनेसँ रिंकीक हाथ माँग' आयल छी ।"

रघुवंशबाबू, "ओना तँ हम दू-चारि दिनमे अपन निर्णय द' देब, मुदा हमरो एकटा शर्त्त रहत ।"

निर्मल, "केहन शर्त्त ?"

रघुवंशबाबू, "रिंकीक पिता तँ ज्ञानशंकर छथिन्ह । हुनका ओहि ठाम तँ ओ जाइते-अबिते रहतीह, मुदा हमरहुँ लोकनिकेँ रिंकीसँ बड़ स्नेह भ' गेल अछि । ओ हमरा लेल हमर बेटाक समान छथि । हमरा सभक भरण-पोषण क' रहल छथि । मुदा हम अपना स्वार्थक लेल हुनक जीवन खराब नहि कर' चाहैत छी । तेँ अहाँसँ आग्रह जे हमरो ओहि ठाम रिंकीक अबर-जात बनल रहनि ।"

निर्मल, "बाबूजी ! रिंकी अहींक ओहिठाम रहतीह । अहाँ सभक बेटी बनि क' । यावत् कल्पनाक कन्यादान नहि भ' जाइत अछि, आ आलोक अपना पयर पर ठाढ़ नहि होइत छथि, तावत् ई जिम्मेबारी रिंकीक संग हमरो रहत । जँ आवश्यकता होयतैक तँ हमहूँ दुनू माय-बेटा एही ठाम आबि क' रहब ।"

रघुवंशबाबू, "हमरा बड़ खुशी होयत, जँ अहूँ दुनू माय-बेटा एही ठाम रहब ।" रघुवंशबाबूकेँ लगैत छलनि जेना ओ आइ बोझमुक्त भ' गेलाह । ओ रिंकीक विषय मे सोचि क' बड़ परेशान रहैत छलाह । मुदा भगवान घरे बैसल सबटा जोगाड़ लगा देलथिन । निर्मल अपन आफिस

गेलाह आ अपना काजमे लागि गेलाह । आन दिन ओ चैम्बर मे बैसितहि रिंकीकेँ बजबैत छलाह आ काजक विषयमे पूछ-ताछ करैत छलाह । मुदा आइ ओ पूछब तँ दूर रिंकी दिस एको बेर तकबो नहि कयलनि । रिंकीकेँ सेहो आश्यर्च लगैत छलनि । आइ निर्मलबाबूकेँ की भ' गेल छनि । रिंकी सोचैत छथि, निर्मलजी काल्हुक गप्पसँ तऽ ने रुष्ट छथि । मुदा हमहूँ की करितहुँ, जे असम्भव अछि, से कोना मानि लितहुँ । समाज आ लोको लाज तँ किछु होइत अछि । सबकेँ तोड़बाक लेल एकटा हमही छी की ? दोसर, विनोदक नहि रहला पर सम्पूर्ण परिवारक भार तँ हमरहि ऊपर अछि । हम जँ पुनर्विवाह करैत छी, तँ कल्पना आ आलोकक की होयत । हुनका दुनूक पढ़ाइ-लिखाइ कोना चलत ? हम अपना क्षणिक स्वार्थक लेल विनोदक देल जिम्मेवारी सँ नहि पड़ायब । खाट धयने बाबूजीकेँ कोना छोड़ि देबैन्ह । आफिसक अन्य कर्मचारीकेँ सेहो आश्चर्य लगैत छलनि । आइ मैनेजर साहेब केँ की भ' गेलनि ? ककरोसँ कोनो झंझट तँ नहि भेलनि ? कदाचित रिंकीसँ त ने खटपट भेल छन्हि । एकटा महिला कर्मचारी नैना बेसी काल रिंकीसँ हँसी-मजाक करैत रहैत छलीह । ओ पूछलथिन, "बहिनजी, आइ की बात छैक, साहेबक मूड ऑफ लगैत छन्हि । की कोनो झगड़ा-तगड़ा तँ नहि भेल अछि ।" रिंकी हँसैत-हँसैत बजलीह, "नहि, नहि, हमरासँ तँ किछु नहि भेल छन्हि । पता नहि, अयबो कयलाह अछि देरीयेसँ आ अबितहि काज मे लागि गेलाह । भ' सकैत अछि जे हेड आफिससँ किछु बहसा-बहसी भेल होइन्हि ।" आई निर्मलजी रिंकीकेँ ठहरबोक लेल नहि कहलथिन आ ने अपना गाड़ीसँ ल' गेलाह । जखन कि आइ दू मास सँ दुनू गोटे गाड़ीयेसँ अबैत-जाइत छलाह आ सात बजे सँ पहिने घर नहि पहुँचैत छलाह । रिंकी आफिसक बाद सीधे बससँ डेरा गेलीह । ओ बसोमे इएह सोचैत छलीह जे आखिर गप्प की छैक । कदाचित् हमरासँ रूष्ट रहितथि, तँ दोसरोसँ त' गप्प करितथि । मुदा ककरो सँ किछु नहि बजलाह । रिंकी गुन-धुनमे अपना डेरा गेलीह, आ अपन नित्य कर्म मे लागि गेलीह । जखन रिंकी सब काजसँ निवृत्त भ' गेलीह, तखन रघुवंशबाबू सब गप्प, जतेक निर्मलजीसँ भेल छलनि सँ अवगत करौलथिन्ह । तकर बाद रघुवंश बाबू बजलाह,

"रिंकी बेटा, आब जवाना बदलि गेल छैक । ओही अनुसारे सबकेँ चलबाक चाही । सब केँ अपना विषयमे अपन निर्णय लेबाक अधिकार छैक । तेँ हम चाहब जे एहि पर अहाँ अपन विचार दिअ' । ओकर बादे हम सब किछु निर्णय लेब ।"

रिंकी, "बाबू जी, पुनर्विवाहसँ हमरा अहाँ सभक स्नेह छुटि जायत । कल्पना आ आलोकजीक जे स्नेह पबैत छलहुँ, से कत' भेटत ।"

रघुवंश बाबू, "अहाँ ओकर चिंता जुनि करू । अहाँ यावत् चाहब विवाहक बादो एहि ठाम रहि सकैत छी । कल्पना आ आलोक अहीँ लग रहत । आवश्यकता होयतैक तँ निर्मल सेहो अपना मायक संग एतहि आबि जयताह । एहि विषयमे ज्ञानशंकरजीसँ सेहो गप्प कयल अछि । ओ तँ सुनितहि एतेक उत्साहित भेलाह, जकर वर्णन नहि । ओ तँ चाहैत छलाह, जे काल्हि होयतैक से आइये होअय तँ नीक, मुदा हुनका हमहीँ कहलियन्हि जे बिना रिंकीक विचारे किछु नहि भ' सकैत अछि ।"

रिंकी, "अपनेक जे आदेश होयतैक, से हमरा मान्य अछि ।"

रघवंशबाबू, "एकटा गप्प कहू तँ । निर्मलबाबू केहेन लोक छथि ? हमरा सँ तँ मात्र एक घंटा गप्प कयलनि, मुदा अहाँ तँ दिन भरि हुनके संगे काज करैत छी । अहाँ तँ हुनका स्वभावसँ परिचित होयब ।"

रिंकी, "ओना हमरहुँ तँ ओ नीके लोक बुझाइत छथि ।"

रघुवंशबाबू आ ज्ञानशंकरजी दुनू गोटे प्रातःकाल निर्मलजीक डेरा पर गेलाह । हुनके दुनूक समक्ष हुनका माँसँ गप-सप भेलनि । दुनू पक्ष मे तय भेल जे विवाह शिव मंदिरमे बिना कोनो ताम-झाम केर होयत । विवाहक खर्च निर्मलजी उठौताह । एहि तरहेँ निर्मल आ रिंकीक पुनर्विवाहक तैयारी होअय लागल । एम्हर निर्मल आ रिंकीक विवाहक तैयारी भ' रहल छलैक । तीनू परिवार अत्यन्त उत्साहित छल । ओम्हर एहि बातक भनक लगितहि राजीवबाबूक आँखिक निन्न उड़ि गेलन्हि । ओ बैचेन भ' गेलाह । हुनका कोनो काजमे बाधा उत्पन्न करबाक स्वभावे बनि गेल छलन्हि । राजीव बाबू गामक सरगनाक रूपमे जानल जाइत छलाह । ओ विधवा

विवाहक प्रबल विरोधी तँ छलाहे, किछु पुरना बैर रघुवंशबाबूसँ सेहो छलन्हि । कहाबतो छैक 'एक राकस दोसर नोतल ।'

एक दिनक गप्प अछि । राजीवबाबू एकटा मजदूरक बच्चा पर चोरीक आरोप लगाक' पीटने छलाह । आरोप छलैक घरक सामग्री चोराक' ल' जयबाक । मुदा जाहि तरहेँ मारि लागल छलैक, ओ किछु आर कहि रहल छलैक । बच्चा आदिवासी समाजक छलैक आ राजीवबाबूक ओहिठाम चरबाहि करैत छल । जखन ई समाचार ओकरा सभक बीचमे गेलैक तँ ओ सभ उग्र भ' गेल आ ओ सब समूहक संग राजीव बाबूक घरमे आगि लगयबाक लेल पहुँचि गेल । राजीवबाबू घरक भीतर दुबकि गेलाह । कदाचित बाहर रहने किछु आर भ' सकैत छलन्हि । रघुवंशबाबू जे राजीवबाबूक नजदीकी पड़ोसी छथि, स्थितिक भान होइतहि आबिक' ओकरा सभकेँ बुझा-सुझाक' आपस पठौलन्हि । ओ सभकेँ पंचायतक माध्यमसँ उचित न्याय दिअयबाक भरोस देलन्हि । तखन ओ सभ शांत भेल । दस दिनक भीतर पंचायत भेल । आदिवासी समाज बड़ अड़ियल होइत अछि । ओ जाहि गप्पपर अड़ि जायत, ओहिसँ पाछाँ हटि नहि सकैत अछि । पंचायतमे ओकर शर्त्त छलैक 'जँ गलती हमरा पक्षक होयत तँ दंड पंचायत करत आ जँ गलती राजीवबाबूक होयत तँ दंड हमसब तय करब । रघुवंशबाबू बुझैत छलाह जे गलती तँ सभटा राजीवेक छन्हि । जँ दंड आदिवासी समाज तय करत तँ ओ बहुत किछु क' सकैत अछि आ मामिला हमरा सभक नियंत्रणसँ बाहर भ' जायत । तेँ रघुवंश बाबू ओकरा सभकेँ बुझा-सुझाक' निर्णय पंचायते पर छोड़बाक लेल राजी कयलन्हि । पंचैतीक क्रममे राजीवजी जे आरोप बच्चापर लगौने छलाह, साबित नहि क' पओलन्हि । तखन आदिवासी सभ पुनः हल्ला करब शुरू कयलक । ओकरा सभकेँ शांत करबाक ध्येयसँ रघुवंशबाबू राजीवजीकेँ दू हजार टाका जुर्माना कयलन्हि । हलांकि ई निर्णय राजीवक बचाओमे छलन्हि, मुदा हुनका सनक अहंकारी लोक एहि इशाराकेँ नहि बुझि एकरा अपन अपमान बुझि लेलन्हि आ रघुवंशबाबूसँ एकर बदला लेबाक योजनामे लागि गेलाह ।

आइ राजीवबाबूक सोझां ओ समय आबि गेल । ओ अही बहन्ने रघुवंशबाबूक प्रतिष्ठा गामक लोकक समक्ष मटियामेट कर' चाहैत छलाह । ओ गाममे सगरो प्रचार कयलन्हि जे रघुवंशबाबू बड़ अनुचित क' रहल छथि । जे काज आई धरि केओ नहि कयलक, से रघुवंशबाबू क' रहल छथि । विधवाक विवाह समाजमे वर्जित अछि । वैधव्य तँ ओकर पूर्व जन्मक कयल गेल कर्मक प्रतिफल थीक । ओकरा भोगब संसारक रीति आ विधिक विधान थीक मुदा रघुवंशजी विधवा विवाह कराक' सामाजिक विधानकेँ तोड़ि रहल छथि, एकटा नव प्रथाकेँ जन्म द' रहल छथि, से उचित नहि । एहिसँ हमर समाज गर्त्तमे चल जायत । सामाजिक सब नियम, कायदा-कानून ध्वस्त भ' जायत । ककरहु संगे ककरो स्थायी सम्बन्ध नहि रहतैक । सामाजिक इज्जति निलाम भ' जायत । समूचा गाममे एहि गप्पक कानो-कान प्रचार भ' गेलैक । जेम्हरे सुनु एकरहि चर्चा । प्रातःकाल आठ-दस गोटे रघुवंश बाबूक ओहिठाम अयलाह । ओहिमे राजीवबाबू सेहो छलाह । राजीवबाबूकेँ देखितहि रघुवंश बाबू बजलाह, राजीवबाबू आई भोरे-भोर कोम्हर आयल छी ?

राजीवबाबू कहलथिन्ह, काल्हियेसँ गाम फुस-फुसा रहल अछि । इहो लोकनि हमरा ओहिठाम एकरहि जानकारीक लेल आयल छलाह । हमहीं कहलियन्हि, चलु ओहीठाम पहुँचिक' सभ गप्प बुझि ली ।'

रघुवंश बाबू कहलथिन्ह, "राजीवबाबू ! आबहु तँ ई धंधा छोड़ू । बुढ़ भ' गेलहु मुदा एखनहु धरि अहाँमे सुधार नहि भेल अछि । सभ दिन तँ आगिये लगेलहु ।"

राजीवबाबू बजलाह, "कुकर्म अहाँक' रहल छी । आ उनटे दोषारोपण हमरा पर क' रहल छी ? आइ धरि हमरा समाजमे विधवा विवाह भेलैक अछि की ? अहाँ तँ सम्पूर्ण गाम-समाजकेँ दुषित क' रहल छी । की, औ, गौआँ-समाज बाजू ने, की ई उचित क' रहल छथि ? ताहिपर ओहिठामक उपस्थित लोक, जकरा हँकारिक' राजीवे बाबू अनने छलाह, ओ सब रघुवंशबाबूक विषयमे कटुवचन बाजब शुरू क' देलन्हि । ओ सब तँ पहिनहिसँ राजीव बाबू द्वारा पढ़ाओल गेल रहथि । रघुवंशबाबूक

परिवरके घरसँ बहरायब कठिन भ' गेलन्हि । ओहिदिन रिंकी सेहो बैंक नहि जा सकलीह ।

निर्मलजी एहि घटनासँ अनभिज्ञ छलाह । रिंकीक अनुपस्थितिसँ ओ कनेक चिंतित लगलाह । बैंकक कोनो कर्मचारी बिना पूर्वानुमतिके अपना कर्त्तव्यसँ अनुपस्थित नहि होइत छथि । तेँ निर्मलजीक चिंता अनुचित नहि छलन्हि । ओ कतेको बेर टेलीफोन कयलन्हि मुदा सम्पर्क नहि भेलन्हि । बैंक बन्द भेलाक बाद निर्मलजी सीधे रघुवंशबाबूक ओहिठाम अयलाह । रघुवंशबाबू हुनका सब स्थितिक जानकारी देलथिन्ह । निर्मलजी चलैत-चलैत रघुवंशबाबूकेँ कहलथिन्ह, ''बाबूजी ! अपने चिंता नहि करब । दू-चारि दिनमे सब किछु सामान्य भ' जयतैक ।

रघुवंशबाबू बजलाह, ''अपने नहि जनैत छी, राजीवक कोनो सिद्धान्त नहि छैक । ओ गाममे सबसँ खराब लोक अछि । ओ ककरहु नीक नहि देखि सकैत अछि । दू चारिटा लुच्चाकेँ संगमे रखने अछि आ सगरो आगि लगौने फिरैत अछि । एकरा सभकेँ रहैत गाममे कोनो उन्नतिक कार्य नहि भ' सकैत अछि ।''

निर्मलजी कहलथिन्ह, ''बाबूजी ! अपने चुपचाप बैसल रहू हम किछु करैत छी ।''

प्रात:काल निर्मलजी बैंक गेलाह आ ओहिठामक चारि-पाँच गोटे जे युवाक संग सामाजिक कार्यकर्त्ता छलाह, सामाजिक रीति-कुरीतिसँ अवगत छलाह आ सम्भवत: हुनके बैंकक ग्राहक सेहो छलथिन्ह, तिनका बजौलन्हि आ विचार-विमर्श कयलन्हि । निर्मलजी कहलथिन्ह, ''हम रिंकीजीसँ विवाहकर' चाहैत छी । हम ई काज कानूनक सहारा ल' क' सेहो क' सकैत छी । किएक तँ हम दुनू गोटे वालिग छी आ दुनू परिवारक सहमति सेहो प्राप्त अछि । कानूनी विवाहसँ समाजपर ओकर कोनो प्रभाव नहि पड़तैक आ एहिमे टाङ्ग अड़ौनिहार पर कारबाइ सेहो भ' सकैत अछि । कारण ई विरोध संविधानक उलंघन थीक मुदा हम समाजमे बदलाओ आनय चाहैत छी । समाजमे कतेको विधवा छथि जे सामाजिक बंधनमे जकड़ल छथि आ घुटि-घुटिक' जीवन काटि रहल छथि । ओ चाहैत छथि जे एहि जीवनसँ मुक्ति भेटन्हि ओहो समाजक मुख्य धारामे आबथि । एखन ओ अपनाकेँ समाजक वंचितो वर्गसँ निम्न बुझैत छथि । ओ अन्य स्त्रीगण जकां खुलिक' जीअ' चाहैत छथि मुदा समाजक क्रूरताक सोझां विवस छथि । तेँ अपने सबसँ आग्रह जे एहिमे अधिकसँ अधिक गामक युवा वर्गकेँ जोड़ल जाय आ एकरा एकटा आन्दोलनक रूप देल जयबाक चाही । राजीवबाबू सनक लोककेँ एहसास कराओल जयबाक चाही जे ओ गलत छथि । एहिसँ समाजक ई प्रथा टुटि सकैत अछि । एकटा कुरीतिक अन्त भ' सकैत अछि आ विधवाक नाम पर होइत स्त्रीगणक उत्पीड़नसँ हुनका सभकेँ बचाओल जा सकैछ । अपने सभकेँ जँ समाजमे क्रान्ति अनबाक हो आ एहि प्रथाक अंत करबाक हो तँ हमर सहयोग करू अन्यथा हम ई काज कानूनक सहारा ल'क' क' लेब ।

ओ युवासभ बाजल, ''नहि नहि श्रीमान् ! अपने हमरा सभकेँ दू-चारि दिनक समय दिऔक । हम सभ सब किछु ठीक क' देब ।''

एहेन तँ कतेको गोटे चाहैत छलाह मुदा समाजक कूट चालिक आ उपहासक डरे आगू नहि अबैत छलाह । ओ युवक सभ अन्य लोकसँ सम्पर्क कयलन्हि । अधिकांश लोक एहि प्रस्तावसँ सहमत छलाह । ई प्रथा अवश्य टुटक चाही । गाम दू गोल भ' गेलैक । राजीवबाबू मात्र चारि-पाँचटा बुढ़केँ ल' क' एक दिश रहि गेलाह । जेम्हरे जाउ, हुनके खिधांश । हुनका घरसँ बहरायब कठिन भ' गेलन्हि ।

निर्मलजी थानामे सेहो सूचनाक' देलन्हि जे ओ आ रिंकी दुनू बालिग छथि आ विवह कर' चाहैत छथि । दुनू परिवारक लोक एहि लेल तैयार छथि मुदा राजीवबाबू एकर विरोध क' रहल छथि । एहि लेल जे रिंकी विधवा छथि । ई एकटा नव प्रथाक शुभारंभ भ' रहल अछि । एकरा समर्थनमे इलाकाक नव पीढ़ीक लोक सभ छथि । ई एकटा आन्दोलनक रूप ल' रहल अछि । अपनेसँ आग्रह जे एहिपर यथोचित कारबाई करबाक कष्ट करी । तावत ई आगि सम्पूर्ण इलाकामे पसरि गेल । भीतरे-भीतर तँ कतेक लोकक इच्छा छलन्हि जे ई प्रथा टुटओ मुदा

प्रत्यक्षत: केओ आगू अयबाक लेल तैयार नहि होइत छलाह । ओहो सब मौका देखि एहि आन्दोलनक हिस्सा बनि गेलाह आ यत्र-तत्र एहि विषय पर चर्चा करब शुरू कयलनि ।

अंतत: थाना प्रभारी आबि बीच-बचाओ कयलन्हि आ सबकेँ शांत करैत किछु प्रमुख लोकक संग विचार-विमर्श कयलन्हि । छान-बीनक क्रममे पता लगलन्हि जे राजीवबाबू अपना घरमे दू टा विधवाकेँ बहिकिरनी बनाक' रखने छथि । ओ दिन-राति हुनके ओहिठाम रहैत अछि आ ओकरा दुनूकेँ भरि पेट भोजनो नहि भेटैत छैक आ मारि-गारिक तँ कोनो अंते नहि । पतिक बिमारीक स्थितिमे किछु टाका कर्ज देने छलथिन्ह । ताहि एवजमे ओकरा दुनूसँ अपन बेगारी करा रहल छथि । एकटा पति विहीन, पुत्र विहीन स्त्रीक मदति केनिहार के ? जँ केओ आगू आओत तँ सामाजिक चक्रव्यूहमे फँसि जायत । चरित्रहीन कहाओत, अनुचित सम्बन्धक लांछना लागि जयतैक । राजीवबाबू सनक लोक एहि कुरीतिक पृष्ठपोषक छलाह ओ एकर अन्त नहि चाहैत छलाह । हुनका डर होइत छलन्हि जे जँ विधवा विवाह शुरू भ' जायत, तँ हमर भेद खुजि सकैत अछि । हम समाजक बीच उघार भ' जायब । ई सब गप्प थाना प्रभारीकेँ राजीवे बाबूक एकटा पड़ोसी कहने छलथिन्ह । थाना प्रभारी ओहि दुनू विधवाकेँ मुक्त करौलन्हि आ राजीवबाबूकेँ विधवाक प्रतारण आ समाजमे दुष्प्रचार करबाक आरोपमे मुकदमा दर्ज कयलन्हि । निर्मलजी कहलथिन्ह, 'राजीव बाबू ! अपने तँ सिद्धान्तिक लोक थिकहुँ । अपनेसँ ई गलती कोना भेल । अपने तँ दोसरकेँ उपदेश दैत छलियैक ।''

बीचमे एकटा युवक बाजल, ''पर उपदेशे पांडित्यम'' मुदा राजीवबाबूक बकार बन्न छलन्हि । ओ सोचनहुँ नहि छलाह जे हुनकर एहनो दुर्गति भ' सकैत छन्हि । इज्जतिक कबारा बहार भ' गेलन्हि । सम्पूर्ण सामजक लोक दुर छी:, दुर छी: कर' लगलन्हि ।

एहि तरहेँ रिंकी आ निर्मलजीक विवाहक बाधा दूर भ' गेल ।

8.

रतन सेवा निवृत भ' गामहि मे रहैत छलाह । धिया-पूता सब अपना बाल-बच्चाक संग बाहर रहैत छलनि । रतन यावत पटनामे रहथि, तावत यदा-कदा सुकन्यासँ भेंट भ' जाइत छलनि । मन हरियर भ' जाइत छलनि । मुदा एहि ठाम मात्र हुनक स्वरूप संजोगने छलाह । बाल-बच्चाक संकोचे अपन व्यथा ककरो लग व्यक्तो तँ नहि क' सकैत छलाह । एतेक दिन तँ ओ जुआन छलाह, पुरुषार्थ छलनि, तँ ककरो कहने नाक पर माँछी नहि बैस' दैत छलाह, मुदा आब सामर्थहीन भेने ओ अपन गलती अनुभव करैत छलाह । हुनका एकटा संगीक आवश्यकता बुझा रहल छलनि । ओहो संगी एहन जे सतत हुनका संगे रहए, दु:ख-सुख केर भागीदार बनए आ से एके गोटे क' सकैत छलीह । से छलीह सुकन्या । ओ सुकन्या केँ खूब चाहैत छलाह । सुकन्याक स्वरूप दिन-राति हुनका सोझाँ नाचि रहल छलनि । ओ राति-राति भरि ओहिना टकटकी लगौने देखिते रहि जाइत छलाह । राति कखन बीति गेल से पतो नहि चलैत छलनि । मुदा ई गप्प ने ओ सुकन्याकेँ कहि सकैत छलाह आ ने ककरो दोसरकेँ । एहिसँ हुनक परिवारिक स्थिति बिगड़ि सकैत छनि, से केवल हुनकर सोच छलनि । अमिरकान्तबाबू मृत्यु सँ पूर्व ई गप्प मुकेशकेँ कहने छलाह जेना कि हुनका रामदयालजीसँ गप्प भेल छलनि । अचानक एक दिन रतन केर मन बेसी बिगड़ि गेलनि । दूरभाष पर मुकेश आ सुकेशकेँ खबरि भेलनि । दुनू भाय अपन-अपन बाल-बच्चा ल' क' आबि गेलाह । डाक्टरसँ देखौलनि आ पन्द्रह दिनक उपचारक बाद रतन ठीक भेलाह ।

डाक्टरक सलाहक मुताबिक रतन एसकर नहि रहि सकैत छथि । एसकर रहने ओ बड़ सोचैत छथि, जकर असरि हुनका स्वास्थ्य पर पड़ि सकैत छनि ।

मुकेश बाजल, "बाबूजी ! अहाँ हमरे सब लग चलु । हम सब कतेक दिन छुट्टी ल' क' एहि ठाम रहब । तेँ अहाँकेँ जत' इच्छा हो तत' चलू ।"

रतन, "हम गामहिमे रहब । अहाँ सब अपना-अपना ड्यूटी पर जाउ । हम आब ठीक छी । एहि ठाम नौकर तँ अछिये ने ?"

मुकेश, "ठीक छै, तखन हम अपना परिवारकेँ एही ठाम छोड़ि क' जा रहल छी । ओ अहाँक देख-रेख करतीह ।"

रतन, "नहि...नहि... एहन काज नहि करू । हमर जिनगी आब कतेक दिनक अछि । कहुना ने कहुना तँ कटिये जायत । मुदा एहि ठाम परिवार छोड़ने धिया-पूताक पढ़ाइ पर असरि पड़त, से हमरा नीक नहि लागत । हमरा जीवनक इएह तँ मिशन छल ।" मुकेशकेँ स्मरण आबि गेलनि ओ गप्प जे मृत्युसँ किछु दिन पूर्व अमिरकान्त बाबू कहने छलथिन । ओ सुकेश आ परिवारक संग एहि विषय पर विचार-विमर्श कयलनि । अंततः ओ सब एहि निष्कर्ष पर अयलाह जे जँ परिस्थिति अनुकूल हो, तँ बाबूजीक विवाह सुकन्यासँ करा देल जाइनि । एहि विषय केर सूचना बाबूजीकेँ नहि देल जाय । ई एकदम गुप्त राखल जयबाक चाही । मुकेशकेँ सुकन्यासँ गप्प करबाक भार देल गेल । आब एकटा समस्या छल जे मुकेश ने सुकन्याकेँ चिन्हैत छलाह आ ने डेरा देखल छलन्हि । सम्पर्क कयल जाय तँ कोना ? ओ पटना पहुँचलाह आ सुकन्याक आफिस गेलाह । ओहि ठाम एकटा चपरासीसँ सुकन्याक विषय मे पुछलन्हि । ओ हाथक इशारासँ देखा देलकनि । मुकेश हुनका लग गेल आ पुछलक, "की, अपने सुकन्या मैडम थिकहुँ ?"

सुकन्या, "जी, आ अपने के थिकहुँ ?"

मुकेश, "हम मुकेश, रतनजीक बालक" । रतन केर तँ नामे सुनिक' सुकन्या रोमांचित भ' गेलीह । हुनक सुधि-बुधि हेरा गेलनि । कनेक काल तँ ओ अपनो केँ बिसरि गेलीह । पुनः संयमित होइत बजलीह, "कोन प्रयोजनसँ आयल छी ?"

मुकेश, "प्रयोजन तँ अहाँसँ मात्र दस मिनट गप्प करबाक अछि ।"

सुकन्या, "कहू, की कह' चाहैत छी ?"

मुकेश, "एहि ठाम नहि ।"

"तखन कत" ? सुकन्या पूछलथिन ।

मुकेश, "डेरा पर ।"

"ठीक छै, संध्याकाल आउ", सुकन्या बजलीह ।

मुकेश, "मुदा हमरा डेरा देखल नहि अछि । जँ डेरा देखल रहैत तँ आफिस किएक अबितहुँ" । सुकन्या हुनका डेराक पता द' देलथिन । मुकेश तँ चल गेलाह मुदा सुकन्याक मनमे खुदबुदी लागि गेलनि । कोन कारणे मुकेश आयल छथि ? की रतनजीक संग तँ ने किछु...... । हुनका सोझाँ रतनजीक सबटा कृत्य चलचित्र जकाँ नाचि उठलनि । ओ जल्दी-जल्दी अपन काजक निपटारा कयलनि आ घड़ी पर नजरि देलनि । साढ़े चारि बाजि रहल छलैक । पाँच बजेसँ पूर्व आफिस नहि छोड़ि सकैत छलीह । ई आधा घंटा काटब सुकन्याक लेल पहाड़ भ' गेलनि ।

निर्धारित समय पर मुकेश सुकन्याक डेरा पर पहुँचलाह । रामदयालबाबू आ सुकन्याकेँ प्रणाम कयलनि ।

रामदयालजी, "अपने के थिकहुँ, बौआ ?"

मुकेश, "बाबा, हम रतनजीक पुत्र आ अमिरकान्त बाबूक पौत्र मुकेश थिकहुँ" ।

रामदयालजी, "आउ...आउ.... कहू की हाल-चाल अछि ? रतनजी आ अमिरबाबूक हाल-चाल कहल जाय ।"

मुकेश, "बाबा तँ दू वर्ष पूर्वहि स्वर्गीय भ' गेलाह आ बाबूजी आब ठीक छथि ।"

रामदयालजी, "आ...हा...हा... अमिरकान्तजी बड़ नीक आ सोझ लोक छलाह । ओहि इलाकाक भगवान छलाह । ककरो झंझट पाँच मिनटमे फरिया दैत छलाह । आब ओहन लोक कत' भेटताह ?"

सुकन्या, "रतनजी केँ की भेल छलनि । आब केहन छथि ।"

मुकेश, "आब तँ ठीक छथि, मुदा कतेक दिन ठीक रहताह, कहि

नहि सकैत छी । हुनका एसकर नहि रहबाक चाही । डाक्टरो इएह सलाह देने छन्हि । हम सब बहुत प्रयास कयल, अपना संगे ल'जयबाक लेल, मुदा ओ मानितहि नहि छथि ।"

सुकन्या, "तखन की विकल्प सोचल अछि ।"

मुकेश, "विकल्प तँ सोचल अछि, मुदा ओहिमे अपनेक सहयोगक अपेक्षा अछि ।"

सुकन्या, "हमर सहयोग.........हम बूझल नहि ?

मुकेश, "ओ तँ नहि मानैत छथि, मुदा हम सब चाहैत छी, जे हुनक विवाह करा दियैन्हि ।"

सुकन्या किछु बजितथि, ताहिसँ पूर्व रामदयालजी जे चुपचाप सब गप्प सुनि रहल छलाह, बजलाह, "वाह...वाह.... की विलक्षण विचार । बाप बेटाक विवाह कराबैत अछि, ई तँ देखल अछि । मुदा आइ बेटा बापक विवाह करा रहल अछि । ई तँ उदाहरण बनि जायत । ई तँ इतिहासक पन्ना पर लिखा जायत । द्वापर युगमे देवव्रत अपन पिता शान्तनु महाराजक विवाह मत्स्यगंधासँ करौने छलाह । ओहि लेल ओ जीवन पर्यन्त अविवाहित रहि गेलाह । मुकेशजी, हम अहाँक विचारसँ बड़ प्रसन्न छी । आगू चलिक' अहाँ अमिरकान्तबाबूक नाम उज्ज्वल करब । ई हमर दृढ विश्वास अछि ।"

मुकेश सुकन्यासँ बजलाह, "हम अहाँकेँ अपन माय बनाब' चाहैत छी जँ अहाँकेँ कोनो आपत्ति नहि हो, तखन ।"

सुकन्या, "हमरा......" ?

मुकेश, "जी, अहाँकेँ ।"

सुकन्या, "मुदा हम विधवा छी, आ हमरा पर हमर बाबूजी आश्रित छथि । हुनक की होयतनि ।"

मुकेश, "एकर चिंता आब अहाँकेँ नहि करबाक अछि । ई सब आब हमर दायित्व अछि ।"

सुकन्या, "हम एहि विषय पर एखन किछु नहि कहि सकैत छी । हमरा सोचबाक लेल दू-चारि दिनक समय देल जाय ।"

मुकेश, "दू-चारि दिनक किएक, हम अहाँकेँ सात दिनक समय द' रहल छी । अपने एहिपर गम्भीरता पूर्वक सोचल जाय । मुदा आठम दिन हम सब चल जायब । तेँ जँ सब काज ओही बीचमे भ' जाइत तँ नीक रहैत ।" सुकन्याक हाथ मे एकटा पुर्जी दैत पुनः बजलाह, "जँ विचार भ' जायत तँ एहि नम्बर पर टेलीफोन क' देब ।" मुकेश विदा भेलाह तँ रामदयालजी रोकैत कहलथिन, "किछु चाह-जलखै तँ क' लिअऽ ।"

मुकेश, "चाह-जलखै तँ एखन नहि करब, देरी भ' रहल अछि । एक ठाम आर जयबाक अछि । तखन माय केर हाथसँ एक गिलास जल अवश्य पीब ।" मुकेशक गेलाक बाद रामदयालजी सुकन्यासँ पुछलथिन, "बेटा ! अहाँ एतेक सुन्नर अवसर केँ कोना छोड़ि देलहुँ । अहाँकेँ तँ तुरंत स्वीकार क' लेबाक चाही । अहाँ ककरासँ विचार करब । हम तँ कतेक दिनसँ एकरहि प्रतीक्षा क' रहल छलहुँ । कदाचित् हम इएह देखबाक लेल जीबि रहल छी ।"

सुकन्या, "बाबूजी, बिना विचार कयने कोनो निर्णय नहि लेबाक चाही । हम जनैत छी, जे अहाँ केँ विशेष हमर चिंता अछि, मुदा हम अहाँक अभिप्राय बुझैत तँ नहि छलहुँ । तेँ समय लेब आवश्यक छलैक ।"

रामदयालजी, "हम तँ रतनकेँ विधुर होइतहि सोच' लगलहुँ जे कहुना रतन केर संग अहाँक पुनर्विवाह भ' जाय । एहि लेल अमिरकान्तजी सँ सेहो भेट कयलहुँ, मुदा रतन साफ कहि देलनि जे हम विवाह नहि करब । तथापि हम अहाँकेँ रतनजीक संग अयबा-जयबाक अवसर दैत रहलहुँ । कदाचित् हुनक मन बदलि जाइनि, ओ तैयार भ' जाथि । ई तँ भगवानेक कृपा अछि, जे हम सब नहि करा सकलहुँ, ओ रतनजीक बेटा करबा रहल अछि । रतनजी तँ एखनो नहि मानैत छथि ।"

सुकन्या, "ठीक छै, अहाँक आज्ञा हमरा शिरोधार्य अछि ।"

प्रातःकाल रामदयालबाबू मुकेशकेँ टेलीफोन कय अपन सहमति प्रदान कयलथिन ।

मुकेश बजलाह, "बाबा ! कनेक हमरा माँजी सँ गप्प करा दिअऽ ।" रामदयालजी टेलीफोन सुकन्याक हाथ मे देलथिन ।

सुकन्या, "हेलो.......... मुकेश जी ! दोसर दिशसँ मुकेश बजलाह, "हेलो.... माँ जी, गोर लगैत छी । हमरा आइ बड़ प्रसन्नता भेल अछि । मायक मुइलाक बाद ककरो माय नहि भेटैत छैक । आ जँ भेटितो छैक तँ मनोनुकूल नहि । मुदा हमरा आइ मनोनुकूल हमर माय भेटि गेलीह । हमरा सनक भाग्यशाली के होयत ?"

सुकन्या, "हमहू तँ कम भाग्यशाली नहि छी । बीस वर्षसँ बैधव्य जीवन बितौलहुँ । अपना भाग्यकेँ कोसि रहल छलहुँ । मुदा आइ सूदि समेत पूर्ण परिवार पति, बेटा-पुतोहु, पोता-पोती सब भेटि गेल । जकर हम कहिओ कल्पनो नहि कयने छलहुँ । एहि लेल हम अहाँक आभारी छी ।"

मुकेश, "आभारी तँ हम अहाँक छी । अहाँ हमर निवेदन सुनलहुँ । अहाँक स्वीकृतिसँ हमरा बाबूजीकेँ जीवनदान भेटलन्हि अछि आ हम सब भार मुक्त भ' गेलहुँ अछि ।"

दोसर दिन मुकेश आ सुकेश पटना पहुँचलाह । सुकन्या डेरामे नहि छलीह । हुनक कोनो अता-पता नहि छलनि । रामदयालजीक हाल कनैत-कनैत बेहाल छलनि । ओ बजलाह, "सुकन्या काल्हि जे आफिस गेलीह, से एखन धरि आपस नहि आयल छथि । हम राति भरि हुनका प्रतीक्षा मे एहिना बैसल टुक-टुक ताकि रहल छी । टेलीफोन सेहो बन्न छन्हि । मुकेश टेलीफोन लगौलनि, तँ स्वीच ऑफ बाजल । सुकन्या जाहि आफिसमे काज करैत छलीह, ओही आफिसमे विशाल नामक व्यक्ति सेहो काज करैत छलाह । विशाल सुकन्याक अधिकारी छलाह । जखन रतनजी विधुर भ' गेलाह, तँ विशालक बाबूजी अपना बेटीक प्रतिये रतनजीक ओहि ठाम गेल छलाह । मुदा रतनजी विवाह करबाक लेल तैयार नहि भेलाह । जखन हुनका पर दबाब बेसी बढ़ल तँ ओ बजलाह, "जँ हमरासँ अहाँ अपना बेटीक विवाह कराब' चाहैत छी, तँ ओहिसँ नीक होयत जे हुनका गरदनि मे घैल बाँन्हि क' कोनो पोखरि, इनार मे धकेलि दियौन्ह ।" इ गप्प विशालकेँ बुझल छलैक आ ओ एकरहि बदला रतन सँ लेब' चाहैत छल । जखन विशाल केँ पता लगलैक जे रतन आ सुकन्यामे प्रेमालाप चलि रहल छनि । तखनहि सँ ओ सुकन्याक पाछु पड़ि गेल । ओ सुकन्याकेँ अपना चक्रव्यूहमे फँसेबाक प्रयास कर' लागल । ओ सुकन्याकेँ बहुत तरहेँ प्रलोभन देलक, मुदा सुकन्या ओकरा प्रलोभनमे नहि अयलीह । सुकन्या विशालक व्यवहारसँ खुश नहि छलीह, मुदा हुनके अधीन काज करैत छलीह, तेँ चुपचाप बर्दास्त क' लैत छलीह । एक दिन विशाल कोनो काजक बहाने सुकन्याकेँ संध्याकाल रोकबाक प्रयास कयलनि । सुकन्या ई कहि चलि देने रहथि जे घरमे बूढ़ बाबूजी छथि । पता नहि हुनका कखन की आवश्यकता होयतन्हि । तेँ नहि रुकि सकैत छी । जखन विशालकेँ पता लगलैक जे रतन आ सुकन्याक विवाह भ' रहल अछि तखन ओ आफिसक मीटिंगक बहाने सुकन्या केँ ल' गेल । आफिसमे अपनो लेल आ सुकन्या लेल एक-एक मासक छुट्टीक आवेदन द' देलक । सुकन्या केँ दोसर शहर मे ल' गेल आ ओकरा मनाबक प्रयास कर' लागल । सुकन्या कनैत-कनैत बेहाल छलीह । ओ सोचैत छलीह, बाबूजी कोना होयताह आ मुकेश हमरा विषयमे की सोचैत होयताह । मुकेश सुकन्याक आफिस गेलाह । ओहि ठाम पता लगलनि जे सुकन्या आ विशाल एक महीनाक छुट्टी पर बाहर गेल छथि । टेलीफोन पर विशाल सँ सम्पर्क करबाक प्रयास कयल गेल, मुदा ओएह बिमारी-स्वीच ऑफ । मुकेश सोचि रहल छल, सुकन्या एना किएक कयलनि । जँ हुनका विशाल सँ प्रेम रहितनि तँ ओ हमरा अपन स्वीकारोक्ति किएक दितथि, आ रामदयालजीक परेशानी कहि रहल अछि जे कतहुँ गड़बड़ी अछि अवश्य । ओ सीधे एस.पी. कार्यालय गेलाह । संयोगवश एस.पी. सुमन हुनक मित्रे छलथिन । कालेज मे सब संगहि पढ़ैत छलाह । तुनू मे पहिने तँ औपचारिकता भेल । ओकर बाद मुकेश सब वृतान्त सुमन जी केँ सुनौलनि । सुमनजी मुकेशकेँ आश्वस्त कयलनि जे अहाँ एखन जाउ । हम एहि पर विशेष ध्यान राखब । ई काज कोनो दू-चारि दिनक नहि अछि, जे अहाँ छुट्टी ल' क' रहब । हमरा जखन कोनो सुराग भेटत, हम अहाँकेँ सूचित करब । एहिसँ अहाँ निश्चिन्त रहू । ई आब हमर कार्य थीक । सुमनजी प्राथमिकी दर्ज करबैत सघन छापामारी शुरू कयलनि ।

विशालक हेड आफिससँ सम्पर्क कयल गेल । हेड आफिसमे एकटा गोपनीय टेलीफोन नम्बर छलैक । ओहिसँ सम्पर्क कयल गेलैक ।

हेड, "हेलो...हेलो... विशाल जी ।"

विशाल, "जी ।"

हेड, "अहाँ एखन कत' छी ?"

विशाल, "हम तँ एखन छुट्टी मे छी ।"

हेड, "अहाँ छुट्टीमे छी, आ हेड आफिस के एकर कोनो सूचना नहि छैक । से किएक ?"

विशाल, "श्रीमान्, हम तँ किरानी के हेड आफिस के सूचित करबाक लेल निर्देश द' देने छलियैक ।"

हेड, "अहाँक मेमो आइ बीस दिनसँ घुमि रहल अछि, अहीँक आफिस मे । अहाँक कर्मचारी अहाँसँ सम्पर्क करबाक प्रयास क' रहल अछि, मुदा सम्पर्क नहि भ' रहल छैक ।"

विशाल, "कथीक मेमो श्रीमान् ?"

हेड, "किछु आवश्यक कार्यवश तीनटा अधिकारीक प्रतिनियुक्ति हेड आफिस मे कयल गेलनि अछि । या तँ अहाँ काल्हि आबि क' ज्वाइन करू वा अपन फैक्स न. दिअ', त मेमो फैक्स क' देब ।"

विशाल सोचलक जँ फैक्स नम्बर देबैक, तँ मेमो लेबाक लेल पटना जाय पड़त । ओहि ठाम तँ हमरा लोक तकिते होयत । कदाचित् जँ धरा गेलहुँ । तेँ हेडे आफिस जायब नीक रहत । ओ बाजल, "ठीक छै, महाशय ! हम काल्हि आबि रहल छी ।" हेड आफिस एकर सूचना गुप्त रूप सँ एस.पी. सुमन केँ देलनि । सुमनजी सेहो एकटा सिपाहीक संग सामान्य भेष-भूषा मे हेड आफिस पहुँचि गेलाह । हेडकेँ अपन परिचय देलनि आ हुनके बगलमे बैसि गेलाह । कनेक कालक बाद विशाल सेहो आबि गेलाह । हेड बजलाह, "आबि गेलहुँ विशालजी ?"

विशाल, "जी ।"

हेड, "एसकरे, की दुनू गोटे ?"

विशाल, "दुनू गोटे के ? अहाँ तँ हमरा एसकरे ने बजौने छलहुँ ।"

हेड, "बजौने तँ एसकरे छलहुँ, मुदा अहाँक संग सुकन्या सेहो छलीह ने । ओ कत' गेलीह ?"

विशाल, "सुकन्या....के सुकन्या, हमरा संगे कोनो सुकन्या नहि छथि । हम तँ एक मासक छुट्टी ल' क' घुमबाक लेल गेल छलहुँ ।"

हेड, "एस.पी. सुमन ! हम अपन काज तँ क' देलहुँ । आब अपने अपन काज कयल जाय । एहिसँ बेसी ने हमरा अधिकार अछि आ ने हम क' सकैत छी ।"

सुमनजी, "धन्यवाद महोदय ! हँ तँ विशालजी, अहाँ पर एकटा विधवा कमचारी जे अहींक अधीन काज करैत छली, अगबा करबाक आरोप अछि" ।

विशाल, "अहाँ सब की कहि रहल छी, हम किछु नहि बुझि रहल छी ।"

सुमनजी, "मि. विशाल ! एतेक काल हम अहाँक संग नरमी क' रहल छलहुँ । हमरा लग सबटा रिपोर्ट अछि । अहाँ सच-सच कहि दिअ' । अन्यथा अहाँक लेल बहुत खराब होयत ।"

विशाल, "हम एकदम सत्य कहि रहल छी । हमरा किछु नहि बुझल अछि ।" सुमनजीक कतबो प्रयास कयलाक बादो जखन विशाल किछु कहबाक लेल तैयार नहि भेल, तखन सुमनजी हेड सँ कहलथिन, "विशाल सुकन्याक फर्जी दस्तखत क' हुनकर छुट्टी स्वीकृत कयलनि । एहि फरजरीक लेल हिनका निलंबित कयल जाय आ सिपाहीकेँ आदेश देलथिन, विशाल के हथकड़ी लगाउ । विशालकेँ हथकड़ी लगौलाक बाद जखन पुलिसिया ट्रीटमेंट शुरु भेल, तखन बिशाल टुटि गेल । ओकर सब ऐंठी हेरा गेलैक । ओ बाजल, "श्रीमान् ! ई गप्प सही अछि । हम सुकन्या

केँ ल' क' अवश्य आयल छलहुँ, मुदा ओ दू दिन पहिने हमरासँ बिछुरि गेलीह वा कतहु चल गेलीह । हम हुनके तकबामे लागल छी । ओ कतहु भेटि नहि रहल छथि । हम तँ अपने असमंजस मे पड़ल छी, की करी, की नहि" ।

सुमनजी, "मि. विशाल, अहाँ हुनका ताकि रहल छी वा नहि, ई तँ बादक गप्प भेल, पहिने ई कहू, अहाँ हुनका अगबा किएक कयलहुँ ।"

विशाल, "हम हुनका सँ प्रेम करैत छी आ विवाह कर' चाहैत छलहुँ ।"

सुमनजी, "की, ओहो अहाँसँ प्रेम करैत छलीह ।"

विशाल, "जी" ।

सुमनजी, "एकदम झूठ, जँ ओहो अहाँसँ प्रेम करितथि, तँ भागि क' नहि आब' पड़ैत आ एहि ठाम सँ सेहो ओ नहि जइतथि । हुनक अचानक अहाँ लगसँ भागब, ई सिद्ध करैत अछि जे अहाँ हुनका संग जबर्दस्ती कयल अछि ।"

विशाल, "जी नहि श्रीमान् ! हम जबर्दस्ती नहि कयल अछि । हम सब तँ राजी-खुशी सँ आयल छलहुँ ।"

सुमन, "मि. विशाल, हम सब भेड़-बकरी नहि चरबैत छी । दिन-राति लोकेक संग रहैत छी । ओकर एक शब्द पर पूर्ण घटनाक जानकारी भ' जाइत अछि । एकसँ एक शातिर-बदमास के पकड़ि लैत छी । अहाँ तँ एखन नवसिखुआ लगैत छी ।"

विशाल, "श्रीमान् ! हम आ सुकन्या एक दोसरा सँ प्रेम करैत छी आ दुनू बालिग छी । तेँ हमरा पर कोनो कारबाई करब उचित नहि ।"

सुमनजी, "आब ई सब गप्प अदालतमे बाजब । एखन हवालात चलू । आवश्यक कारबाई पूर्ण करैत एस.पी. सुमन विशाल केँ हथकड़ी लगा क' जेल पठा देलनि आ पुनः सुकन्याक खोज मे लागि गेलाह ।

9.

चन्द्रपुरा मे एकटा साहूकार छलाह आ नाम छलनि सेवकराम । सेवकराम शक्तिशाली आ प्रभुत्व सम्पन्न लोक छलाह । दस-बीस टा लठैत पोसने छलाह जकरा बलेँ लहना-तगादाक काज करैत छलाह । अनाथालय आ विधवा आश्रमक प्रमुख संचालक सेहो छलाह । चन्द्रपुरा मे विशेष मजदूर वर्गक लोक छलाह आ ओहि ठामक मुख्य धंधा खेती छल । विशेष लोकक खेत सेवकरामक ओहि ठाम भरना छलैक । खेतक उपजा मे एक चौथाई किसानकेँ आ तीन चौथाई सेवकरामक बखारी मे चल जाइत छल । लठैतक डरेँ ककरो बजबाक साहस नहि होइत छलैक, आ जँ केओ साहस कयलक, तँ सेवकरामक लठैत ओकर एतेक धुनाई करैत छलैक जे ओ कोनो काजक नहि रहि जाइत छल । चन्द्रपुराक पश्चिम एकटा धार बहैत छलैक । ओहि ठाम पटौनीक साधन मात्र ओएह धार छलैक । ओकरो पर सेवकरामक मनमानी चलैत छलैक । बिना ओकरा अनुमतिक केओ ओहिसँ अपन खेत नहि पटा सकैत छल । ओ अनाथालयक बच्चा सभ सँ गामे-गामे भीख मँगबावैत छल । ओकरा सबकेँ भोजनक नाम पर गारि-मारिसँ बेसी किछुओ नहि दैत छलैक । विधवा आश्रममे विधवा सभक शोषण करैत छलैक । हुनका सभकेँ देह व्यापारक लेल बाध्य कयल जाइत छलन्हि । विरोध केनिहारिकेँ यातना भोग' पड़ैत छलनि । विरोध केनिहारिकें सभक सोझाँ निर्वस्त्र तक क' देल जाइत छलैक । तेँ एहन दुःसाहस केओ नहि करैत छल । इलाकामे सोर छलैक जे सेवकराम सनक धर्मात्मा, परोपकारी आ दानवीर केओ नहि अछि । मुदा पर्दाक पाछाँ ओ व्याभिचारी, लुट-खसोट कयनिहार आ शोषक केर प्रतिमूर्ति छल । बाहरसँ गाम हरियरीसँ परिपूर्ण छल, मुदा भीतर कोनो गरीबक चुल्हि दुनू साँझ नहि पजरैत छलैक । सेवकराम विधवा विवाहक घोर विरोधी छलाह । एहि लेल जँ विधवा विवाह होमए लागत तँ हुनका आश्रममे के रहत, आ हुनकर धंधा कोना फरत-फुलायत । ओ कहैत छलाह, जकर भगवाने सब सुख छिनि लेलनि, नीक भोजन, नीक कपड़ा, शृंगार-पेटार आदि सँ बंचित क' देलनि, ओकरा लोक की क' सकैत

अछि । ई तँ विधाताक डांग थिक आ पूर्व जन्मक अरजल कृत्य । जँ अहाँ विवाह करयबो करबैक आ पुनः विधवा भ' जायत, तखन की करबैक । एहिसँ समाजक जे संरचना अछि, ओ बिगड़ि जायत, दूषित भ' जायत । तेँ एहि विषय पर सोचबो मूर्खताक सिवा किछु नहि थीक । ओ इहो प्रचारित करैत छलाह जे विधवा सभक जीवन-यापन लेल विधवा आश्रम खोलि देने छियैक । इलाकाक अधिकांश विधवा ओहिमे सुखपूर्वक रहि रहल छथि । हुनक सम्मानक पूर्ण ध्यान राखल जाइत छनि । जे एक बेर आबि जाइत छथि, हुनका आश्रम छोड़ि जयबाक मन नहि होइत छन्हि । सत्यता ई छल, जे विधवा सबकेँ प्रलोभन द' क' आनल जाइत छल, आ ओहि ठाम हुनका जे दुर्दशा होइत छल, तकर वर्णन नहि । जँ केओ भगबाक प्रयास करैत छलीह तँ सेवकरामक गुण्डा सभ हुनकर जमिक' कपाल-क्रिया करैत छलन्हि । आश्रमक प्रमुख छलीह कुन्ती । कुन्ती विधवा होइतहुँ काफी बलगर छलीह । ओ अंग्रेजो सिपाहीसँ बेसी तानाशाह छलीह । एक बेर जे ओहि दलदल मे फँसि गेल, तकर बहरायब कठिन छलैक । एहि आश्रम सँ सेवकरामक मन-मिजाज सेहो बनि जाइत छलनि आ कमाइ सेहो चिक्कन होइत छलनि ।

ओही गाममे एकटा पढ़ल-लिखल युवक छल आ नाम छलैक दिनकर । दिनकर सेवकरामक सब करतूतसँ भिज्ञ छल । ओ सेवकरामक घोर विरोधी छल, मुदा छल तँ एसकरे । तेँ ओतेक प्रभावी नहि छल । तथापि यदा-कदा ढेपा अवश्य फेकि दैत छल, जाहिसँ सेवकराम तिलमिला जाइत छल । सेवकराम दिनकरकेँ गामसँ भगाब' चाहैत छल । एकरा लेल ओ कतेको बेर प्रयास कयलक । ओकरा पर गलत आरोप सिद्ध क' समाजसँ बहिष्कृत करौलक, मुदा गामसँ निकालबा मे सफल नहि भेल । एकर कारण छलैक दिनकरक साहस आ आत्म विश्वास । दिनकर छल तँ दुबरे-पातर, मुदा एतेक साहसी जकर वर्णन नहि । एक बेर सेवकरामक सेना एकटा विधवा, जकर नाम उर्वशी छलैक, बलजोरी पकड़ि क' आश्रम ल' जयबाक प्रयास कयलक । उर्वशीक हाल कनैत-कनैत बेहाल छल । ओहि ठाम भीड़ मे कतेको प्रत्यक्षदर्शी छलाह, मुदा उर्वशीकेँ छोड़यबाक साहस किनको नहि भेल । स्वयं उर्वशीक माय-बाप किछु

नहि क' पओलक । दिनकर ओहि ठाम बादमे पहुँचल, आ सेवकरामक तीनटा लठैतकेँ धरधरा क' खसा देलक । से देखि सेवकरामक लठैत सभ ठकमका गेल । ओकरा एहन आशा नहि छलैक । ओहि ठामक तमाशा देखनिहार लोकसभ सेहो होहकारा देलक आ सेवकरामक लठैतकेँ पड़एबाक लेल बाध्य होम' पड़लैक । तेँ सेवकरामक सेना केँ दिनकरसँ भिड़बाक हिम्मत नहि होइत छलैक । ओहि ठामक पुलिस सेहो सेवकरामक पालतू छलैक । ओहो सेवकरामक सोझाँ अपन नांगरि डोलयबाक सिवाय आर किछु नहि करैत छल ।

एक दिन उर्वशी अपना खेत मे काज करैत छलि । कनेक दूर पर दिनकर सेहो अपना खेतमे खाद छिटि रहल छल । ओहि दिनक घटना उर्वशीकेँ सोचबाक लेल बाध्य क' देलकैक जे सौंसे गाम मे एकटा दिनकरे अछि, जे पुरुष अछि । जँ दिनकर नहि रहैत तँ ओहि दिन हमरा सेवकरामक रखैल बनबासँ केओ रोकि नहि सकैत । ओकरा भीतरे-भीतर दिनकरसँ प्रेम भ' गेलैक । ओ ससरि क' दिनकरक खेत लग गेल आ दिनकरसँ बाजलि, "दिनकरजी ! जँ अहाँकेँ कोनो आपत्ति नहि हो तँ, एकटा गप्प पुछू ?"

दिनकर, "पुछू, की पुछ' चाहैत छी ?"

उर्वशी, "अहाँ अपना ऊपर एतेक पैघ खतरा उठा क' जे हमर रक्षा कयल, से किएक ? अहाँकेँ सेवकरामक गुण्डा नुकसानो तँ पहुँचा सकैत छल । अहाँ एसकर छलहुँ आ ओ आठ-दस गोटे ।"

दिनकर, "मरबाक तँ एक दिन सबकेँ छैके । डेरा क' जीयब हमर स्वभाव नहि अछि । ओना सेवकराम जे किछु क' रहल अछि, हम ओकर विरोध करैत तँ छी, मुदा सीधा नहि । हमरा सोझाँ जँ ककरो संग अन्याय हेतैक, हम से नहि होम' देबैक । ओहि दिनक घटनासँ एतेक तँ भेलैक, जे सेवकरामक डर लोक केँ किछु कम भ' गेलैक । इएह तँ हमर उद्येश्य अछि । जाहि दिन लोकक मनसँ सेवकरामक डर बहार भ' जायत, ओही दिन हम चैनक साँस लेब ।"

उर्वशी, “हमरा तँ अपने पुनर्जन्म देलहुँ । अपना जान पर खेलि क' पतित होयबासँ बचौलहुँ । हम एहि उपकारक लेल एहि जीवन केँ अहाँक सहयोगमे लगाब' चाहैत छी ।”

दिनकर, “देखू, अहाँ स्त्री छी । अहाँ जँ हमर संग देब, तँ ओहिना लोक बदनाम करत । सेवकराम केँ सेहो हमरा विरुद्ध एकटा हथियार भेटि जयतैक” ।

उर्वशी, “हमरा आब ककरो परवाहि नहि अछि ।”

दिनकर, “मुदा हमरा तँ अछि । अहाँ एकटा काज करू । जे किछु भ' रहल छैक, ओकर सूचना चुपचाप हमरा देल करू आ कोशिश करू आश्रमक कोनो विधवा सँ दोस्ती करबाक । ओकरासँ सब सूचना प्राप्त होयत ।'' ओहि दिनसँ दिनकर आ उर्वशीक भेट बराबरि होम' लागल छलनि संगहि सूचनाक आदान-प्रदान सेहो ।

यद्यपि दिनकर सेवकराम आ पुलिस इंचार्जक शिकायत ऊपर धरि कयने छल, मुदा स्थानीय अधिकारीक मिली-भगतक कारण कोनो कारबाइ नहि होइत छल । दिनकर आ उर्वशीक बीच एतेक प्रेम भ' गेल जे दुनू विवाहो कर' चाहैत छल मुदा ओहिमे बाधक छल सेवकराम । उर्वशीक माय-बाप भीतरसँ चाहैत छल, मुदा ऊपरसँ सेवकरामक डरेँ एकर विरोध सेहो करैत छल । ओ सभ नहि चाहैत छल जे सेवकरामक कोपभाजन बनीं । सेवकरामक एजेंन्ट उर्वशीकेँ कतेको प्रलोभन देलक, मुदा उर्वशी ओकर झाँसामे नहि आयल । एक दिन दिनकर आ उर्वशी गामसँ बाहर जयबाक विचार कयलक । गाममे रहि दुनूक प्रेमालापमे बाधा उत्पन्न होइत छलैक । ओ दुनू बाहरे जा क' विवाहक विषयमे सोचि रहल छल । कोना ने कोना एकर भनक सेवकराम के लागि गेलैक । ओ उर्वशीक बाप रामधन केँ बजौलक आ पुछलक, “रामधन, तोँ उर्वशीक विवाह कराब' चाहैत छेँ, आ सेहो दिनकरक संग ।”

रामधन, “नहि सरकार ! एहन तँ कोनो गप्प नहि छैक ।”

सेवकराम, “हमर जासूस हमरा गलत सूचना नहि द' सकैत अछि । की तँ तू झूठ बाजि रहल छेँ, अथवा तोरा ई गप्प बूझल नहि छौक । तोरा घरक लोक तोरहुँसँ ई बात छिपौने छौक ।''

रामधन, “हम एहि विषयमे किछु नहि कहि सकैत छी, सरकार ।”

सेवकराम, “दिनकर ठीक लोक नहि अछि । ओकरा अपना रहबाक तँ कोनो ठौरे नहि छैक, तोरा बेटी केँ कत' रखतौक । ओ समाज सँ बहिष्कृत अछि । जँ ओकरा संग सम्बन्ध जोड़बेँ, तँ तोहूँ अपनाकेँ समाजसँ बाहरे बूझ । आ खेत-पथार जतेक देने छियौक से सब छोड़ि दे ।'' रामधन चुपचाप ओहि ठाम सँ चल आयल । ओ सेवकरामक गप्प मे हँ, हू, किछु नहि बाजल । किछु बजबाक माने भेलैक बिढ़नीक खोंतामे हाथ देब, आ जँ हाथ देबैक, तँ बिन्हबे करत ।

ओहिठामक थाना इंन्चार्जक बदली भ' गेलैक । दोसर नया इंन्चार्ज अयलाह । दिनकर हुनक भेट कयलक आ सबटा आवेदन देखौलक । ओ पुछलथिन, “अहाँक नाम ?”

दिनकर, “दिनकर भारती ।”

इन्चार्ज, “ओ ! अहीँ थिकहुँ दिनकर भारती ।”

दिनकर, “जी , मुदा श्रीमान्, अहाँ हमरा कोना जनैत छी ?”

इन्चार्ज, “अरे ! अहाँकेँ के नहि जनैत अछि । अहाँकेँ ऊपर सँ नीचाँ धरि सब जनैत अछि, मुदा नामेसँ चेहरासँ नहि ।”

दिनकर, “से कोना श्रीमान् ?”

इन्चार्ज, “अहाँक कागत तँ तहलका मचा देने अछि । ओहूमे सबसँ अधिक विधवा आश्रमबला । हमरा लग अहाँक पठाओल सब कागत अछि । हम हेड आफिस सँ एही लेल आयल छी । एखन हम सबटा कागत केँ देखि रहल छी । जखन अहाँकेँ समाद देब, आबि जायब । तखन हम सब एहि योजना पर विचार करब ।” दिनकर आपस घर चल गेल । दोसर दिन प्रातःकाल सेवकराम पहुँचल । ओना तँ सेवकराम बजाहटि पर अबैत छल आ एहि लेल ओ राति भरि प्रतीक्षा कयलक । जखन केओ बजाब' नहि गेलैक तँ हारि क' अपनहि आयल छल ।

इन्चार्ज, "अहाँ के थिकहुँ आ कोन काज सँ आयल छी ?"

सेवकराम, "सरकार ! हम सेवकराम, अपनेक आ अपनेक विभागक पुरान सेवक, अपनेक सेवा मे हाजिर छी । अपने नव स्थान पर आयल छियैक, कोनो वस्तुक आवश्यकता होअय, तँ सेवकराम कें आदेश देल जयतैक । सेवकराम सेवामे हाजिर भ' जायत ।

इन्चार्ज, "ठीक छै, ठीक छै, सेवकराम जी, हमरा कोनो वस्तुक आवश्यकता होयत तँ हम अवश्य अहाँकें सूचित करब । एखन अपने जाउ । एखन हमरा आफिस के किछु ठीकठाक करबाक अछि । सबटा फाइल मे देवाड़ लागल छैक, ओकरा साफ करबाक अछि ।"

सेवकराम, "अपने संकोच नहि करब । अपने सँ पहिने जे साहेब सभ छलाह, हम सबकें सेवा करैत छलियन्हि । ओ लोकनि गद्गद् भ' क' एहि ठाम सँ गेल छथि ।"

इन्चार्ज, "जी, हमरा सब बूझल अछि, अपनेक सेवा कार्य ।" सेवकरामकें गेलाक बाद इन्चार्ज दिनकर आ एकटा सिपाहीकें बजौलनि, जकर वयस ओहि चौकी मे सबसँ बेसी छलैक । ओ सीधा-सपाटा सेहो छल, बेसी लाई-लपटाइमे नहि रहैत छल । तखन इन्चार्जक आदेश तँ मानहिटा पड़तैक । इन्चार्ज ओहि सिपाही सँ पुछलथिन, "अहाँ सेवकराम कें जनैत छी ?"

सिपाही, "जी, खूब नीक जकाँ जनैत छियैक ।"

इन्चार्ज, "ओ केहन लोक अछि ?"

सिपाही, "सरकार ! ओ एकदम घटिया लोक अछि । सौंसे गाम कें नथने अछि । डरसँ केओ किछु नहि बजैत छैक । दसटा गुण्डा सेहो पोसने अछि । ककर दिन अदिन भेलैक अछि, जे किछु बाजत ।"

इन्चार्ज, "अहाँ सब ओहि गुण्डा सभ सँ डेरा जाइत छलहुँ ?"

सिपाही, "सरकार ! जखन इन्चार्जे ओकरा अधीन भ' गेल छलाह, तँ हम सब की करितहुँ ।"

इन्चार्ज, "की, ओ कोनो गैर कानूनी धंधा सेहो करैत अछि ?"

सिपाही, "सरकार ! ओकर सबटा धंधा गैर कानूनीये छैक । ओ विधवा आश्रम चलबैत अछि । विधवा सभक शोषण करैत अछि । ओ ओकर मूल रोजगार आ कमाइक साधन थीक । अनाथ बच्चा सबसँ शहर मे भीख मँगबाबैत अछि । लहना-तगादा लोककें दैत अछि किछु आ कागत पर लिखैत अछि किछु । एहि ठामक मूर्ख जनता किछु नहि बुझैत अछि । साल दू साल मे सूदि समेत जोड़ि क' ओकर सबटा सम्पति हड़पि लैत अछि ।"

इन्चार्य, "एहि पर आइ धरि कारबाई किएक नहि भेल, किछु कहि सकैत छी ?"

सिपाही, "जी सरकार ! ओना तँ नहि कहितहुँ, मुदा जखन अहाँ इन्चार्ज भ' क' पूछि रहल छी, ताहुमे अहाँ एहि ठामक लेल नव छी । तें हमर कर्त्तव्य अछि, जे अहाँ के सब वस्तुस्थितिसँ अवगत करा दी । तें बहुत किछु कहि सकैत छी । एहि चौकीक सब सिपाही आ इन्वार्ज बीकि गेल छलाह । ओतबहि नहि, जत' डिपटी साहेब ओकर पैरवीकार छथि, ओत' दोसर की बाजि सकैत अछि ? हम सब तँ ओकरा सोझाँ कुकुर जकाँ नांगरि डोलबैत आ मुँह बौने ठाढ़ रहैत छी, एहि लेल जे कखन मुँह पर कौड़ा फेकत ।"

इन्चार्ज, "आर किछु अहाँ कें बुझल अछि ?"

सिपाही, "सरकार ! बुझल तँ सब किछु अछि । मुदा हम बुझि नहि रहल छी जे की कहू, की नहि । तखन अपने जे किछु पूछब, हम ओकर सही-सही उत्तर देब । मुदा सरकार ! एतेक तँ कोनो साहेब नहि पुछैत छलाह ?"

इन्चार्ज, "एहि ठाम सँ एस.पी. साहेब कें किछु शिकायत प्राप्त भेलनि अछि । हमरा ओकर जाँच करबाक अछि । शिकायत कयनिहार तँ ओहुना झूठ-मूठक शिकायत क' दैत छैक । तें हम एहि शिकायतक सत्यता देख' चाहैत छी । ओकर बाद हमरा जाँचमे मदति भेटत । कहू तँ, दस वर्ष पूर्व एहि ठामक इन्चार्जक संग की भेल छलैक" ।

सिपाही, "सरकार ! ओं गप्प नहि पूछू, ओकर स्मरण होइतहि देह सिहरि उठैत अछि । एहन वीभत्स घटना तँ एकटा आमो आदमीक संग नहि देखल अछि ।"

इन्चार्ज, "मुदा हमरा तँ सत्य बूझब आवश्यक अछि ।"

सिपाही, "दस वर्ष पूर्व एहि चौकी मे इन्चार्ज प्रताप कुमार आयल छलाह । ओहो अहीं सनक कर्त्तव्यनिष्ठ आ छरहरे जुआन छलाह । दस-दस गोटेक संग एसकरहि भीड़ि जाइत छलाह । जेहने नाम तेहने फूर्ति, एकदम बिजलीक करंट जकाँ । हालहिमे विवाह भेल छलनि । परिवारक संगहि रहैत छलाह । एक दिन सेवकराम एही ठाम चौकी मे हुनका संग अभद्रता कयलक । ओकरा तँ डिप्टी साहेब केर शह वा बल छलैक । इन्चार्ज डिप्टी साहेबसँ गप्प कयलनि । डिप्टी साहेब गप्पकेँ अनठयबाक लेल कहलथिन, मुदा इन्चार्ज केँ ई अपमान असह्य बुझना गेलनि । ओ सेवकराकेँ नकेल पहिरयबाक लेल ठानि लेलनि । ओकर सब अड्डा पर अपन नजरि राख' लगलाह । ओकर कतेको मुलाजिम के हवालात पठा देलनि । सेवकरामक स्थिति भिखमंगा सनक भ' गेल छलैक । हमरो सबकेँ ओकरा ऊपर दया अबैत छल । डिप्टी साहेब स्वयं आबि क' प्रताप बाबूकेँ मना क' गेलाह, मुदा ओ नहि मानलनि । नतीजा बड़ खराब भेलनि । हम बयान नहि क' पायब ।"

इन्चार्ज, "हम पूरा वृत्तान्त सुन' चाहैत छी । ओही हिसाब सँ ने हमहूँ डेग बढ़ायब"।

सिपाही, "एक दिन इन्चार्ज, डिप्टी साहेब ओहि ठाम मिटिंग मे गेलाह वा डिप्टी साहेब हुनका बजौलथिन्ह, कहि नहि सकैत छी । ओ राति मे नहि आबि सकलाह । हुनक परिवार एही ठाम छलनि आ देखबा-सुनबामे सेहो बड़ सुन्नरि । बाजब एकदम मौध सनक । एहि ठाम सेवकराम आबि क' सब सिपाहीकेँ खूब शराब पिआ क' बेहोश क' देलक । एकहुटा सिपाही उठि क' ठीकसँ ठाढ़ो नहि भ' सकैत छल । ओ सभ चौकीक रक्षा की करैत । सेवकराम एहि स्थितिक फायदा उठा इन्वार्जक डेरा मे घुसि गेल आ जबर्दस्ती दुष्कर्म कयलक । प्रातःकाल

जखन इन्चार्ज अयलाह, आ सब गप्प बुझलनि तँ ओ सबटा सामानक संग पता नहि कत' चल गेलाह ।''

इन्चार्ज, "ठीक छै, अहाँ जाउ । सिपाही चल गेल । इन्चार्ज दिनकरसँ बजलाह, "दिनकरजी, कार्य कठिन अछि, मुदा असम्भव नहि । एहि मे योजनाबद्ध तरीकासँ फूकि-फूकि क' डेग राख' पड़त । हम दू-चारि दिन मे हेड आफिससँ अबैत छी । अहाँ तावत एकटा एहन लोककेँ तैयार करू जे हमरा गहिकींक विषयमे सही सूचना द' सकए । हम ओकरा सब केँ रंगे हाथ पकड़' चाहैत छी । तेँ सब काज पूर्ण तैयारी आ होशियारीसँ होयबाक चाही ।"

दिनकर, "जी श्रीमान्, हम कोशिश करैत छी ।"

इन्चार्ज, "ई भार हम एहि लेल अहाँ केँ द' रहल छी, किएक तँ अहाँ एहि ठामक मूल निवासी थिकहुँ । अहाँकेँ एहि ठामक घाट-घाट बूझल होयत आ हम तँ एहि ठामक लेल अनठीया छी । हमर अपनहुँ लोक कतेक हमर संग देत कहि नहि सकैत छी ।"

इन्चार्ज दोसर दिन हेड आफिस गेलाह । ओहि ठाम एस.पी. साहेब केर भेंट कयलनि आ सब वस्तु स्थितिसँ अवगत करौलथिन । ओ हिनका अपन विश्वस्त दू टा सिपाही देलथिन आ संगहि आश्वस्त कयलथिन जे हर स्थितिमे हम अहाँक संग छी । अहाँ कोनो चिंता नहि करब आ जखन आवश्यकता होयतैक, हम हाजिर भ' जायब । जँ आवश्यक होअय, तँ अहाँ डी.एस.पी.क आदेश नहि मानब । हम बूझि लेब ।

10.

सुकन्या विशाल सँ तंग आबि गेल छलीह । ओ हिनका होटले होटल घुमाबैत छलनि । कोनो स्थान पर दू दिनसँ बेसी नहि रखैत छलनि । संगहि ओ सहवासक लेल सेहो प्रताड़ित करैत छलनि । मुदा सुकन्या एहि सभक लेल तैयार नहि छलीह । ओ हिनका संग अमानवीय व्यवहार सेहो करैत छलनि । विरोध कयला पर हाथ आ पयर मे कतेको ठाम सिगरेटसँ

जरा देने छलनि । एक दिन विशाल होटलसँ कतहु बाहर गेलैक । संयोगवश ओहि दिन केबाड़ खुजले रहि गेल । जखन कि ओ ताला बंद क' बहराइत छल । सुकन्या मौका देखि होटल सँ बाहर भ' गेलीह । ई स्थान हुनका लेल अपरिचित छल । संग मे टको-पाइ नहि छलनि । ओ पूछि-पाछि क' स्टेशन अयलीह आ एकटा रेलगाड़ी जे खुज'बला छलैक, ओहि पर बैसि गेलीह । पूस मास होइतो सुकन्या घामसँ तर-बतर छलीह । एक तँ होटलसँ स्टेशन पयरे भागि क' अयलीह आ दोसर विशालक हाथेँ पकड़यबाक डर सेहो छलनि । जखन गाड़ी पूर्ण गतिमे आबि गेल, तखन सुकन्याकेँ जानमे जान अयलनि । ओही डिब्बामे एकटा महिला यात्री सेहो यात्रा क' रहल छलीह । हुनकर नाम चमेली छलनि । चमेलीकेँ बुझबामे आबि गेलनि जे ई महिला यात्री जे एखन रेलमे सबार भेलीह अछि, किछु परेशान लागि रहल छथि । चमेली पेशासँ बाईजी छलीह आ ओ एहन मौका केँ गमाब' नहि चाहैत छलीह । ओ सहटि क' सुकन्याक बगलमे आबि गेलीह आ बजलीह, "बेटी ! किएक एतेक घबरायल लगैत छी ? कत' जयबाक अछि ?" सुकन्या बात बदलैत बजलीह, "हमरा संग हमर बाबू जी छलाह, ओ कतहुँ छुटि गेलाह आ हमरा पटना जयबाक अछि ।"

चमेली, "मुदा पटना तँ ई गाड़ी नहि जायत । ई तँ मुम्बई जा रहल अछि ।"

सुकन्या, "ठीक छै, जत' गाड़ी ठाढ़ होयत, हम उतरि जायब ।"

चमेली, "अहाँक नाम की अछि ?"

सुकन्या, "सुकन्या ।"

चमेली, "अहाँक संगमे टिकट आ पाइ-कौड़ी अछि ।"

सुकन्या, "नहि, सब किछु तँ बाबूए जीक संग मे अछि ।"

चमेली, "कोनो बात नहि, अहाँ जत' धरि चाही चलि सकैत छी । मुदा बिना बाबूजीक अहाँ कोना आ कत' जायब । ओना हम मुम्बई मे एकटा नारी कल्याण केन्द्र चला रहल छी । जे केओ हेरायल-भुतिआयल लोक ओहिमे अबैत छथि, हुनका ओहि ठाम रखैत छी आ ओ जखन चाहैत

छथि, अपना परिजनक पता लगा क' अपन घर चल जाइत छथि । जँ अहाँ केँ कोनो आपत्ति नहि हो तँ अहाँ हमरा संगे चलि सकैत छी ।"

सुकन्या चमेली के कोनो उत्तर नहि देलथिन । तावत टी.टी. बाबू आबि गेलाह आ सुकन्यासँ टिकट मँगलथिन्ह । चमेली बजलीह, ई हमरा संगे छथि आ ओ अपन टिकट देखा देलथिन । गाड़ी तेज गतिसँ चलि रहल छल । ओतबहि तेज गतिये सुकन्या सोचि रहल छलीह– बाबूजी कोना होयताह, मुकेश की सोचैत होयताह, मुदा हम कइओ की सकैत छी । बिना टिकटक एतेक दूरक यात्रा कोना करब । मन होइत छलनि, जे गाड़ी सँ कूदि जान द' दी । फेर सोचैत छलीह जे बूढ़ बाबूजीकेँ के देखत ? एही सोचमे पता नहि कखन सुकन्याकेँ आँखि लागि गेलनि । हुनक आँखि तखन खुजल, जखन चमेली बजलीह, "बेटी ! मुम्बइ आबि गेल । अहाँ कत' जायब ?" सुकन्या चुपचाप बिना किछु कहने चमेलीक पछोड़ ध' लेलनि । सुकन्या चमेली बाइ केर कोठा पर पहुँचि गेलीह । तीन-चारि दिनमे सुकन्या केँ सब किछु बुझबामे आबि गेलनि । मुदा ओ विवश छलीह । एक मास बाद चमेली बाइ सुकन्या केँ बजौलकनि आ पुछलकनि, "बेटी सुकन्या, आब तँ एक मास भ' गेलैक, खूब आराम कयने होयब । आब तँ अपन राज-काज सम्हारू ।"

सुकन्या, "केहन राज-काज ?"

चमेली, "एहि ठाम जे कारबार चलैत छै, से राज-काज ।"

सुकन्या, "ई सब हमरासँ नहि होयत । अहाँ तँ कहने छलहुँ, जे गाम पठा देब । हमरा गाम पठा दिअऽ ।"

चमेली, "गाम जा क' की करब ? एकटा विधवा के हमरा समाज मे कतेक इज्जति छैक, हमहूँ जनैत छी । ओहुना ककरो घर जायत, तँ लोक ओकरासँ कन्नीये कटायत । खास क' जँ विवाह दान केर अवसर पर जायत, तँ ओकरा सब दूर छिः करत आ बाजत, ई अलच्छी कत' सँ आबि गेल आ एहि ठाम अहाँ एकसँ एक रईसकेँ अपना आँगुरक इशारा पर नचा सकैत छी । सब अहाँक सोझाँ गुलाम जकाँ रहत । बस एक बेर खाली तैयार होयबाक काज अछि ।"

सुकन्या, "नहि, नहि हम ई सब नहि करब ।"

चमेली, "हम अहाँक संग जोर-जबर्दस्ती नहि करब । अहाँ जाय चाहैत छी, तँ अवश्य जाउ, मुदा एकटा गप्प सुनि लिअ' । एहि ठाम सँ जायब आसान नहि अछि आ जँ चलिओ जायब, तँ अहाँक ऊपर जे कोठाक ठप्पा लागि गेल, से मेटायब कठिन अछि । समाज अहाँ केँ जीब' नहि देत ।" सुकन्या बड़ असमंजसमे पड़ि गेलीह । दोसर दिन रातिक आठ बाजि रहल छलैक । बाजार एकदम अँगैठी ल' रहल छल । सब अपन-अपन गाहकि संग धंधामे लिप्त छल । केवल सुकन्या मुँह लटकौने अपना कक्षमे बैसि अपन भाग्यकेँ कोसि रहल छलीह । अचानक गली मे पुलिस-पुलिस शोर भेलैक । सब केओ जे जाही अवस्था मे छलीह, भागि पड़यलीह । मौका देखि सुकन्या सेहो भागि पड़यलीह । ओ सोचैत छथि, पुनः ने कोनो एहने दल-दलमे फँसि जाई, ताहि सँ नीक आत्म हात्या क' ली । तावत ओ एकटा धारक कछेर पर पहुँचि गेलीह । धार मे अथाह जल छलैक आ जल मे वेग सेहो । सुकन्या ओहि धार मे कूदि गेलीह, आ जखन हुनका होश भेलनि, तँ अपना केँ पुनः धारक कछेरमे पओलन्हि जाहि ठाम दूटा विधवा हुनक सेवा-सुश्रूषा करैत, हुनका होशमे अनबाक प्रयास क' रहल छलीह । ओ दुनू विधवा चन्द्रपुरा विधवा आश्रमक परिचारिका छलीह आ ओहि ठाम स्नान करबा लेल आयल छलीह । हुनका दुनूक नाम कमला आ विमला छलन्हि । जखन सुकन्या होश मे आबि गेलीह, तँ कमला पुछलथिन्ह, "की नाम थीक अहाँक ?"

सुकन्या, "हमर नाम सुकन्या थीक ।"

कमला, "कत' केर रहनिहारि छी ?"

सुकन्या, "आब ई सब बुझि क' की करब ।"

बिमला, "जायब कत' ?"

सुकन्या, "कत' जायब ? मर' चाहलहुँ, तँ मरबो नहि कयलहुँ । कत' जायब कत' नहि, किछु पता नहि अछि । हम अभागलि छी । एक अभागलि के, के शरण द' सकैत अछि ?"

कमला, "एना जीवनसँ निराश नहि होउ । हम विधवा छी, एहिमे हमर की कसूर अछि ? मुदा दुनियाँ, ई समाज सबटा दोष हमरहि सभक माँथ मढ़ि दैत अछि । एहि धरती पर एकसँ बढ़ि क' एक दानी छथि । ओ सभ कतेको आश्रम बनौने छथि । एहू ठाम एकटा विधवा आश्रम छैक जत' कतेको विधवा नीक जकाँ अपन जीवन निर्वाह क' रहल छथि । हम तँ कहब जे अहूँ ओहि ठाम चलू आ जखन इच्छा होयत, अपना गन्तव्य स्थान पर चल जायब ।" सुकन्या केँ बहला-फुसला क' ओ सब ओहि आश्रम मे ल' गेलीह । जकरहि डर छल, पुनः सएह भ' गेल । ई तँ ओएह भेल "बेलसँ खसलहुँ आ बबूरपर अटकलहुँ" बला गप्प । ओहि ठामक रहब सुकन्याकेँ नरकोसँ बदतर बुझाइत छलनि । एक दिन सुकन्या कमला, विमलाक संग पुनः ओही धारमे स्नान करबाक लेल गेलीह । स्नानक क्रममे सुकन्या जोरसँ कूदि क' मुख्य धारमे चल गेलीह । ओ सोचलनि, ''एहि ठामक रहबसँ डूबि क' मरि जाइ वा भासि क' कतहु अन्यत्र चल जाइ । कमला आ विमलाक हल्ला पर सेवकरामक फौज मुख्य धारा से निकालि लेलक आ बाजल, "एहि ठामसँ भगबाक प्रयास नहि करब । अन्यथा आश्रमसँ बहरायब कठिन भ' जायत । सुकन्याक सब प्रयास निष्फल भ' गेलनि । बेचारी भगवान भरोसे कहुना खेपि रहल छलीह ।

एम्हर दिनकर आ उर्वशीमे गप्प भेल । उर्वशी विधवा आश्रमक एकटा विधवा केँ जनैत छलीह । हुनक नाम सुलेखा छलनि । सुलेखा आ उर्वशी दुनू संगी छलीह । सुलेखा जखन-तखन उर्वशीकेँ ओहि नर्कक विषयमे बजैत छलीह । से सुनि उर्वशीक देह सिहरि उठैत छलनि । सुलेखा एक दिन धारमे स्नान कर' जाइत छलीह । हुनका संगे उर्वशी सेहो छलीह आ दुनू गोटेमे गप-सप होम' लागल ।

उर्वशी, "सुलेखा ! हमरा पता लागल अछि, जे नया थाना इन्चार्ज बड़ कड़गर लोक छथि आ इमानदार सेहो । ओ विधवा आश्रम पर छापा मारबाक योजना बना रहल छथि ।"

सुलेखा, "अहाँ कोना जनैत छियैक ?"

उर्वशी, "ओ दिनकर के दोस्त छथि । हम तेँ जनैत छी । हमरा

तँ दिनकर ककरो बजबासँ मना कयने रहथि, मुदा हम एही लेल अहाँ केँ कहलहुँ, किएक तँ अहाँ हमर सहेली थिकहुँ । अहाँ बादमे कहि सकैत छलहुँ जे हमरा किएक नहि कहलहुँ । मुदा ई गप्प अपनहि धरि राखब, नहि तँ दिनकर हमरा पर तमसयताह ।"

सुलेखा, "अरे बाप रे बाप, आब की हेतैक ? ओ तँ हमरा सब केँ जहल पठा देत । हम जँ जहल चल जायब तँ हमरा दुनू बच्चाकेँ के देखत ?"

उर्वशी, "बाँचबाक एकेटा उपाय अछि ।"

सुलेखा, "कोन उपाय अछि ?"

उर्वशी, "जँ अहाँ सरकारी गवाह बनि जाइ, तँ हम अहाँ केँ छोड़ा लेब । जहल नहि पठाओल जायब ।"

सुलेखा, "ई कोना बनाओल जाइत छैक आ के बनाओत ?

उर्वशी, "सरकारी गवाह तँ पुलिस बनाबैत अछि, मुदा हम अहाँक पैरवी करबा देब । एहि विषयमे कतहु किछु नहि बाजब । अन्यथा कतेक लोक गवाह बनबाक लेल तैयार भ' जायत आ अहाँ फेका जायब ।"

सुलेखा, "नहि, नहि, हम कतहु किछु नहि बाजब । एहि लेल हमरा की कर' पड़त ।"

उर्वशी, "अहाँक आश्रम मे देह व्यापारमे संलिप्त लोक कखन आ कहिआ अबैत अछि । मात्र एकर सूचना हमरा चाही । इएह भेल सरकारी गवाहक कर्त्तव्य ।"

सुलेखा, "ओ सब नित्य नहि अबैत अछि । तीन-चारि दिन पर अबैत अछि आ सेहो नौ बजे रातिक बाद ।"

उर्वशी, "अहाँ सबकेँ कोना आ कखन पता लगैत अछि ?"

सुलेखा, "हमरा सबकेँ छः बजे साँझमे पता लागि जाइत अछि । सबकेँ सजबाक लेल सामग्री आ पहिरबाक लेल नीक-नीक वस्त्र देल जाइत छैक । एकटा गप्प आर, जखन गाहक आबि जाइत अछि आ सब

तय-तमन्ना भ' जाइत छैक, तखन बाहरक सब बत्ती मिझा देल जाइत छैक । सब गेट बन्न क' देल जाइत छैक ।"

उर्वशी, "मोटा-मोटी ओ सब कतेक काल धरि ठहरैत अछि ?"

सुलेखा, "दू सँ अढ़ाइ घंटा धरि ।"

उर्वशी, "ई कोनो जरूरी नहि छैक, अहाँ जहिये सूचना देब, ओही दिन छापामारी होयतैक । छापामारी इन्चार्ज अपन सुविधा आ सहूलियत देखिये क' करताह । तेँ अहाँ बरोबरि सूचना दैत रहब ।"

सुलेखा, "ठीक छै, हम अहाँ के सूचित करब, मुदा अहूँ हमरा पर ख्याल राखब । जँ हम पकड़ायब, तँ हमर दुनू बच्चा बिलटि जायत । ओकरा सबकेँ लोक जीब' नहि देतैक । ओकरा कलंकिनीक बच्चा कहतैक । उर्वशी, हमरा कहुना बचा लेब ।"

उर्वशी, "तेँ ने हम चुपचाप अहाँ केँ कहल अछि । दोसरसँ हमरा की मतलब । जेँ लऽ कऽ हम दुनू संगी रहि चुकल छी, तेँ हमरा केवल अहाँक चिंता अछि । हम अहाँकेँ कोनो कीमत पर बचायब ।"

सुलेखा, "ठीक छै, हम उपयुक्त समय पर सब सूचना दैत रहब ।"

इन्चार्ज दिनकरकेँ बजौलनि आ सब पक्ष पर विचार कयलनि । निर्णय भेल, जाहि दिन सेवकराम बाहर रहत, ओही दिन छापामारी कयल जयबाक चाही । ओना तँ ओकरा अछैतो कयल जा सकैत छलैक, मुदा ओहि मे कठिनता भ' सकैत छलैक । ओ बड़ शातिर लोक छल । कोनो तेसरे झमेला ठाढ़ क' दितैक, आ ओहिमे उलझा क' बाधा उत्पन्न क' सकैत छल । तेँ ओकरा परोक्षे मे ई सब करब उचित बुझना गेल । एक दिन सुलेखाक सूचना पर पता लागल जे सेवकराम कतहुँ बाहर गेल अछि । इन्चार्ज एस.पी. साहेबकेँ सूचित करैत, अपन सिपाही आ दिनकरक संग विधवा आश्रमक छापामारी कयलनि । परिसर मे जतेक लोक छल, सबकेँ गिरिफ्तार क' लेल गेल । एस.पी. सुमन सेहो घटना स्थल पर पहुँचि गेलाह । इन्चार्ज सबकेँ ल' क' थाना अयलाह । सभक बयान दर्ज कयल गेल । ओहि बयानक आधार पर सेवकराम पर सेहो गैर जमानती

वारंट जारी कयल गेल । सेवकरामक सूचना पर तमतमायल डी.एस.पी. साहेब सेहो अयलाह, मुदा एहिठाम एस.पी. साहेबकेँ देखितहि हुनक रंग उड़ि गेल । ओ चुप्पे रहि गेलाह । सब विधवा के नाम, पता पूछि ओकरा यथोचित स्थान पठा देल गेल । कुंतीकेँ नहि छोड़ल गेल । ओ सेवकरामक प्रमुख सहायिका छलैक । ओकरो जहल पठा देल गेलैक । दिनकर, उर्वशी आ सुलेखा केँ कानूनक सहयोग करबाक लेल आ एतेक पैघ कुकृत्यक पर्दाफास करक लेल धन्यवाद देल गेलनि आ एहिना भविष्यमे सहयोगक अपेक्षा कयल गेल । सुकन्याकेँ एस.पी. सुमन अपना डेरा ल' गेलाह, आ मुकेशकेँ सूचित कयलन्हि । प्रातःकाल मुकेश अयलाह आ एहि कार्यक लेल एस.पी. सुमनकेँ धन्यवाद दैत सुकन्याकेँ पटना ल' गेलाह । रामदयालजीकेँ तँ जानमे जान आबि गेलनि । ओ तँ निराश भ' गेल छलाह । सुकन्या हुनका पूर्ण वृत्तान्त सुनौलथिन, आ हुनका कोड़ मे सुबकि-सुबकि क' कान' लगलीह । ठीक ओहिना जेना छोट बच्चा अपना मायक कोड़ मे समा जाइत अछि । रामदयालजी बजलाह, "की करबैक, दिनक दोष छलैक । होनी के, के टारि सकैत अछि । अहाँ सही सलामत आबि गेलहुँ, हमरा सभक लेल इएह बहुत ।" दोसर दिन गाम सँ रतनजी बजाओल गेलाह । हुनका संग सुकेश सेहो सपरिवार आबि गेलाह । सभक समक्ष शिव मंदिरमे रतन आ सुकन्या एक दोसराकेँ माल्यार्पण क' दाम्पत्य जीवनक पुनः शुरुआत कयलनि । एहि दृश्य केँ देखि खुशीसँ रामदयालजीक आँखि भरि गेलनि । हुनक कतोक वर्षक सपना सुकन्याक पुनर्विवाह सँ आइ पूर्ण भेल आ दूटाक बिलटल परिवार बसि गेल ।

●

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'



जन्म	:	2 जनवरी, 1950
जन्म स्थान	:	भैरव बलिया (मातृक)
पिता	:	स्व. बैद्यनाथ मिश्र सरल-चित्त, साधु-स्वभाव उदारमना एवं धर्मपरायण
माता	:	स्व. गोसाउनि देवी करुणमयी, सह्रदया एवं धर्मपरायणा
पत्राचारक पता	:	ग्राम एवं पत्रा. उफरदाहा, थाना- बहेड़ा, जिला- दरभंगा (बिहार) 847233
शिक्षा	:	स्नातक कला, संगीत प्रभाकर ।
वृत्ति	:	लेखापाल, बिहार राज्य विद्युत बोर्ड (अवकाश प्राप्त)
रुचि	:	गीतकार, सामाजिक कुरीति आ राजनीति पर व्यंग्य कथा आ कविताक माध्यमे (मैथिलीमे)
प्रकाशित पोथी	:	विधात्री - (गीत एवं कविता संग्रह) गामघर - (कथा संग्रह) सुजाता - (उपन्यास) महारानी कैकेयी - (व्याख्यात्मक निबंध) गुदड़ीक लाल - उपन्यास) अनठिया कुकुर - (उपन्यास) सुन्दर काण्ड - (सम्पादन-संपादक) आडम्बर - (कथा संग्रह) दिल्लीक पार्क - (शब्दचित्र)
उपाधि	:	'कवि शिरोमणि' (विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ; भागलपुर, बिहार)
	:	'अंग प्रदेश-साहित्य-साधना सम्मान' राजा राम मोहन राय स्मृति मंच, भागलपुर।
	:	'मैथिली पराग' (उधाडीह, अजगैवीनाथ धाम, सुल्तानगंज, भागलपुर)
	:	वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' सम्मान-2010 (मिथिला परिषद्, भागलपुर)।
सम्पर्क	:	08986261756